खंडः XIII अंकः 7 व 8

जुलाई – अगस्त, 2001

चैतन्य लहरी

महीं मूलाधारे कमपि मणिपूरे हुतवह
स्थितं स्वाधिष्ठाने हृदि मरुत–माकाश–मुपरि।
मनोऽपि भ्रूमध्ये सकलमपि भित्वा कुलपथं
सहस्रारे पदमें सह रहसि पत्या विहरसे।।

हे देवी, मूधाधार में पृथ्वी तत्व का, मणिपुर (नाभि) चक्र में जल तत्व का, स्वाधिष्ठान चक्र में अग्नि तत्व का, अनहद चक्र में वायु तत्व का और इससे ऊपर विशुद्धि चक्र में आकाश तत्व का, आज्ञा चक्र में मनस (Mind) का भेदन करके कुलामार्ग (सुषुम्ना मार्ग) से उठकर सहस्रार कमल में आप अपने पति श्री सदाशिव के साथ विहार करती हैं।

House of Representatives
7th District, New York

Proclamation

"78th Birthday Celebration of Shri Mataji Nirmala Devi"

Whereas: It is the sense of this Congressional Body, that those individuals who have dedicated their life to public service and to helping others, should be publicly acknowledged and applauded. One such person is Shri Mataji Nirmala Devi, and...

Whereas: Shri Mataji was born in Chindwara, India in 1923 and raised as a Christian. As a child her maturity and wisdom impressed all who she encountered. At a very young age she fought for India's independence working closely with Mahatma Gandhi and today, continues to strive towards the realization of his dream for universal peace and unity, and...

Whereas: Shri Mataji has a deep and abiding commitment and dedication to world peace, the role of women in society, and 'Self-Realization". These issues are what have motivated Shri Mataji to become involved in her fight to improve the quality of life. She is the founder of Sahaja Yoga; a deep meditation which enhances health and peacefulness and connects you to a higher level of awareness of yourself and of the powers that created you, and...

Whereas: Shri Mataji has been nominated twice for the Nobel Peace Prize, she has received Global Nominations and in 1993 she was appointed Honorary Member of the Presidium of the Petravska Academy of Art and Science in St. Petersburg. In 1986 she was named "Personality of the Year" by the Italian Government and was presented with a Congressional Record Honorarium by the 105th Congress in 1997, and...

Whereas: Friends, family and colleagues have gathered on this the 21st day of March, 2001to celebrate Shri Mataji's 78th birthday and to honor her for all her accomplishments. Wishing her continued peace, happiness and success; be it therefore...

Proclaimed: By the power incumbent in me as the duly elected Member of the House of Representatives from New York's Seventh Congressional District, I bestow Congressional Recognition upon

Shri Mataji Nirmala Devi

In Witness Whereof, I have hereunto set my hand

Joseph Crowley M.C.

JOSEPH CROWLEY
Member of Congress

1 78वीं जन्मदिवस पूजा, 21.3.2001

16 78वाँ जन्मदिवस समारोह, 20.3.2001

27 श्री महादेव पूजा, 25.2.2001

38 एकादश रुद्र पूजा, 8.6.88

47 पूजा का महत्व

प्रकाशक
वी.जे. नलगीरकर
162 – ए, मुनीरका विहार, नई दिल्ली – 110067

मुद्रक
अमरनाथ प्रैस प्रा. लिमिटेड
डब्ल्यू एस एस 2/47 कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली–15
फोन : 5447291, 5170197

सदस्यता के लिए कृपया इस पते पर लिखें :–
श्री ओ.पी. चान्दना
एन – 463 ऋषि नगर, रानी बाग
दिल्ली – 110034
फोन : (011) 7013464

सहज सम्बंधी अपने अनुभव, चमत्कारिक फोटोग्राफ तथा कलाकृतियाँ निम्न पते पर भेजें :

चैतन्य लहरी
सहजयोग मंदिर
सी–17, कुतुब इन्स्टीच्यूशनल एरिया
नई दिल्ली – 110016

78वीं जन्मदिवस पूजा

निर्मल धाम – दिल्ली 21.3.2001

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज आपने मेरा 78वाँ जन्मदिवस मनाने का निर्णय किया है। आपने बहुत सुन्दर गुब्बारे सजाए हैं जैसे किसी नन्हें शिशु के जन्म दिवस पर प्रेममय हाथों से सजाए जाते हैं।

कल जैसा मैंने आपको बताया आपको अपने विषय में खोज करनी होगी। यह खोजने का भी प्रयत्न करें कि जिस प्रकार आप मुझसे प्रेम करते हैं उसी प्रकार कितना प्रेम आप अन्य लोगों से करते हैं? अन्तर्अवलोकन के माध्यम से यह देख पाना आसान होगा कि आप अन्य लोगों से कितना प्रेम करते हैं और उनकी कितनी परवाह करते हैं। अगर ऐसा हो जाए तो बिना समय बर्बाद किए सहजयोग की बहुत सी समस्याएं समाप्त हो जाएंगी। मुझे बताया गया है कि सहजयोग में अब भी लोग धन के पीछे भागते हैं। वो सोचते हैं कि यही स्थान हैं जहाँ वे कुछ पैसा बना सकते हैं। मैं हैरान हूँ! यह वह क्षेत्र नहीं है जहाँ आप अपनी इस इच्छा को कार्यान्वित कर सकें। जरा से समय में आपकी पोल खुल जाएगी। इसके विपरीत यदि आप सहजयोग में नेताओं या उपनेताओं के रूप में अपनी शक्तियों की चिन्ता करते हैं, मेरी समझ में नहीं आता, तो भी आप भयंकर गलती करते हैं। यह स्थान इन सब चीज़ों के लिए नहीं हैं! इसके लिए आप राजनीति में जा सकते हैं और पैसा बनाने के लिए आप किसी घुड़दौड़ मैदान आदि में जा सकते हैं। आप यदि सहजयोग में आए हैं तो आपको अपने हृदय में प्रेम का सागर प्राप्त करना है और अन्य लोगों के हृदय में भी इसी प्रेम के सागर को खोजना है। प्रेम ही वह गुण है जो आपको सभी कार्य अत्यन्त सहजता से और सुन्दरता से करने में सहायक है। जैसा मैंने सदैव कहा है, आप यदि अपने देश से प्रेम करते हैं तो कभी भी आप बेईमान नहीं हो सकते। आपकी रुचि किसी अन्य चीज़ में न होकर केवल स्वतन्त्रता प्राप्ति तथा उन अन्य चीज़ों में होगी जो आप अपनें देश के लिए करना चाहते हैं। इस देश में बहुत से महान शहीद हुए हैं। हो सकता है आपमें से कुछ लोगों को इसका ज्ञान न हो कि किस प्रकार उन्होंनें कष्टों को झेला! ये सब वे देश प्रेम के कारण कर पाए। आपका देश आध्यात्मिकता का देश है, यह पूर्ण आत्मानन्द का देश है। यह ऐसा देश है जिसमें केवल शान्ति का साम्राज्य है और जब आप ऐसे देश से प्रेम करते है, तो किस प्रकार आपमें

धन और सत्ता आदि हथियाने के मूर्खतापूर्ण विचार आते हैं? मैं तो ये बात समझ नहीं पाती। आप अच्छी तरह से जानते हैं कि मैंने अपने जीवन में उन चीज़ों की कभी चिन्ता नहीं की। निःसन्देह हमें कार्य के लिए धन चाहिए, सभी कार्यों के लिए धन चाहिए। परन्तु इसके पीछे दौड़ने की या इसका लालच करने की कोई आवश्यकता नहीं हैं। मैं हैरान हूँ कि मेरे इतने वर्षों के कठोर परिश्रम के बावजूद भी कुछ लोग ऐसे हैं जो धन के पीछे दौड़ रहे हैं। कुछ मूर्ख लोग। ये बात मेरी समझ में नहीं आती। उन्हें ये समझ लेना चाहिए कि बिना किसी देरी के उनकी पोल खुल जाएगी।

ये वर्ष पोल खुलने का है, बिल्कुल अनाव्रत होने का, ये बात मैंने आपको पिछली बार भी बताई थी। आपके हृदय में यदि सहजयोग के लिए प्रेम नहीं है आपके हृदय में यदि अपनी माँ के लिए प्रेम नहीं है, आप यदि इन व्यर्थ की चीजों के पीछे भागते हैं और अपने अन्दर गड़बड़ियाँ करते हैं, यदि आप स्वयं को नष्ट करना चाहते हैं तो किसी अन्य क्षेत्र में चले जाएं, सहजयोग में न आएं। सहजयोग में आपको ये जानना होगा कि आपको वास्तव में समर्पित एवं ईमानदार होना पड़ेगा। अपने प्रेम का, अपनी उदारता का आनन्द, आपको लेना चाहिए। आप अनाव्रत तो हो ही जाएंगे परन्तु इसके बाद जाएंगे कहाँ? आपकी स्थिति क्या होगी? आप यदि मूर्खताएं करते रहे तो, मैं कहूँगी कि आपको भी अन्य लोगों की तरह से नरक में जाना होगा क्योंकि प्रेम के स्वर्ग में आने के पश्चात् भी यदि आप इन मूर्खता पूर्ण चीज़ों के पीछे दौड़ते रहेंगे तो बड़ी तेज़ी से नरक में कूद जाएंगे। ये बात मैं स्पष्ट देख सकती हूँ। मुझे ये सब अपने जन्मदिवस पर नहीं कहना चाहिए था परन्तु ये वर्ष अनावरण का है, अतः बहुत सावधान रहें। इस वर्ष किसी को भी क्षमा नहीं किया जाएगा। मैं क्या करूं, चाहे आज मेरा

जन्मदिवस है मुझे आपको बताना पड़ेगा कि यह चुपचाप नहीं बैठेगा। आप जानते हैं कि कुछ शक्तियां भिन्न–भिन्न वर्षों में संचारित होती हैं। मुझे लगता है कि भिन्न प्रकार की शक्तियां संचारित होने लगती हैं और इस बार पोल खोलने वाली शक्ति संचारित होगी। आप चाहे अगुआ हों या न हों, किसी भी प्रकार की बेईमानी यदि आप कर रहे हैं तो आपकी पोल खुल जाएगी और आपको उचित दण्ड मिलेगा। सहजयोग चाहे आपको दण्डित न करे परन्तु फिर भी बहुत से तरीके हैं जिनके माध्यम से ये शक्ति कार्य करेगी।

इस शक्ति के कार्य करने का पहला तरीका अलक्ष्मी कहलाता है। अलक्ष्मी अर्थात जब आपको दण्ड मिलेगा तो आप हैरान होंगे, आप दिवालिए हो जाएंगे, आपके पास धन बिल्कुल न रह जाएगा, आप अनावृत हो जाएंगे, हो सकता है कि जेल चले जाएं। आज यद्यपि बहुत शुभ दिवस है, मैं आपको बताती हूँ कि आप अशुभ कभी न बने।

कल के प्रवचन में मैंने आपको समझाया था कि आपके पास कौन सी शक्तियाँ हैं जिन्हें आप अन्य लोगों को दे सकते हैं, जिनका आप स्वयं आनन्द ले सकते हैं और जिन्हें आप कार्यान्वित कर सकते हैं। परन्तु सर्वप्रथम आपको इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि क्या आप ये कार्य करने के योग्य हैं या विपरीत दिशा में ही कार्य किए चले जा रहे हैं? ये सुनकर मैं बहुत हैरान थी कि इतने वर्षों के पश्चात् भी लोगों ने अपने पुराने प्रलोभन नहीं त्यागे। आज भी उनमें ये प्रलोभन बने हुए हैं। इस जन्मदिवस पर आप अवश्य ये बात स्मरण करें कि सहजयोग करने में आपने कितने वर्ष लगाए? जो आनन्द आपने प्राप्त किया उसे आप समझे तथा ये भी समझे कि हर वर्ष मेरे जन्मदिवस का आनन्द आपने कितने दिनों तक लिया और इसमें कितना गहन उतरे? किस प्रकार गहन उतरे? आप कितना परिवर्तित हुए? किस प्रकार आपने आनन्द लिया और किस प्रकार सहजयोग के गुणों को आत्मसात किया?

सहजयोगी का मुख्य गुण ये है कि उसे पूर्णतः ईमानदार होना पड़ता है। उसे यहाँ पैसा बनाने के लिए नहीं आना है। वह यहाँ सत्ता हथियाने के लिए नहीं आया है, वह तो यहाँ इस नए सुन्दर संसार में उन्नत होने के लिए आया है जिसका हम सृजन कर रहे हैं। सबके लिए हमने इस विश्व का सृजन करना है, सर्वत्र रहने वाले सभी लोगों के लिए चाहे वे जंगलों में हो

या हिमालय में या अन्य कहीं खोए हुए हों। हमें ये सुन्दर संवेदना, आत्मसम्मान और गरिमा का ये सुन्दर अस्तित्व सर्वत्र फैलाना है। सबसे महत्वपूर्ण बात ये है कि क्या आप आत्मा हैं? क्या आप अपनी आत्मा का सम्मान करते है? कल ही मैंने कहा था कि स्वयं को पहचानो। यदि ऐसा हो जाए कि आप स्वयं का सम्मान करने लगें तो बहुत अच्छा होगा। आत्मा का सम्मान करना बहुत महत्वपूर्ण है। आप यदि अपना सम्मान नहीं करते, बेकार की चीज़ों के पीछे दौड़ते रहते हैं तो हम क्या करें? सहजयोग में आपने कौन से गुण आत्मसात किए हैं? कहीं यहां पर केवल व्यापार आदि जैसा कुछ तो नहीं शुरू कर लिया? यह अत्यन्त खेदजनक बात है। परन्तु अब भी ऐसे लोग हैं जो इन चीज़ों के दलदल में नष्ट हुए पड़े हैं। मैं जानती हूँ कि आपने बहुत सारी चीज़ों पर नियंत्रण कर लिया है, आपने बहुत सी उपलब्धियाँ प्राप्त कर ली हैं।मनुष्य के लिए असम्भव चीज़ें आपने प्राप्त कर ली हैं। इन सभी असम्भव चीज़ों पर आपने नियंत्रण कर लिया है परन्तु अभी भी आपमें कुछ लोग ऐसे हैं जो मूर्खता के दुर्गन्धमय कीचड़ में फंसे हुए हैं।

आप लोग इतने उत्साह एवं प्रेम से मेरा जन्मदिवस मना रहे हैं। ये बहुत अच्छी बात है। यह सब देखकर अच्छा लगता है। आप सब मेरा श्रृंगार हैं। पूरे विश्व के लोग ये देखें कि आप लोग मेरे बच्चे हैं और आप सब इतने मूल्यवान हैं और सूझबूझ वाले हैं। आप मेरे बच्चे हैं। मैंने वास्तव में आपके लिए इस प्रकार कार्य किया है कि अपने जीवन की हर श्वास में मैंने आपके विषय में सोचा है। यह कार्य मैंने इतने सुन्दर तरीके से करना चाहा कि आप वास्तव में अच्छे, आदर्श सूझ–बूझ वाले विशिष्ट लोग बनें। वह ऐसा दिन होगा जब आपको महसूस होगा कि आपका जन्मदिवस मनाया जा रहा है। जब आप पूर्णतः स्वच्छ हो जाएंगे, पूर्णतः निर्मल हो जाएंगे, प्रेम की शुद्ध मूर्ति बन जाएंगे, वह दिन आपका, और मेरा भी, जन्म दिवस होगा। ये सारी बातें मुझे आपको

बतानी पड़ीं क्योंकि कुछ चीज़ें मेरे सामनें आई हैं और मुझे दुःख पहुँचा कि अभी भी कुछ लोग अपने मूल्य को, अपने महत्व को नहीं समझ रहे हैं। यही कारण है कि मैंने उस दिन आपको बताया था कि स्वयं का ज्ञान प्राप्त करो। सर्वप्रथम 'स्वः' ही आत्मा है, यही आत्मा है, सर्वशक्तिमान परमात्मा का प्रतिबिम्ब। आप भी यदि सर्व–साधारण विवेकहीन लोगों की तरह से रहना चाहते हैं तो आप सहजयोग से बाहर रहें। परन्तु यदि आप सोचते हैं कि सहजयोग में आकर वास्तव में अपना महत्व दर्शाना है और अपने पर गर्व करना है तो समझने का प्रयत्न करें कि सहजयोग में आपको इन सब दुर्बलताओं को त्यागना होगा।

कुण्डलिनी जब उठती है तो छः चक्रों को ज्योतिर्मय करके इन्हें पार करती है। एक सीमा तक मैं आपको क्षमा कर सकती हूँ परन्तु आपकी कुण्डलिनी आपको दण्ड देगी, आपको सुधारने के लिए वह हर आवश्यक कार्य करेगी। एक सीमा तक वह कार्य करेगी और उसके परचात् जब उसे लगेगा कि आपको सुधारना सम्भव नहीं है तो मैं नहीं जानती क्या होगा और किस प्रकार घटनाएं घटेंगी! सहजयोग में आना, इसमें चलना और इसे कार्यान्वित करना आसान है परन्तु जब आप अपने विरुद्ध कार्य करते हैं, सर्वसाधारण लोगों की तरह से आचरण करते हैं तो आप सहजयोग में नहीं रह सकते। आपको सहजयोग से बाहर फेंक दिया जाएगा। जब आपको सहजयोग से निकाल दिया जाएगा तो आप कहाँ रहेगे, आपका क्या होगा? यह बात आप अच्छी तरह से जानते हैं।

आज के शुभ दिन मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि शुभ बने। ऐसा कोई कार्य न करें जो अशुभ हो। ये लोग उसे मर्यादा कहते हैं परन्तु छोटी–छोटी चीज़ों से प्रकट होता है कि आप मंगलमय हैं। अत्यन्त सूक्ष्म, अत्यन्त छोटी–छोटी चीज़ें दर्शाती हैं कि आप मंगलमय हैं। ये सब आपको सीखनी नहीं पड़तीं, स्वतः ही ये गुण आपमें आ जाते हैं और आप अपनी मंगलमयता का आनन्द लेते हैं। क्योंकि आप पवित्र हैं, निर्मल हैं, अपने अन्तःस्थित इस गुण का आप आनन्द लेते हैं। जब यह घटित हो जाता है तभी आपका जन्म–दिवस होता है।

आप जानते हैं कि आपका पुनर्जन्म हुआ, आप सबका पुनर्जन्म हुआ। आपका पुनर्जन्म हुआ परन्तु अभी तक आप बच्चे

थे। पर अब आप बड़े हो गए हैं। हर तरह से वह बड़प्पन नज़र आना चाहिए। व्यक्ति जब बड़ा होता है तो अपनी अभिव्यक्ति करने के लिए, भिन्न कार्यों को करने के लिए वह उद्यत हो जाता है। इसी प्रकार जब आप सहजयोग में बड़े हो जाते हैं तो आपको दर्शाना होता है कि आप बड़े हो गए हैं, कि आप बहुत गहन हैं और वरिष्ठ व्यक्ति है। मैंने कुछ छोटे बच्चों को भी देखा है। वह इतने उन्नत एवं विवेकशील हैं कि कभी–कभी तो मुझे हैरानी होती है कि महान सन्त पुनः अवतरित हुए हैं! वह वास्तव में महान लोग हैं जिन्होंने पुनर्जन्म लिया है।

परन्तु अभी भी यदि आप मूर्खतापूर्ण चीज़ों के पीछे भाग रहे हैं, अब भी यदि आपमें कामुकता एवं लालच है तो बेहतर होगा कि आप सहजयोग को अपने हाल पर छोड़कर कोई और क्षेत्र खोज लें जहाँ आप यह सब कर सकें। आश्चर्य की बात है कि सहजयोग में आकर भी लोग किस प्रकार अपने गौरव को नहीं समझ पाते! फिर भी, आपने बहुत अच्छी उन्नति की है। मैं जानती हूँ कि बहुत से लोग बहुत अच्छे सहजयोगी हैं, वो वास्तव में बहुत महान सहजयोगी हैं। उन्हें सहजयोगी या महायोगी कहलाने का पूरा अधिकार है। परन्तु ऐसा होना तभी सम्भव है और ऐसा तभी दिखाई देगा जब आप वास्तव में अन्दर से उन्नत हो जाएंगे और आपकी आत्मा प्रेम के स्वच्छ (पारदर्शी) सागर की तरह से चमक उठेगी। अब तार जुड़ गया है। आपको सभी चक्रों का ज्ञान है आप जानते हैं कि कुण्डलिनी कैसे उठाई जाती है। लोगों को रोगमुक्त करना, उनका इलाज करना भी आपको आता है। इस सारे ज्ञान के साथ इस प्रकार का जीवन जो आपको मिला है यह दूध की तरह से है जो आप अपनी शक्तियों को देते हैं और आप सशक्त हो जाते हैं। इसके विषय में आप आलस्य नहीं करते। आप यदि आलसी हैं तो सहजयोगी नहीं हैं। अपने हृदय में इस चिंगारी को, इस शोले को लेकर आपने चलना है कि आपको आत्मा का ज्ञान है और ये

ज्ञान भी है कि अन्य लोगों के प्रति आपने क्या करना है। निःसन्देह अपने पूर्वजन्मों में आप महान साधक रहे होंगे और आपकी जिज्ञासा ही आपको सहजयोग तक लाई है। उसी जिज्ञासा के साथ अब आप यहाँ पर हैं, फिर भी बेकार की चीज़ों की ओर दौड़ रहे हैं! ऐसे लोग उन्नत नहीं हो सकते। ऐसे लोग न खुद उन्नत होते हैं और न अन्य लोगों को उन्नत कर सकते हैं।

तो मुख्य चीज़ जो व्यक्ति को समझनी है वह ये है कि आप प्रेम में कितने उन्नत हुए हैं? आप किसी भयावह व्यक्ति को देखें जो बहुत कठोर है, बड़ी अभद्रता पूर्वक बात करता है। वह सहजयोगी नहीं है, किसी भी तरह से नहीं है। परन्तु जो व्यक्ति अन्य लोगों से प्रेम करता है, उनके बारे में सोचता है, अन्य लोगों की देखभाल करता है और जो अत्यन्त उदार है, वही सहजयोगी है। आप लोग विशेष गुणों वाले हैं और ये गुण आपके जीवन में दिखाई देने चाहिएं। मैं जानती हूँ कि आप लोग मुझे बहुत प्रेम करते हैं और मेरा जन्मदिवस मनाने के लिए आपने क्या कुछ किया है। जिस प्रकार आपने इतनी सारी सजावट की है, मैं आपको पहले ही बता चुकी हूँ कि आप लोग ही मेरे अलंकार हैं। आपके जीवन ही मेरी सजावट है। जिस प्रकार आप स्वयं को पहचानेंगे, जिस प्रकार आप आचरण करेंगे, उन्हीं से विश्व भर में चीज़ों को समझा जाएगा। ये सब कहने का मेरा अभिप्राय मात्र इतना है कि स्मरण रखें कि आपको उन्नत होना है। आपको अत्यन्त गहन व्यक्तित्व का बनना है। अपना जन्मदिवस मनाते हुए आपको अपने अन्दर उन्नत होना होगा।

हर रोज ये देखने का प्रयत्न करें कि आपका क्या अनुभव है और आपने क्या देखा? आप किससे मिले, किस प्रकार बातचीत की? मेरा अभिप्राय ये है कि मैं बहुत से नाम जानती हूँ। वास्तव में मैं हर व्यक्ति का नाम जानती हूँ, हर व्यक्ति की कुण्डलिनी को पहचानती हूँ। मैं ये भी जानती हूँ कि किसकी कुण्डलिनी ठीक है

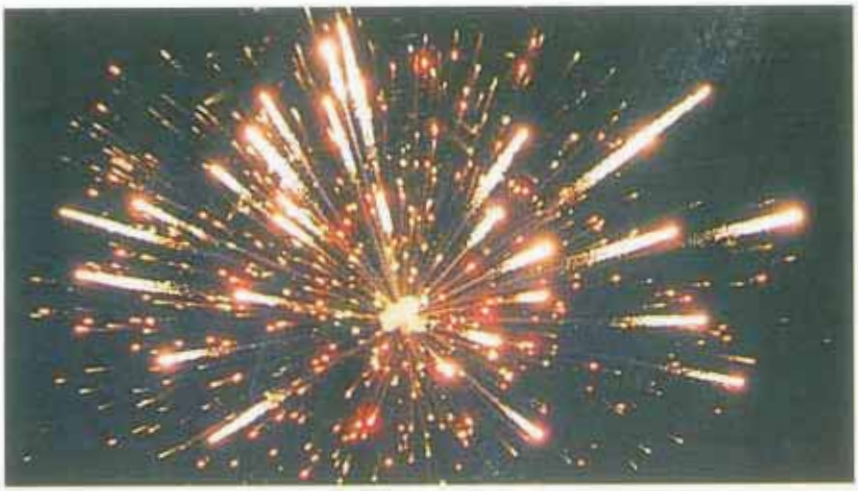

और किसकी नहीं। मैं बहुत से लोगों को जानती हूँ। लोग मुझसे पूछते हैं कि आपको इतने नाम कैसे याद हैं? किस प्रकार आप इतने सारे नाम याद रखती हैं? ये बात मैं नहीं जानती परन्तु जब भी मैं किसी व्यक्ति को देखती हूँ तो उसकी कुण्डलिनी को देखती हूँ और उसकी कुण्डलिनी से मैं जान जाती हूँ कि वह व्यक्ति कौन है। चाहे हजारों कुण्डलिनियाँ हों, परन्तु मैं जान जाती हूँ कौन व्यक्ति कौन है, क्योंकि मैं उन्हें प्रेम करती हूँ।

आप यदि किसी को प्रेम करते हैं तो जान जाते हैं कि वह क्या है। यह प्रेम मूर्खतापूर्ण रोमांस आदि नहीं है। ये तो अत्यन्त गहन एहसास है। अपने हृदय के उद्यान में जब आप प्रवेश करते हैं तो चहुँ ओर आपको सुन्दर सुगन्ध महसूस होती है। सन्तों की तरह से ऐसे सुन्दर लोगों, उद्धारकों और सहजयोगियों के विषय में जब आप सोचते हैं तो आपको कृतज्ञता की इतनी अनुभूति होती है कि आपने भी वह सामूहिक आनन्द की अवस्था प्राप्त कर ली है!

मैंने आप पर कभी किसी प्रकार के बंधन नहीं लगाए। आप जो चाहे करिए। जिस प्रकार से भी आप करना चाहें करें। कभी मैंने धन आदि के विषय में कष्ट नहीं दिया। परन्तु यह परीक्षा स्थल है। आप यदि स्वयं को नहीं परखेंगे तो किस प्रकार जान पाएंगे कि आप कहाँ तक पहुँचे हैं? आप ही विद्यार्थी हैं, आप ही परीक्षक हैं और आप ही वह व्यक्ति हैं जिसने स्वयं को प्रमाण पत्र देना है। ऐसी अवस्था में आप समझने लगते हैं। ऐसी बहुत सी चीज़ों को आप समझने लगते हैं जो अभी तक आपने नहीं समझी थीं। मेरा अभिप्राय है ज्ञान। तथाकथित प्रचलित ज्ञान, कोई ज्ञान नहीं है क्योंकि ये सब असत्य है, यह सारा ज्ञान मानसिक है। परन्तु वास्तव में पूर्ण ज्ञान का उदय आप में होता है, सभी के विषय में, सभी पक्षों के विषय में, आपके आस–पास के विषय में और आप इतना स्पष्ट जान

जाते हैं कि यह होना चाहिए, यह घटित होना चाहिए। आपको ये स्पष्ट जान जाना चाहिए कि आप कहाँ हैं, आप क्या हैं और आपकी स्थिति क्या है? ऐसा नहीं है कि आपमें कोई कम शक्तियाँ हैं। सभी शक्तियाँ आपमें हैं। परन्तु इनके लिए आपको गहनता में जाना होगा। उदाहरण के रूप में मान लो ये कुआँ है जिसमें पानी है। परन्तु आपकी बाल्टी यदि इसकी गहराई में नहीं जाती तो किस प्रकार आप जल ला सकते है? आपकी बाल्टी यदि पत्थरों से भरी हुई हैं तो उस कुएं का क्या लाभ है? इसी प्रकार हमारे अन्दर सभी कुछ विद्यमान है, जैसे मैंने कल आपको बताया, और सहजयोग के मार्ग से आप गहनता में जा सकते हैं और अपने विषय में जान सकते हैं। यह अत्यन्त सुन्दर एवं स्वच्छ है और इसी का आनन्द लिया जाना चाहिए। जिन मूर्खतापूर्ण चीज़ों के पीछे आप दौड़ रहे हैं और जिन्हें आप महत्वपूर्ण समझते हैं उनका नहीं।

मैंने आपको पहले भी बताया है कि कुण्डलिनी ही शुद्ध इच्छा है। यही शुद्ध इच्छा है क्योंकि अन्य इच्छाओं की पूर्ति तो कभी नहीं होती। आप एक चीज़ खरीदते हैं पर उसका आनन्द नहीं लेते और दूसरी चीज़ खरीदना चाहते हैं। उसका भी आनन्द नहीं लेते। फिर एक अन्य चीज़ खरीदना चाहते हैं। वह भी आपको आनन्द नहीं देती क्योंकि यह शुद्ध इच्छा नहीं है। अर्थशास्त्र का सिद्धान्त है कि इच्छाएं कभी शांत नहीं होतीं। एक के बाद एक चीज़ आप खरीदते चले जाते हैं। अन्त में क्या होता है कि सभी उद्यम लड़खड़ा जाते हैं। अमरीका में यही हो रहा है। एक सिद्धान्त है कि जो भी कुछ आप करते हैं, पलट कर उसका प्रभाव आप पर होता है, केवल आध्यात्मिक उन्नति का कोई दुष्प्रभाव नहीं होता। यह पुष्पित होती है, सुगन्धमय है और सुन्दर है। अपनी आत्मा के साथ होना इतना सुन्दर अनुभव है मानो आप स्वर्ग के सुन्दर उद्यान में प्रवेश कर गए हों। वह अनुभूति यदि आप प्राप्त करना चाहते हैं तो इन सब मूर्खतापूर्ण विचारों को त्याग दें। सांसारिक मूर्खता को त्याग दें, ये सभी चीज़ें त्याग दें। तब आपको लगेगा कि अब आप उस स्थान पर हैं जहाँ आपको होना चाहिए था। आपको कोई सन्देह न रह जाएगा, आपमें कोई ललक न रहेगी, किसी भी प्रकार से आप असन्तुष्ट न होंगे। परन्तु अब भी कुछ लोग अत्यन्त आरम्भिक स्थिति में हैं। मैं ये बात जानती हूँ परन्तु उन्हें मैंने नहीं बताया क्योंकि यह वर्ष अनावरण का वर्ष है और उन सबकी पोल खुल जाएगी। इसमें कोई सन्देह नहीं। ऐसा कोई भी कार्य करने का क्या लाभ है जिससे आपकी पोल खुल जाए और पूरा सहजयोग संसार आपको अपराधी मान ले या आपको सम्मान के अयोग्य समझे? या तो आप इससे बाहर हो जाएं और यदि आप इसमें ऊँचाई की सीढ़ियाँ चढ़ना चाहते हैं तो आपकी दृष्टि ऊपर की ओर होनी चाहिए, नीचे की ओर नहीं। ये देखना होगा कि कौन सी सीढ़ियाँ हैं। वो सीढ़ियाँ आपको चढ़नी होंगी। ये सीढ़ियाँ चढ़ने के पश्चात् आप कहाँ पहुँचते हैं ये बात मैं आपको बताती हूँ। एक अत्यन्त सुन्दर एवं सुगन्धमय उद्यान में, अपनी आत्मा के उद्यान में जो कि बहुत सुन्दर है। इस सुन्दर उद्यान में पहुँचने की अपेक्षा आप संसार की दलदल में फंसे हुए है जहाँ बहुत से लोग खो गए हैं! आप सहजयोग में किसलिए आए हैं?

ये सारे मूर्खतापूर्ण विचार छोड़ दें, आध्यात्मिकता को अपनाने का प्रयत्न करें, पावन आध्यात्मिकता को। **पावनता ही नारा है।** आपमें पावनता होनी ही चाहिए और सहजयोग में आप अत्यन्त सुगमता से अपने अन्दर पावनता स्थापित कर सकते हैं। आपको साक्षी अवस्था में उतरना होगा। आपके साक्षीभाव के प्रक्षेपण से प्रतिक्रियाओं के अहं तथा बन्धन समाप्त हो जाएंगे। तब आप प्रतिक्रिया नहीं करेंगे, साक्षी भाव होकर देखेंगे। **सच्चा ज्ञान केवल साक्षित्व के माध्यम से ही आता है। साक्षी रूप में यदि आप देखना नहीं जानते तो हम कह सकते है कि जो भी ज्ञान आपको प्राप्त होता है वह अहं तथा बन्धनों के माध्यम से प्राप्त होता है। यह पूर्ण ज्ञान नहीं है।** किसी भी चीज़ के पूर्णज्ञान को प्राप्त करने के लिए आपको पूर्णत्व बिन्दु तक पहुँचना होगा। अतः उस स्तर तक पहुँचें जहाँ आप पूर्णतः स्वच्छ, पावन और निर्मल हों।

आपमें यदि कोई दोष हों तो उनके लिए कभी अपनी भर्त्सना न करें। दोष तो होने ही हैं क्योंकि आप मानव हैं। अपनी आध्यात्मिक शक्ति से आप इन दोषों को नियंत्रित कर सकते हैं। इसके लिए आपको क्या करना होगा? **अन्तर्अवलोकन** प्रथम चीज़ है। **सर्वप्रथम खोजने का प्रयत्न करें। स्वयं को स्वयं से अलग करके कहें, "हाँ, श्रीमान आप कैसे है?"** इस प्रकार आरम्भ करें। "हाँ, आपका क्या इरादा है?" और बाहर भी आप अपने को देखने लगते हैं और जो 'स्वः' नहीं हैं, उन सब चीज़ों को दूर करने लगते हैं। जब आपमें ज्ञान प्राप्ति की जिज्ञासा होती है तो आत्मा का ज्ञान आपको मिलता है। आत्मा के विषय में जानने की इच्छा शुद्ध इच्छा होनी चाहिए। निःसन्देह आप विशेष लोग हैं। निःसन्देह विशिष्ट बनने के लिए ही आपको चुना गया है। आपमें कुछ विशेषता तो होगी कि आप उस स्थिति तक पहुँच गए जहाँ आप आत्मा बनने का प्रयत्न कर रहे हैं। आत्मा पूर्णतः आत्मसन्तुष्ट करती है। सन्तुष्टि के लिए इसे किसी अन्य चीज़ की आवश्यकता नहीं। वास्तव में ये सन्तोष–मूर्ति है। यह चीज़ों को देखती है, साक्षी रूप से देखती है और साक्षी भाव से देखते हुए इसे जान जाती है। ये सब जानती है, आपको बताना नहीं पड़ता कि ये ऐसा है, ये वैसा है। किसी चीज़ की बहुत अधिक अभिव्यक्ति नहीं करनी पड़ती। आप यदि स्वच्छ व्यक्ति हैं, आपकी इच्छाएं स्वच्छ हैं और आपमें यदि उत्थान की शुद्ध इच्छा है तो यह आत्म अभिव्यक्ति करती है।

अतः एक बार फिर मुझे कुण्डलिनी के विषय में बताना है कि **आपकी कुण्डलिनी ऐसी होनी चाहिए जो आपके अन्दर पूर्णतः स्थापित हो चुकी हो, आपमें पूर्णतः अभिव्यक्त हो रही हो और आपको पूर्णतः ज्योतित कर रही हो। कुण्डलिनी ऐसी होनी चाहिए और यह तभी सम्भव है जब आप इसकी उन्नति में बाधाएं न खड़ी करें।** आप यदि इसे उन्नत होने दें तो ये उन्नत होती है और कार्य करती है।

जिस प्रकार आप जानते हैं, ये कार्य मैंने वर्ष 1970 में आरम्भ किया था। इसलिए नहीं कि मैं इसे पहले आरम्भ नहीं कर सकती थी, इसलिए भी नहीं कि संसार में

सभी लोग बुरे हैं, परन्तु इसलिए कि सभी प्रकार की कुण्डलिनियों के संचालन में कुशलता प्राप्त करने की मैं प्रतीक्षा कर रही थी। मुझे सभी प्रकार के क्रम परिवर्तन (Permutations and Combinations) कार्यान्वित करने थे और मैंने सोचा कि यदि कोई ऐसा मार्ग खोज निकाला जाए जिसके माध्यम से सारे संयोग एक ही रेखा में कार्यान्वित हो सकें, केवल तभी कुण्डलिनी उठेगी और ऐसा ही हुआ, यही घटित हुआ। मेरी सच्ची इच्छा के कारण, क्योंकि लोगों के लिए मुझे बहुत दुख था कि वे अपने जीवन व्यर्थ की चीज़ों में बरबाद कर रहे है, किसी चीज़ के लिए उनके हृदय में सच्चा एहसास नहीं है, किसी भी चीज़ के लिए सच्चा प्रेम नहीं है और उन्हें भी कोई प्रेम नहीं करता। वे प्रेम नहीं कर सकते, कोई उन्हें प्रेम नहीं करता और वे कष्टों में फँसे हुए हैं। अतः मैं कहूँगी कि यह मेरा सोचा विचारा कार्य था। मैंने मनुष्यों को बहुत सावधानी पूर्वक देखा। क्यों वे इस प्रकार करते हैं? क्यों इस प्रकार का आचरण करते हैं? क्यों वे चीज़ों को समझते नहीं? क्यों वे कठोर हैं, क्यों चिल्लाते हैं? क्यों मारा–मारी करते हैं? क्यों वे ये सब कार्य करते हैं? असन्तुलनों के कारण। परन्तु अन्तर्अवलोकन से यदि आप ये असन्तुलन देखने लगें तो अब आपको स्वयं को ठीक करने का ज्ञान है और आप इसे कार्यान्वित कर सकते हैं। आपको केवल अपने चक्रों पर कार्य करना होगा। देखें कि कौन सा चक्र पकड़ रहा है? कहाँ समस्या हैं? आपको अपना सम्मान इस प्रकार से करना होगा कि आप स्वयं अपने डाक्टर बन जाएं और स्वयं आपको अपने विषय में पूर्ण ज्ञान हो। मुझमें ये कमी है, मैं क्यों पकड़ रहा हूँ? उस चक्र पर मैं क्यों पकड़ रहा हूँ? ऐसा क्यों घटित हो रहा है?

ये शिक्षा आपको स्वयं को देनी होगी और यह तभी सम्भव होगी जब आप इन चक्रों की अनुभूति कर सकें। अब उन्नत होना आपके हाथ में है। महान लोगों, महान व्यक्तित्वों, इतिहास बनाने वाले महान धुरन्धर व्यक्तियों के रूप में उन्नत हों, जिनका सम्मान होता है। सभी महान लोग तथा महान सन्त बड़ी हस्ती वाले लोग थे। परन्तु उन्हें कुण्डलिनी उठाने का ज्ञान न था। ये ज्ञान आपको प्राप्त है। कुण्डलिनी उठाने का विशेष ज्ञान आपके पास है। आप जानते हैं कि कुण्डलिनी का अन्दाज़ा किस प्रकार लगाया जाए? आप ये भी जानते हैं कि समस्या को किस प्रकार समझा जाए तथा प्रेम एवं सुन्दरतापूर्वक किसी भी व्यक्ति को उसकी समस्या के विषय में किस प्रकार बताया जाए। अतः आपकी आत्मा का सन्देश ये है कि आप परस्पर प्रेम करें। आप यदि किसी से प्रेम नहीं करते तो क्या कारण है? क्यों नहीं आप प्रेम करते, उस व्यक्ति में क्या खराबी है? वह यदि सहजयोगी है और अच्छा सहजयोगी है तो क्या आपकी भावना ईर्ष्या के कारण है या लालच के कारण या कामुकता के कारण? अब भी आप ऐसे ही हैं। पूरे विश्व बन्धुत्व की एकाकारिता का वास्तव में आनन्द लिया जाना चाहिए। इसका अत्यन्त सुन्दरता पूर्वक आनन्द लिया जाना चाहिए। यहाँ विद्यमान सभी चीज़ों को देखें। इनमें कितना सामंजस्य है! ये सामंजस्य इसलिए है क्योंकि ये सब कार्य

प्रेम से किया गया है, इसीलिए इसमें तारतम्यता है। लोगों में यह इस प्रकार की तारतम्यता का सृजन करता है कि एक दूसरे की संगति का आनन्द आप देख सकते हैं। एक दूसरे की उपलब्धियों का आनन्द इतना आनन्ददायी है कि इसका वर्णन मैं शब्दों में नहीं कर सकती। ऐसा कर पाना असम्भव है। शब्द भावनाओं को प्रकट करने में असमर्थ हैं। जैसे मैंने बताया था, ऐसा प्रतीत होता है मानो आप स्वर्गीय उद्यान में प्रवेश कर गए हों। जब आप स्वयं जान जाएं तो ऐसी ही भावना आपमें होनी चाहिए क्योंकि जब आप स्वयं को जान जाते हैं तो आपको अपने अस्तित्व का ज्ञान हो जाता है और आपको इतनी प्रसन्नता होती है कि आपकी आत्मा इतनी सुन्दर है, आप इतने सुन्दर हैं, इतने आनन्दित हैं और आपके पास सभी कुछ है! यह ज्ञान कि अन्दर से आप आनन्द से इतने सुगन्धित हैं, आवश्यक है। यह अवस्था आपमें अवश्य होनी चाहिए। मैंने देखा है कि जब आप आनन्दातिरेक में होते हैं तो आप नाचते हैं, गाते हैं। वह स्थिति बहुत ही अच्छी होती है। हर समय आपकी आत्मा को छोटी–छोटी चीज़ों से झूम उठना चाहिए। किसी भी छोटी सी क्रांति, किसी भी कलात्मक चीज़, करुणापूर्ण किया गया छोटा सा कार्य या कृतज्ञता की अभिव्यक्ति से। भावना की उस गहनता को आप महसूस करें। उदाहरण के रूप में आज मैंने झण्डे देखे। जब हमने स्वतन्त्रता प्राप्त की तब ये झण्डा, हमने बर्तानवी झण्डा हटाए जाने के पश्चात् इस झण्डे को ऊपर जाते हुए देखा। मैं बता नहीं सकती उस वक्त कौन सी भावना थी कि आखिरकार सत्य ने असत्य पर विजय प्राप्त कर ली है। न्याय ने अन्याय पर जीत प्राप्त कर ली है। आज भी वही भावना इतनी अधिक हैं कि मैं झण्डे को देख भी नहीं सकती। इसे देखते ही मुझे पूरा इतिहास याद आ जाता है, पूरा दृश्य मेरे सामने आ जाता है कि कितने लोगों ने बलिदान किया, कितने लोग शहीद हुए लोगों ने इसके लिए कितना संघर्ष किया? झण्डा उन्हीं के सम्मान में है और आप भी उन्हीं सब चीज़ों के आधार हैं। आप सब भी उन्हीं आदर्शों, उन सब बलिदानों तथा मानव के हित में प्राप्त की जाने वाली उपलब्धियों के लिए हैं। अन्य लोगों के लिए आपको बहुत कुछ प्राप्त करना होगा।

अपने अन्दर उन कार्यों की रूपरेखा बनाएं जो आपने अन्य लोगों के लिए करने हैं। लोगों के लिए आप क्या प्राप्त कर सकते हैं? अपने अन्दर ये गुण आत्मसात करने के कौन से मार्ग हैं जिनसे आप पूर्णतः अद्वितीय व्यक्तित्व बन सकें? बहुत से महान नेता तथा महान लोग हुए जिन्हें लोग याद करते हैं। अब आपको क्या देखना चाहिए? किस चीज़ ने उन्हें इतना महान बनाया? इतने वर्षों के पश्चात् भी अभी तक लोग उन्हें याद क्यों करते हैं? मैंने आपको शिवाजी महाराज का पुतला दिया है। वे भी एक महान आत्मा थे। उनके सिद्धान्त, उनका सौन्दर्यमय जीवन, उनकी भाषा और उनका दृष्टिकोण अत्यन्त महान था। सर्वोपरि वे एक बहादुर व्यक्ति थे। बहादुरी का गुण जब आपमें आ जाएगा तो किसी भी महत्वपूर्ण कार्य को करने में आप न हिचकिचाएंगे। किसी से आपको डर नहीं लगेगा। बिना

इधर–उधर की बात किए आप जान जाएंगे कि किस प्रकार समाधान खोजना है और किस प्रकार कार्यान्वित करना है।

आपके साथ ऐसा तभी घटित होगा जब आपको वास्तव में ये ज्ञान प्राप्त हो जाएगा, जब आपमें साहस की ऐसी शक्ति आ जाएगी। आप दुस्साहसी नहीं बनेंगे। आपमें विवेक होगा। साहस के साथ आपमें विवेक होगा और यही आत्मा है, यही आपको बेशुमार विवेक एवं साहस प्रदान करेगी। यह युद्ध करने की हिम्मत नहीं है और न ही हिंसक स्वभाव है और न ही असभ्य स्वभाव। यह तो अत्यन्त शान्त, सुन्दर एवं साहसिक दृष्टिकोण है। चीनी सन्त की एक कहानी है। उस सन्त से राजा ने कहा कि वह उसके मुर्गे को मुर्ग–लड़ाई का प्रशिक्षण दे। सन्त ने कहा ठीक है, अपने मुर्गे को यहाँ ले आओ। मैं उसे प्रशिक्षण दूंगा। मुकाबले के दिन सभी मुर्गे अखाड़े से दौड़ गए क्योंकि वहाँ तो विवेक एवं साहस की शक्ति खड़ी हुई थी। शान्त होते हुए भी साहस अत्यन्त शक्तिशाली है। आपको किसी पर बम नहीं फेंकने होते, किसी की हत्या नहीं करनी होती। केवल साहसपूर्वक डटे रहना होता है। ये एक अन्य गुण है जिसकी अभिव्यक्ति होगी। यह अत्यन्त विनम्र है और मधुर है। इसी साहस के साथ आप डटे रहेंगे। मैं जानती हूँ आपमें से बहुत से लोग ऐसे ही हैं। उनके लिए न कोई संघर्ष है न कोई लड़ाई। साहसपूर्वक डटे रहना और उचित लक्ष्य को प्राप्त करना। ऐसा करना बिल्कुल सम्भव है क्योंकि अब आपके तार सर्वशक्तिमान परमात्मा से जुड़ गए हैं, आपका सम्बन्ध परम चैतन्य से हो गया है जो सभी कुछ कार्यान्वित करेगा।

ये कहते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि आज मैंने देखा कि आप में से बहुत से लोग बहुत अच्छे सहजयोगी हैं, आपमें से बहुत से। यदि आप किसी ऐसे सहजयोगी को देखें कि वह अच्छा नहीं है तो मुझे इसकी सूचना दें। कृपा करके मुझे इसके विषय में बताएं। पता लगाएं कि कहीं कोई व्यक्ति अत्याचार करने का या अन्य लोगों को नियन्त्रित करने का, पैसा बनाने का प्रयत्न तो नहीं कर रहा, कहीं कोई कामुक या लोभी व्यक्ति तो नहीं? इसकी अभिव्यक्ति होनी चाहिए। एक बार जब आप इसे कार्यान्वित कर लेंगे, आप समझ लें कि ये क्षेत्र 'धर्मयुद्ध' कहलाता है। धर्मयुद्ध अर्थात धर्म की लड़ाई। परन्तु ये युद्ध ऐसा नहीं है। हमारा धर्मयुद्ध ये है कि हम धर्म पर खड़े हैं। धर्म का अर्थ ये तथाकथित धर्म नहीं, इसका अर्थ विश्व–निर्मला–धर्म है। आप अपने धर्म पर डटे हुए हैं और यह नकारात्मकता जिसे हम अधर्म कहते हैं आपसे युद्ध कर रही है। अतः अपने धर्म पर डटे रहें। जब तक आप पूर्णतः धार्मिक नहीं हैं तब तक सहजयोग में आप कोई उपलब्धि प्राप्त नहीं कर सकते। मैंने देखा है कि विदेश में रहने वाले लोगों के बड़े अटपटे विचार होते हैं। मेरे पास आकर वे कहेंगे कि 'श्री माताजी मेरी एक पत्नी है परन्तु मैं एक अन्य महिला से प्रेम करता हूँ अब मैं क्या करूं'? मैंने कहा, "आप बाहर हो जाओ, बस केवल बाहर हो जाओ"। या कई बार पत्नियाँ आकर कहतीं हैं, "श्री माताजी मेरे एक अन्य पुरूष से

सम्बन्ध हैं, मुझे क्या करना चाहिए?" मैंने कहा, "तुम बाहर हो जाओ, केवल इतना ही, तुम सहजयोग से बाहर हो जाओ।" तुम सहजयोग के लिए बेकार हो और सहजयोग तुम्हारे लिए बेकार है। तुम पूरी तरह से जाति बाहर हो। अब उन्हें सहजयोग से कुछ नहीं लेना देना।

भारत में हमारे साथ बेईमानी की समस्या है। भारतीय लोग बेईमान हैं। मैं सोचती हूँ कि यह हमारा विशेष स्वभाव है, हम अत्यन्त भ्रष्ट लोग हैं। भारत इतना भ्रष्ट हो गया है कि मुझे विश्वास नहीं होता! पैंतीस वर्ष पूर्व मैं यहीं थी, तब हमने भ्रष्टाचार का नाम भी नहीं सुना था। अब ये लोग इतने भ्रष्ट हो गए हैं कि भ्रष्टाचार सहजयोग में भी प्रवेश कर गया है। भ्रष्टाचार यदि सहजयोग में प्रवेश करेगा तो भ्रष्टाचारी एक दम से खोज लिए जाएंगे और दण्डित होंगे। मैं उन्हें दण्डित नहीं करूंगी, उनकी अपनी कुण्डलिनी उन्हें दण्डित करेगी। तो अपराध करने में हर देश की अपनी विशेषता है। हम यहाँ अपराध करने नहीं आए हैं। अपराधियों के रूप में हम अपनी अभिव्यक्ति नहीं करेंगे। हम तो यहाँ यह प्रमाणित करने के लिए हैं कि हम पूर्ण हैं और बहुत अच्छे लोग हैं। यही आत्मा है कि हम पूर्ण है। पूर्व संस्कारों के अनुसार अब हमें नहीं चलना है। अब हम नए साम्राज्य में पहुँच गए हैं। ये एक नया क्षेत्र है जिसमें हम पहुँचें हैं और इसका हमें आनन्द लेना चाहिए।

मेरे विचार में आप सब लोगों ने समझ लिया है कि आज मैं उन लोगों के लिए चिन्तित हूँ जिन्होंने सहजयोग को पतन की ओर खींचा है। उन्हें समझ लेना चाहिए कि मैं सब कुछ समझती हूँ। जब उन्हें हानि पहुँचेगी तो मुझे दोष न दें। ये बात अत्यन्त स्पष्ट है कि वे सहजयोग के समीप भी नहीं हैं। दिन प्रतिदिन सहजयोग तो आपको पावन करता है। आप किसी अनुभव को देखें, किसी व्यक्ति को देखें, कुछ घटनाओं को देखें। ये आपको पवित्र करती हैं। यही इसकी पहचान है। मान लो मैं किसी बेईमान व्यक्ति को देखूं तो तुरन्त मैं अपने अन्दर देखने लगूंगी कि मैं स्वयं तो कोई बेईमानी नहीं कर रही? कल्पना करें आप ही वह व्यक्ति हैं जो सुधारक है। अपने पर पड़ने वाले प्रभावों को सुधार रहे हैं। आप कहाँ खड़े हैं? क्या आप सुधार बिन्दु पर खड़े हैं या इसके साथ ही समाप्त हो रहे हैं?

कल का प्रवचन सभी लोगों ने पसन्द किया, आज का प्रवचन उसी का विस्तार है। मैं आपको बता रही हूँ कि आप बहुत महान लोग हैं। आप पूरे विश्व को बचा रहे हैं। अपने जीवन काल में यह सब घटित होने की आशा मैंने नहीं की थी। परन्तु यह सब घटित हो गया और मैं आप सबको, अत्यन्त अत्यन्त महान व्यक्तियों को, देखती हूँ। महिलाओं को विशेष रूप से बहुत अधिक कार्य करना होगा। मैं स्वयं एक महिला हूँ और महिलाओं में प्रेम करने एवं सहन करने की एक विशेष शक्ति होती है।

मुझे आशा है कि आप सब सुन्दर सहजयोगी बनेंगे। विश्व को कोई अन्य चीज़ विश्वस्त नहीं कर सकती, केवल आपका कार्य, आपकी योग्यताएं, आपके

प्रेम की शक्ति विश्वस्त कर सकती है। आप लोगों के विषय में मैंने बहुत सी चीज़ें देखीं अनुभव कीं और जब मैं उनके विषय में सोचती हूँ तो वास्तव में हर्ष होता है। मैं देखती हूँ कि लोग किस प्रकार संचालन करते हैं और किस प्रकार उन्होंने कठिन चीजों की देखभाल की और उन्हें कार्यान्वित किया। अब हम एक नए विश्व में हैं और उस नए विश्व तथा सहजयोगियों की प्रजाति में उन्हें परिणाम दर्शाने होंगे। उन्हें अपनी शक्तियों, साहस और अपनी सूझ–बूझ का परिचय देना होगा। ये गम्भीर बात नहीं है और न ही ये उथली बात है। यह तो आनन्ददायी है। आपको अपने विषय में केवल आनन्द की अनुभूति करनी होगी। यह सब मैं आपको इसलिए बता रही हूँ क्योंकि यह आपके अन्तःस्थित है, आपकी शक्ति है, हर समय यह आपके अन्दर विद्यमान है और आप इसका सामना भी कर चुके हैं। आप सबको मैं जन्मदिवस की शुभ कामनाएं देती हूँ और कामना करती हूँ कि आप एक नया जन्म, नई सूझबूझ और नया व्यक्तित्व प्राप्त करें। उस व्यक्तित्व को स्वीकार करने का प्रयत्न करें, उसका सम्मान करने का प्रयत्न करें। यही व्यक्तित्व है, यही आपकी आत्मा है।

परमात्मा आपको धन्य करे।

78वाँ जन्मदिवस समारोह

दिल्ली 20.3.2001

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नाय भूत्वा भविता वा न भूयः अजो नित्य शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

आत्मा जन्म–मरण से परे है। ये सदैव था और सदैव रहेगा। आत्मा अजन्मा है, नित्य है, शाश्वत है, पुरातन है और शरीर का नाश होने पर भी इसका नाश नहीं होता।

हमारी परम पूज्य, परम प्रिय माँ श्री आदिशक्ति के 78वें जन्म दिवस का शुभअवसर 21 मार्च 2001 को आया। यह जन्मदिवस उनका था जो जन्म–मरण से परे हैं, शाश्वत हैं और जैसा गुरुनानक देवजी ने कहा है 'अकाल मूरत, अजूनी सैबं' हैं। जन्म–मरण से ऊपर होते हुए भी कृपासिन्धु आदिशक्ति अपने सहजयोगी बच्चों को अपना जन्मोत्सव मनाकर आनन्द के सागर में गोते लगाने, अपनी उत्क्रान्ति तथा आनन्द की शाश्वत अवस्था प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती हैं। विश्व के 96वें देशों से सहजयोगी जन्मोत्सव में भाग लेने के लिए दिल्ली के निर्मल–धाम में एकत्र हुए और तीन दिनों तक निरन्तर दिव्य चैतन्य लहरियों के सागर में गोते लगाए तथा समारोह की रौनक बढ़ाई। बहुत से प्रतिष्ठावान लोगों ने भी इस समारोह में भाग लिया और परमेश्वरी माँ के प्रति अपनी कृतज्ञता तथा श्रद्धा प्रकट की। विश्व भर से श्री माताजी को उनके 78वें जन्मदिवस के शुभअवसर पर हजारों बधाई सन्देश आए जिनमें मानवहित के लिए किए गए उनके प्रयत्नों की भूरि–भूरि प्रशंसा की गई

थी। कुछ बधाई सन्देश निम्नलिखित हैं:–

स्टेट ऑफ न्यूयार्क से गवर्नर जार्ज ई. पेटकी लिखते है:–

प्रिय श्री माताजी,

आपके 78वें जन्मदिवस के शुभ अवसर पर अन्य लोगों के साथ सामूहिक रूप में आपको हार्दिक बधाई भेजते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है।

.....अपने उच्च चरित्र और वर्षो तक अथक कार्य के लिए आप विशेष बधाई और गहन सम्मान के अधिकारी हैं..... प्रेम एवं करुणा का जो उदाहरण आपने स्थापित किया है इस पर गर्व होना स्वाभाविक है। विश्वास रखें कि जिन लोगों को आपने विवेक एवं सम्पन्नता प्रदान की है उनके लिए आप प्रेरणा का स्रोत हैं।

परमात्मा करे कि ये शुभ दिवस हम सबको जीवन में प्राप्त वरदानों पर दृष्टिपात करने का अवसर प्रदान करे।

आपके जन्मदिवस पर मंगलकामनाऐं करते हुए।

जार्ज ई. पेटकी।

County of Allegheny से वहां के चीफ एग्ज़िक्यूटिव ने श्रीमाताजी के लिए सम्मान प्रमाण पत्र भेजते हुए लिखा :–

श्री माताजी निर्मला देवी 21 मार्च 2001 को आपके 78वें जन्मदिवस समारोह के अवसर पर मैं अपनी शुभ कामनाएं अर्पण करता हूँ और विश्वशान्ति तथा मानवहित की आपकी विशिष्ट उपलब्धियों, और सेवाओं को हृदय से मान्यता प्रदान करता हूँ। आपके विशेष प्रयत्नों एवं उपलब्धियों ने एलिघ्नी प्रदेश के नागरिकों के हृदय को आपके लिए सम्मानभाव से भर दिया है।

सिटि ऑफ पिट्सबर्ग (अमेरिका) के मेयर टॉम मर्फी अपने घोषणा पत्र में लिखते हैं:–

श्री माताजी निर्मलादेवी का जन्म 21 मार्च 1923 को भारत में छिंदवाड़ा नामक स्थान पर हुआ। उनके बाल्यकाल में ही महात्मा गांधी ने उनकी प्रतिभा एवं विशिष्ट गुणों को पहचाना।

वे विश्व विख्यात आध्यात्मिक नेता तथा सहजयोग की संस्थापक हैं। सहजयोग आध्यात्मिक उत्क्रान्ति प्राप्त करने का एक अत्यन्त स्वाभाविक कार्य है जिसके लिए व्यक्ति को कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता। उन्होंने बहुत सी धमार्थ संस्थाओं की स्थापना की है। उन्हें संयुक्त राष्ट्र शान्ति मैडल प्रदान किया गया है और विश्वशान्ति पर भाषण देने के लिए चार बार संयुक्त राष्ट्र संघ में आमंत्रित किया गया है। नोबल शान्ति पुरस्कार के लिए भी दो बार उन्हें मनोनीत किया गया।

सिटी ऑफ पिट्र्सबर्ग के मेयर के रूप में मैं श्रीमाताजी निर्मलादेवी को उनके 78वें जन्म दिवस पर बधाई देता हूँ और 21 मार्च 2001 बुधवार को पिट्र्सबर्ग नगर में 'श्रीमाताजी निर्मला देवी दिवस' घोषित करता हूँ।

टॉम मर्फी।

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन,

निर्मल धाम, 20 मार्च 2001

सत्यसाधको, जिन्होंने सत्य को खोज लिया है और जो अभी तक इसे खोजने का प्रयत्न कर रहे हैं, मानव की आश्चर्य चकित कर देने वाली सबसे बड़ी समस्या यह है कि मानव स्वयं को नहीं पहचानता। वो ये नहीं जानता कि उसमें कौन सी शक्तियाँ हैं, कौन सी सम्पदाएं हैं तथा ये भी नहीं जानता कि किस ऊँचाई को वह प्राप्त कर सकता है! अपने आप के विषय में अज्ञानता ही मुख्य समस्या है।

आप यदि अपने हृदय में झाँककर देखें और सोचें कि किस प्रकार का आध्यात्मिक जीवन आप प्राप्त कर सकते हैं तो आप जान जाऐंगे कि आप एक खजाना है शक्तियों का, प्रेम का, न्यायशक्ति का और विवेकशक्ति का खजाना। समस्या ये है कि हमें इस बात की समझ ही नहीं है कि हम हैं क्या। और सहजयोगी भी इतने विनम्र हैं कि वो इस बात को महसूस ही नहीं करते कि उनमें कौन सी शक्तियाँ हैं। कभी कभी तो मुझे लगता है कि सहजयोग की बात करने में भी उन्हें शर्म महसूस होती है, अन्य लोगों को सहजयोग के विषय में बताते हुए भी उन्हें संकोच होता है क्योंकि वे सोचते है कि कहीं ये उनका अहं न हो।

मैं आपको बताना चाहूंगी कि जब आप समाज का सामना करेंगे तो अहम् स्वतः ही कम हो जाएगा। इसकी हवा निकल जाएगी। जब तक आप दूसरों का सामना नहीं करते आपका अहं नीचे नहीं आ सकता। लेकिन किस प्रकार? जब आप सोचते हैं कि अन्य लोग आपसे बेहतर हैं, जब आप ये कहने से घबराते हैं कि उन्हें परिवर्तित होना है, और जब आपको ये चिन्ता होती है कि आप अधिक आक्रामक हो रहे हैं, तो अहं तो होता ही हैं। यदि आप सहजयोगी हैं और प्रतिदिन ध्यानधारणा करते हैं अपनी शुद्धि करते हैं, तो आपके अन्दर एक शक्ति है जो परिणाम दर्शाएगी। यह अपनी शक्तियां दर्शाएगी और इतनी शक्ति से अपना प्रकटीकरण करेगी की आप हैरान रह जाएंगे! क्या मैं वास्तव में ऐसा हूँ? कुण्डलिनी की जागृति से क्या होता है? ये छोटे–छोटे दोष जिन्हें संस्कृत में हम षड्रिपु कहते हैं, ये सब छुट जाते हैं। परन्तु हमें स्वयं का सामना करना

होगा। सहजयोग में कुछ लोग सोचते हैं कि हम बहुत महान बन सकते हैं या बहुत उच्च पद प्राप्त कर सकते हैं आदि आदि। ये बात नहीं है। ये बाह्य नहीं है। ये बाह्य महत्वाकांक्षा नहीं है। यह तो आन्तरिक प्रकाश होता है जिसे ज्योतित होना है। जहाँ तक चक्रों के ज्ञान का सम्बन्ध है इसमें आप सब अत्यन्त बुद्धिमान तथा कुशल हैं। परन्तु आत्मा (स्व) के ज्ञान के विषय में क्या है? क्या आप अपने विषय में जानते हैं कि आप क्या कर सकते हैं और आपमें क्या योग्यता है? इस मामले में हम पिछड़े हुए हैं। ठीक है, यह आपकी आन्तरिक इच्छा है क्योंकि आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो चुका है। परन्तु फिर भी एक मायने में अभी कमी है। यह कमी स्वयं पर पूर्ण आत्मविश्वास का न होना है कि आप सत्य को जानते हैं और सत्य का ज्ञान प्राप्त होने के कारण अब आपको इस सत्य का प्रसार करना है और अज्ञान के अंधकार को समाप्त करना हैं। परन्तु मैने देखा है कि सहजयोग में आकर भी लोग अपने विषय में विचार बनाने लगते हैं और आयोजन करने का प्रयत्न करते हैं। सभी प्रकार के कार्य वो करते हैं। मैं ये जानती हूँ। इसकी अपेक्षा यदि आप अपनी पूरी तस्वीर को देख लें कि आपमें क्या करने की योग्यता है? अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार देकर, उन्हें ये समझाकर कि उनकी क्या शक्तियाँ हैं, उनकी शक्तियां आपकी नहीं, वो क्या उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं। ये सब करके आप क्या प्राप्त कर सकते हैं यदि ये बात आप जान लें तो मैं आपको बताती हूँ कि सहजयोग प्रचार–प्रसार के कार्य में हम लोग तेजी से बढ़ सकते हैं।

यह भय कि हमारे अन्दर अहं बढ़ जाएगा, बहुत से लोगों में इस प्रकार के मूर्खतापूर्ण विचार हैं, ऐसा करके आप कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते। जितना अधिक आप ध्यान धारणा में उतरेंगे आपको समझ आयेगा कि आपके अन्दर बहुत से महान गुण हैं, रत्नों के भण्डारगृह की तरह से। परन्तु आपको अपना सम्मान करना होगा और अपने अन्दर इस बात को जानना होगा कि आपने क्या प्राप्त कर लिया है। ये नहीं कि आप बाह्य विश्व में क्या प्राप्त करना चाहते हैं। कुछ लोग अगुआ बनना चाहते हैं आदि आदि। ये सब मूर्खता है। इसका कोई महत्व नहीं है। सर्वोत्तम बात

तो ये जानना है कि अपने अन्दर आप महान मूल्यवान प्रणाली के खजाने हैं और इसे आप जागृत कर सकते हैं। आपमें शक्तियाँ हैं। ये कार्य आप आसानी से कर सकते हैं, बिना किसी को तकलीफ पहुँचाए, बिना किसी को कष्ट दिए और बिना किसी से पैसा लिए। परन्तु वास्तव में मैं देखती हूँ कि लोग बाह्य से या तो धन लोलुप हैं या सत्ता लोलुप, अन्दर से नहीं। अन्दर तो वैभव है, शक्ति है और वो सभी कुछ है जिसके बारे में आप सोचते हैं। मैं जानती हूँ कि कुछ लोग ऐसे हैं जो कभी मंच पर भी नहीं चढ़े थे, अब वे महान वक्ता बन गए हैं। मैं हैरान हूँ कि किस प्रकार उनमें ये परिवर्तन आया! महानतम परिवर्तन तो ये है कि आप स्वयं को अच्छी तरह समझ गए हैं और इस ज्ञान से आप अन्य लोगों को भी परिवर्तित कर सकते हैं, स्वयं को भी परिवर्तित कर सकते हैं। **अपने को स्वयं तक ही सीमित न रखें। आपको विस्तृत होना होगा।** यह शक्ति आपको इसलिए दी गई है कि आप स्वयं को भली–भांति जान सकें। आत्म विश्वस्त, करुणामय और भद्र होकर लोगों से इस प्रकार बात कर सकें कि वे समझ जाएं कि आप सहजयोगी हैं। यह शक्ति आपको केवल इसलिए नहीं दी गई कि आप कह सकें कि मैं सहजयोगी हूँ। इसलिए आपको ये शक्ति दी गई है कि आप स्वयं को अच्छी तरह से पहचान सकें और अपने वैभव तथा अपनी सूझ–बूझ में स्थापित रहें। विश्व में असंख्य लोग हैं, लाखों–करोड़ों। आप ही लोग क्यों सहजयोग में आए? मैंने आपको नहीं चुना, आपने मुझको चुना है और जब आपने मुझको चुना है तो अवश्य आप अपने अन्दर समझें कि मेरे अन्दर कुछ तो ऐसा होगा जिसके कारण मैं सहजयोग में आया और इस प्रणाली को समझा। ये बहुत सूक्ष्म लोग ही जान सकते हैं, स्थूल लोगों के लिए ये ज्ञान नहीं है। परन्तु यदि आप स्वयं स्वयं को खोज लें और तब आगे बढ़ें तो अहं हो ही नहीं सकता क्योंकि आप अहं नहीं हैं।

जिन लोगों में अहं है, उनके विषय में जैसा मैंने बताया है वे सहजयोग से भी पैसा बनाते हैं। वे चीजों का आयोजन करने का प्रयत्न करते हैं जिससे वे उभर

कर सामने आएं। वे बिल्कुल निम्न स्तर पर हैं। परन्तु यदि आप वैसे नहीं हैं तो आपको हाथ बाँधकर नहीं बैठ जाना चाहिए। ये जानने के लिए कि मैं क्या हूँ' आपको कार्य करना चाहिए।

मैं क्या हूँ? ईसा मसीह ने कहा था, **'स्वयं को पहचानो'**, मोहम्मद साहब ने भी कहा 'स्वयं को पहचानो'। सभी अवतरणों ने कहा कि 'स्वयं को पहचानो'। इसका अर्थ ये हुआ कि आपमें कुछ महानता है। आपके अन्दर वैभव निहित हैं, जिनका आपको ज्ञान नहीं है। एक बार आप जब स्वयं को पहचान जाएंगे तो आपमें आत्मसम्मान जाग जाएगा। आप गलत कार्य नहीं करेंगे, आपको क्रोध नहीं आएगा। तब आप प्रेम के सागर में होंगे। ऐसा ही होना चाहिए। सहजयोग यही है। मेरे विचार में आजकल बहुत भयानक दिन हैं। जैसा लोग कहते हैं ये घोर कलियुग है। ठीक है, लेकिन इस काल में आप यहाँ क्यों हैं? लोगों को साक्षात्कार देने के लिए, उन्हें अच्छे विचार प्रदान करने के लिए। परन्तु कैसे? जब तक आप स्वयं को भली भांति पहचान नहीं जाते कि आपमें क्या क्या करने की योग्यता है, आप ये कार्य कैसे कर सकते हैं? महान व्यक्तियों के जीवन पर दृष्टि डालें। अब्राहिम लिंकन जैसे लोगों के जीवन पर। अत्यन्त युवावस्था में ही उन्हें ये बात समझ आ गई थी कि अपने उदाहरण द्वारा अपनी मूल्य प्रणाली उन्हें अन्य लोगों को समझानी होगी। यद्यपि उन्हें समझ पाना लोगों के लिए कठिन कार्य था फिर भी उन्होंने इतने अच्छे कार्य किए।

मैने इस प्रकार की बहुत सी जीवनियां पढ़ी हैं, जैसे टर्की में अतातुर्क हुए। हर जगह पर एक व्यक्ति ऐसा हुआ। भारत में लाल बहादुर शास्त्री हुए जो अत्यंत महान व्यक्ति थे और जो सहजयोग के विषय में जानते थे। उन्होंने मेरा बहुत सम्मान किया। लोग हैरान होंगे कि उन्होंने मेरे पति से भी ज्यादा मेरा सम्मान क्यों किया! क्योंकि उन्होंने समझा कि सहजयोग क्या है? परन्तु इसका अवसर उन्हें नहीं मिला। अब आप लोगों के पास इसका अवसर हैं। ठीक है कि मैं काफी वृद्ध हूँ। ये बात ठीक है। परन्तु अभी तक मैंने हार नहीं मानी। जब तक मैं जीवित हूँ आपको आपके व्यक्तित्व के विषय में, आपको अपने विषय में विश्वस्त करने के लिए कठोर परिश्रम करती रहूँगी। मैं इसीलिए जीवित हूँ। जब तक आप पूर्णत विश्वस्त नहीं हो जाते। आप हैरान होंगे कि सहजयोग में आकर भी लोग सभी प्रकार के मूर्खतापूर्ण कार्य करते हैं। मैं जानती हूँ वो ये कैसे करते हैं? परन्तु ऐसा करने वाले लोग वास्तव में सहजयोगी नहीं हैं। क्योंकि जबतक आप अपनी गहनता में नहीं उतर जाते, जब तक आप ये नहीं जान लेते कि आपका व्यक्तित्व वास्तव में क्या है तो जो भी प्रयत्न आप करते रहें,

जो कुछ भी आप करते रहें वह सहज नहीं है। सहज अर्थात स्वतः। यह आपको स्वतः प्राप्त हो जाता है। हम जानते हैं कि सहजयोग में हम उस क्षेत्र से जुड़ जाते हैं जिसे आइंस्टाइन ने ऐंठन क्षेत्र (Torsion Area) नाम दिया है। परन्तु ये क्षेत्र आपके पीछे स्थित है। आपको आश्रय देने के लिए, आपकी सहायता करने के लिए परम चैतन्य है। आप सबको यह प्राप्त हो गया है, परन्तु अब भी आप इसमें विश्वास नहीं करते। इसका विश्वास करें, स्वयं पर विश्वास करें। आपके अन्दर यह शक्ति विद्यमान है। मैं जानती हूँ।

मैं बम्बई के एक व्यक्ति को जानती हूँ। वह मछुआरा था और महान सहजयोगी था। अब हमने उसे खो दिया है। एक दिन मछुआरों में सहजयोग प्रचार करने के लिए वह एक अन्य टापू पर जा रहा था। उसने देखा कि आकाश में भयानक काले बादल मंडरा रहे थे। वह बाहर आया और बादलों से कहा "मैं अपनी माँ के कार्य से जा रहा हूँ, तुम वर्षा करने की हिम्मत कैसे कर सकते हो? जब तक मैं वापिस नहीं आता तुम्हें वर्षा नहीं करनी है। और हैरानी की बात है कि वह बाहर गया अपना सारा कार्य किया और पाँच घण्टों के पश्चात वापिस आया। वापिस आने के पश्चात् जब वह बिस्तर में लेट गया तब मूसलाधार वर्षा आरम्भ हुई।

प्रकृति आपके साथ होगी क्योंकि वह हमारी प्रतिनिधि है। ये हमारी सहायता करती है। आप यदि उस उच्च स्तर के हैं तो प्रकृति आपका साथ देगी। आपने देखा है कि बहुत बार प्रकृति ने मेरी सहायता की, इसलिए नहीं कि प्रकृति पर मेरा नियंत्रण था या मैं उसे कुछ करने के लिए कहती हूँ। परन्त इसलिए कि उसे इस बात का आभास है कि मैं पृथ्वी पर एक विशेष कार्य करने के लिए आई हूँ इसलिए मेरी सहायता होनी चाहिए। इसी प्रकार से यदि आप भी यह गुण अपने में स्थापित कर लें तो प्रकृति जान जाएगी कि आप लोग पूरे ब्रह्माण्ड का उद्धार करने के लिए हैं। ऐसा आप कर सकते हैं। चाहे मैं सोचती रहूँ कि पूरे विश्व का पुनरुत्थान होना चाहिए, परन्तु मैं अकेली इस कार्य को कैसे कर सकती हूँ? मैं यदि इस कार्य को कर सकती तो मुझे ये माध्यम लेने की आवश्यकता क्यों पड़ती? ऐसे माध्यम जो स्वयं को जानते हैं, अपने कार्य को जानते हैं और जिनमें इस कार्य को अन्जाम देने की योग्यता है। निःसन्देह आप लोग विशिष्ट हैं अन्यथा आप लोग यहां क्यों होते आपकी विशेषता ये है कि आप परमेश्वरी पूजा के अच्छे संचारक हैं। आप

बहुत अच्छे संचारक हैं, इसमें आप विशेषज्ञ हैं। यह कार्यान्वित होता है। स्वतः ये कार्य करता है, परन्तु परमात्मा से आपका योग पूर्ण होना चाहिए। मूल्यों की पूर्णता के बारे में बात करना ठीक है, परन्तु ये पूर्ण मूल्य क्या हमारे अन्दर है या नहीं? यदि ये हमारे अन्दर विद्यमान हैं तो क्यों नहीं हम इन्हें अन्य लोगों को आत्मसात करने देते? यह कार्य कठिन नहीं है। मैं आपको बताती हूँ कि ये बिल्कुल कठिन नहीं है। मैं एक सर्वसाधारण गृहणी हूँ। केवल मेरे प्रेम में या मैं कहूँ कि मेरे स्वभाव के कारण, बाहर से चाहे मैं सर्वसाधारण गृहणी दिखाई दूं। लोग सोचा करते थे कि मैं इसलिए अधिक नहीं बोलती क्योंकि मुझे अंग्रेजी नहीं आती। स्थिति यह थी। परन्तु वास्तविकता यह नहीं है। वास्तविकता ये है कि मैं जानती थी कि मैं क्या हूँ और ये भी कि मुझे क्या बनना है? बस। अन्तर केवल इतना है। आप लोग भी यदि इस ज्ञान को अपने अन्दर विकसित कर लें तो आप अत्यन्त प्रगल्भ बन सकते हैं। आपकी महत्वाकांक्षाएं और इच्छाऐं समाप्त हो जाऐंगी। आपको क्रोध नहीं आएगा और आपमें लालच भी नहीं रहेगा। इस प्रकार ये सारे दुर्गुण आपसे छूट जाएंगे।

सर्वप्रथम हमें ये जानना होगा कि हमारा आधार क्या है? सबसे महत्वपूर्ण आधार ये हैं कि हम विशेष देश में जन्में हैं और इसके विषय में हमें चिन्ता होनी चाहिए। लोग कहते हैं कि मैं विप्लवी थी, आदि आदि। मैंने क्रान्ति की और जेल भी गई, परन्तु ये सब अपने देश की स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए किया। ये भिन्न चीजें हैं। परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् क्या होना चाहिए था? हमें लोगों को महसूस करवाना चाहिए था कि वे क्या है? केवल भारत में ही नहीं सभी देशों में इस शक्ति को समझना चाहिए कि उसके देश की क्या आवश्यकता है? सुधारने के लिए, सहायता करने के लिए, उन्नत करने के लिए व परिवर्तित करने के लिए उन्हें क्या करना है? मैंने कभी किसी से नहीं कहा कि अपना नाम बदलो। आपने भारतीय नाम मांगे हैं, ठीक है। मुख्य बात तो ये है कि आपके मन में अपने देशवासियों की चिन्ता होनी चाहिए। आपको इतना शक्तिशाली बनाया गया है। आपकी कुण्डलिनी उस अवस्था तक पहुँच गई है जहाँ आप बहुत कुछ कर सकते हैं। मैं जानती हूँ कि आपमें से कुछ लोगों ने बहुत कार्य किया है और इसे कार्यान्वित किया

है, परन्तु अभी भी आप सबको यह कार्य करना होगा। मैं केवल इतना कहूँगी कि 78वें जन्मदिवस पर भी मैं वही की वही हूँ, मुझमें बहुत परिवर्तन नहीं हुआ, क्योंकि अपने अन्दर मुझे लगता है कि मुझे लोगों को बताना है कि वे क्या हैं? मुझे उन्हें बताना है कि वे क्या प्राप्त कर सकते हैं और इसलिए मुझे इस प्रकार चलना है कि वे देख सकें कि स्वयं का ज्ञान प्राप्त करने से अधिक महत्वपूर्ण कुछ नहीं हैं।

आप चाहे अमीर हों या गरीब, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। स्वयं को जानना ही महत्वपूर्ण है। मैं हैरान हूँ कि इस विषय पर अभी तक बहुत कम लिखा गया है। परन्तु लाओत्से लिखित 'ताओ'– आपने वो पुस्तक पढ़ी है या नहीं, बहुत अच्छी है। ताओ का अर्थ है 'आप क्या हैं' और इसका वर्णन उन्होंने बहुत अच्छी तरह से किया है कि जब आप वह बन जाते हैं तो क्या होता है। कमी सिर्फ इतनी थी कि उस अवस्था को किस प्रकार प्राप्त किया जाए। ये नहीं लिखा था कि उस अवस्था तक कैसे पहुँचा जाए। उन्होंने सिर्फ उन लोगों का वर्णन किया जो ताओ थे, जो आत्मसाक्षात्कारी थे, जो उच्चस्तर के थे। मैं हैरान थी कि लाओत्से ने कुण्डलिनी के विषय में कुछ नहीं कहा परन्तु उन्होंने येंसी नदी के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि यह येंसी नदी है। कुण्डलिनी के विषय में बताने का यह उनका प्रतीकात्मक तरीका था। वे कवि थे। अन्ततः सागर तक पहुँच कर यह नदी सागर बन जाती है। सागर के क्या गुण हैं, इसका वर्णन उन्होंने बहुत सुन्दरता पूर्वक किया है। अब मान लो आप सब लोग सागर बन गए हैं, अब क्या आप सागर की तरह से आचरण कर रहे है? क्या आपको सागर सम अपने क्षेम का ज्ञान है? सागर क्या है?

समुद्र को देखें इसकी अपनी सीमाऐं हैं, मर्यादाएं हैं, जिन्हें ये कभी नहीं लांघता। एक तरफ से यदि आप इसे धकेलें तो ये दूसरी तरफ को बाहर निकल जाएगा। अतः आपको अपनी मर्यादाओं में रहना चाहिए। अपने सन्तुलन में रहना चाहिए। अपने सन्तुलन में रहना बहुत महत्वपूर्ण है। बहुत से लोग जिन्होंने धूम्रपान करना बन्द कर दिया था फिर से धूम्रपान करे लगे हैं, जिन लोगों ने शराब पीनी छोड़ दी थी वो फिर शराब पीने लगे हैं। इसका अर्थ ये है कि आप लोगों ने मर्यादाऐं त्याग दी हैं। इन मर्यादाओं का ध्यान रखा जाना आवश्यक है। स्वयं को देखें। स्वयं को यदि आप देखेते रहेंगे तो जान जाएंगे कि आप क्या हैं। अवश्य अपना अवलोकन करें। स्वयं से कहें, "हाँजी, श्रीमान जी, अब क्या इरादा है?" तब आप अपने मस्तिष्क की कार्य शैली को जान जाएंगे। ऐसा करने से परमेश्वरी के प्रेम का सागर बहने लगेगा। सम्भवतः हम नहीं जानते कि सागर पृथ्वी में सबसे नीचा होता है। सारी ऊँचाईयों का माप हम समुद्र के स्तर से करते हैं। समुद्र यदि शून्य बिन्दू पर है तो हिमालय की ऊँचाई कितनी है? अतः समुद्र सबसे निचले स्तर पर रहता है और यही कारण है कि सारा पानी, नदियों या वर्षा से आने वाला, सभी कुछ उसमें समा जाता है। सूर्य की चिलचिलाती धूप में फिर यह अपने शरीर को जलाता है क्योंकि यह खुला होता है। स्वयं को जलाकर यह बादलों का सृजन करता है जिसके कारण पूरा चक्र चलता है।

बादल जाकर लोगों पर वर्षा करते हैं। पुनः नदियों का रूप धारण करके ये जल समुद्र में वापिस आ जाता है। समुद्र के निम्नतम स्तर पर होने के कारण हर चीज़ को इसमें आना पड़ता है।

अतः पूर्ण विश्वास के साथ आप अपने निम्नतम बिन्दु पर बने रहें, निम्नतम बिन्दु पर। स्वयं की तुलना किसी ऐसे व्यक्ति से न करें जो जीवन में बहुत उन्नति आदि कर रहा है। आप देखें कि आप निम्नतम बिन्दु पर हैं। निम्नतम बिन्दु पर आप खड़े हुए हैं और आप हैरान होंगे की सभी कुछ बहकर आपके पास आ जाएगा! हर चीज बहकर आपकी ओर आना चाहेगी। स्वयं को पहचानना ही मुख्य बात है, इसका अर्थ ये है कि आप ये जानते हैं कि आप उच्चतम हैं। आप उच्चतम इसलिए हैं क्योंकि आप निम्नतम बिन्दु पर खड़े हुए हैं।

ये बात सत्य है कि गरीबों के लिए मेरे हृदय में अथाह प्रेम है। ये भी सत्य है कि मुझमें उनके लिए कुछ करने की तीव्र इच्छा थी और इसी कारण से हमने भारत में सोलह परियोजनाऐं चालू की हैं। ये सारा कार्य केवल इसलिए हुआ कि मैं स्वयं को रोक न सकी। लोगों को सभी प्रकार के दुख और तकलीफे हैं। उड़ीसा के लिए मैंने बहुत प्रार्थना की क्योंकि वहां पर लोग कष्ट में हैं। हमें इसका कारण खोजना चाहिए कि वहां इतना कष्ट क्यों है? क्या समस्या है? मैं बताती हूँ कि उड़ीसा अत्यन्त महान राज्य है। मैं वहां गई भी हूँ। वहां पर अभी भी लोगों में आत्मविश्वास का पूर्ण अभाव है। वहां के लोग यदि सहजयोग अपना लें तो न तो उस राज्य में बाढ़ आ सकती है न ही कोई समस्याऐं हो सकती हैं। हमारे देश में, आपके देश में और सभी देशों में ऐसा ही है।

सर्वप्रथम हमें बहुत अधिक सहजयोगी बनाने पड़ेंगे और सहजयोगी भी ऐसे हों जिन्हें इस बात का ज्ञान हो कि वो सहजयोगी हैं। लोगों को इस विषय में पूर्ण विश्वस्त होना चाहिए कि आखिरकार आप सहजयोगी हैं। क्यों नहीं मैं जो कार्य कर सकती हूँ आप सब भी वह कर सकते हैं? क्यों नहीं? आप सब मेरे बच्चे हैं। आप ये सब कर सकते हैं। परन्तु आप में विश्वास होना चाहिए कि जैसे हमारी माँ हैं, बिना अहंग्रस्त हुए, हम भी वैसे ही बन सकते हैं। मैंने प्रायः देखा है कि लोग अहम् से बहुत डरते है। इसमें अहम् बिल्कुल भी नहीं है क्योंकि आप तो समुद्र सम हैं और जैसा मैंने कहा समुद्र निम्नतम बिन्दु पर खड़ा है। यह भी इसी प्रकार कार्यान्वित होता है। पूरे विश्व को प्रेम करना कितना सुन्दर है! अपनी करुणा, अपनी उदारता का आनन्द लेना अत्यन्त सुन्दर है। किसी भी अन्य चीज से अधिक मैं अपनी उदारता का आनन्द लेती हूँ। परन्तु उस उदारता में मैं जानती हूँ कि मैं कुछ नहीं कर रही। यह तो केवल मेरे आनन्द विवेक की अभिव्यक्ति होती है। फूलों को देखकर मैं बहुत प्रसन्न होती हूँ। इसी प्रकार किसी को कुछ देकर मुझे बहुत आनन्द मिलता है। यह आनन्द है, आनन्ददायी गुण। और सभी आनन्द–प्रदायक गुण आपके अन्दर विद्यमान हैं, आप उन्हें खोज सकते हैं। आपमें शन्ति प्रदायी गुण भी है। आपमें अनन्त शान्ति है। और यदि ये शान्ति आपमे स्थापित हो गई तो इसे

आप वातावरण में, लोगों में और सभी चीजों में प्रसारित कर सकते हैं। परन्तु यदि आपमें क्रोध और गुस्सा आदि है तो ये कार्यान्वित नहीं होगी। तो आप को चाहिए कि स्वयं को देखें, अपना अवलोकन करें, ध्यान धारणा करें और खोज निकालें कि मुझमें क्या कमी है? यह इतनी महान शक्ति है और मैं सोचती हूँ कि ये मेरे सम्मुख बैठी हुई है। ये विश्व के सभी मिथकों को निर्मूल सिद्ध कर देगी। मैं ये बात जानती हूँ। परन्तु मैं ये नहीं जानती कि किस प्रकार उनमें ये चिंगारी भड़काई जाए, क्या किया जाए और कैसे लोगों को बताया जाए?

अब मैं बार–बार आपको बता रही हूँ कि इस जन्मदिवस पर यदि आप वास्तव में मुझे कुछ देना चाहते हैं तो मुझे इतना भर दे दें कि आप अपना विश्वास दर्शाएं और इसे कार्यान्वित करें। आप जो भी हैं, आपको वातावरण को या किसी अन्य चीज़ को बदलने की कोई आवश्यकता नहीं है। जहां भी आप हैं, ईमानदारी से, निष्ठापूर्वक और विनम्र स्वभाव से वास्तव में बहुत सा कार्य कर सकते हैं। हर देश में और पूरे विश्व में आप यह कार्य कर सकते हैं यह मेरी सबसे बड़ी इच्छा है। मैं सोचती हूँ कि मैं इच्छा विहीन व्यक्ति हूँ। आप लोग मेरी सूक्ष्म इच्छा को फलीभूत करेंगे कि हमें पूरे विश्व को परिवर्तित करना चाहिए।

परमात्मा आपको धन्य करें।

श्री महादेव पूजा

25 फरवरी 2001, पुणे

आज हम यहाँ महाशिवरात्रि मनाने के लिए आए हुए हैं। श्री महादेव के विषय में समझना हम सबके लिए महान सौभाग्य की बात हैं। आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करने से पूर्व आप श्री महादेव के महान व्यक्तित्व, महान चरित्र एवं महान शक्ति के विषय में नहीं जान सकते। बिना विनम्र हुए उनकी महानता की गहनता तक पहुँच पाना या उसे समझ पाना सुगम नहीं है। श्री महादेव के चरण कमलों तक पहुँचने के लिए हमें अत्यन्त विनम्र होना होगा। आपने अनुभव किया है कि इस महान व्यक्तित्व (देवता) के चरण कमलों तक पहुँचने के लिए व्यक्ति को सहस्रार से भी ऊपर जाना पड़ता है। वे हमसे बहुत ऊपर हैं, हमारी परिकल्पना (Conception) बुद्धि की पहुँच से भी बहुत ऊँचे हैं। परन्तु आत्मा के रूप में उनका निवास हमारे हृदय में है और जब हमें आत्म–साक्षात्कार प्राप्त होता है तो वे हममें बहुत स्पष्ट प्रतिबिम्बित होते हैं। फिर भी व्यक्ति को उनकी शक्तियों को समझना आवश्यक है। थोड़े से शब्दों में इस महान देवता का वर्णन कर पाना सुगम नहीं है।

उनकी प्रथम शक्ति 'क्षमा' है। वे क्षमा करते हैं। एक सीमा तक हमारे अपराधों को, हमारी विध्वंसक गतिविधियों को और अन्य लोगों के लिए समस्याएं उत्पन्न करने वाले मस्तिष्क को वे क्षमा करते हैं। परन्तु विध्वंस उनकी महानतम शक्ति है। उनका प्रकोप अचानक आ जाता है क्योंकि वे पंचतत्वों के स्वामी हैं। वे सभी तत्वों के शासक हैं। वे पृथ्वी माँ के शासक हैं तथा अन्य तत्वों पर भी उनकी कारणात्मकता के प्रभाव के माध्यम से वे शासन करते हैं। वे शासक हैं और जिस चीज़ में भी उन्हें कोई गड़बड़ दिखाई देती हैं वे उसे नष्ट कर सकते हैं। मैं आपको बतानां चाहती हूँ कि भूकम्प प्रबन्धन कार्य उन्हीं का है मेरा नहीं। विनाश कार्यों में मेरी कोई भूमिका नहीं है। वे ही देखते हैं कि पृथ्वी पर क्या हो रहा है और मानव के साथ क्या घटित हो रहा है। मैं आपको गुजरात का उदाहरण दूंगी। सभी चीज़ों के बावजूद गुजरात के लोग अत्यन्त धन लोलुप हैं। हर समय वे शेयर बाज़ार के बारे में चिंतित रहते हैं। हर समय पैसा, पैसा, पैसा, पैसा, पैसा। विदेशों में होते हुए

भी वे अत्यन्त धन लोलुप हैं। कभी–कभी तो मुझे आश्चर्य होता है कि उनसे सहजयोग की बात करना असम्भव है। बनावटी चीज़ें, तथाकथित कुगुरु आदि लोग उन्हें पसन्द हैं। मैं नहीं जानती कि उनमें ये दुर्गुण कहाँ से आया। खैर जो भी हो। गुजरात में भावनगर नामक एक शहर है। भावनगर के लोग मेरे पास आए और चैतन्यित करवाने के लिए पादुका साथ लेकर आए। मैं हैरान थी। मुझे प्रसन्नता हुई कि कम से कम कुछ लोग तो सहजयोग के विषय में सोच रहे हैं। उन्होंने भावनगर में तथा बड़ौदा में भी पूजा तथा हवन किया। इन दोनों स्थानों को भूकम्प ने छुआ तक नहीं–छुआ तक नहीं। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? सूरत, जो कि बहुत दूर है, का तहस–नहस हो गया। वहाँ पर बहुत कम सहजयोगी हैं। सभी की रक्षा हुई और उनके घरों को भी कोई हानि नहीं पहुँची। सर्वशक्तिमान परमात्मा के कोप से भी आपकी माँ सुरक्षा प्रदान करती हैं। व्यक्ति को ये बात भली–भांति समझ लेनी चाहिए कि सभी पंच–तत्वों पर उनकी सत्ता है। मैं फ्रांस गई। वहाँ पर कुछ लोगों ने मुझे सताने का प्रयत्न किया तथा सारे समाचार पत्र मेरे पीछे पड़ गए। दूरदर्शन में तथा सर्वत्र वे मेरे विरुद्ध उल्टी–सीधी बातें कर रहे थे। मैं जानती थी कि कोई देवी प्रकोप आने वाला है। अचानक समुद्र से एक भयानक तूफान उठा। अचानक, कोई नहीं जानता कि ये कहाँ से आया, और इसमें दो समुद्री जहाज पूरी तरह से डूब गए तथा जो लोग इसे बचाने के लिए गए उन्हें कैंसर रोग हो गया! ये तूफान पूरी शक्ति से आगे बढ़ने लगा और वहाँ के सभी गिरिजाघरों के शिखर नष्ट कर डाले। बहुत से पादरियों के घर उजड़ गए। तूफान आगे बढ़ता हुआ एक स्थान पर पहुँचा जहाँ मैंने एक बहुत बड़ा किला खरीदा था। इस किले के किनारे पर पहुँचते ही तूफान रुक गया।

मैं आपको बताना चाहूंगी यह मेरा कार्य नहीं है। परन्तु श्री महादेव तो ऐसा ही करते हैं। यद्यपि वे अत्यन्त क्षमाशील हैं, अत्यन्त करुणामय हैं, अत्यन्त आनन्द दाता हैं, फिर भी आपको उनकी शक्तियों के प्रति सावधान रहना चाहिए। उनकी सारी शक्तियाँ मेरी सृष्टि की रक्षा करने के लिए उपयोग होती हैं। इसके लिए वे किसी भी सीमा तक चले जाते हैं और दर्शाते हैं कि आध्यात्मिकता के कार्य में बाधा नहीं डालनी चाहिए। आध्यात्मिकता सच्ची होनी चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए जैसे कोई कुगुरु आकर जादुई करतब दिखाए या बहुत पुरानी कहानियाँ सुनाए। **आपमें यदि सच्ची आध्यात्मिकता है तो सदैव आपको सुरक्षा प्राप्त होगी और श्री शिव आपको आशीष प्रदान करेंगे।** वे महान कृपा–सिन्धु हैं और आपको इतने वरदान दे सकते हैं जिनकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। वे अत्यन्त क्षमाशील हैं। कहना चाहिए कि वे क्षमा के स्रोत हैं। आपके हृदय में यदि क्षमा हो तभी वे आपके हृदय में निवास करते हैं। **क्षमाशीलता के बिना आपमें अत्यन्त असाध्य रोग विकसित होने लगते हैं।** आप यदि क्षमाशील नहीं हैं तो आपका हृदय बहुत तेजी से चलता है कोई इसे छू नहीं सकता। आपको हृदयाघात नहीं हो सकता, परन्तु यदि आप अवांछित

रूप से सहिष्णु हैं और परमात्मा को भुलाकर कर्त्ता भाव के कारण, अपने किए कुकर्मों का कष्ट भुगतते रहते है तो आपके हृदय का आकार बढ़ने लगता है (Enlargement of Heart)। तो एक पक्ष ये है कि आपका हृदय अत्यन्त आक्रामक होकर हिटलर के हृदय की तरह से हो जाता है। किसी भी बहाने से यदि आप किसी को कष्ट देने लगते हैं तो आपका हृदय कठोर हो जाता है और तब आपको जानलेवा हृदयाघात हो सकता है तथा सभी प्रकार के कष्ट हो सकते हैं। यह बात अटल हैं। परन्तु मान लो कि आप अवांछित रूप से सहिष्णु हैं और सभी ज्यादतियों को सहते चले जाते हैं, दब्बू हैं, डरपोक हैं, तो अपने डरपोक पने के कारण आपको एक अन्य प्रकार का हृदयरोग हो सकता है जिसे हृदयशूल कहते हैं। इसमें हृदय को बहुत कम रक्त की मात्रा पहुँचती है। आपमें दोष भाव (Sense of Guilt) पनप उठता है और आपका जीवन मध्यम दर्जे (Mediocre) का बनकर रह जाता है। स्वयं को अत्यन्त सहिष्णु मानने वाले लोगों के साथ यह कठिनाई होती है जो कि बहुत ही दयनीय है। **मेरा कहने का ये अभिप्राय है कि आध्यात्मिकता के कारण सहनशीलता तो ठीक है परन्तु किसी चीज़ के भय के कारण उत्पन्न हुई सहिष्णुता ठीक नहीं है। आप यदि सहजयोगी हैं तो किसी भी चीज़ से डरना आपका कार्य नहीं है।** भारत में लोग हर चीज़ से डर जाते हैं। किसी गिलहरी को देख लें तो डर जाते है, छिपकली को देख लें तो घबरा जाते हैं। कहने का अभिप्राय ये है कि वो हर चीज़ से डर जाते हैं। भारत की महिलाएं तो तिलचटों (Cockroaches) से भी डरती हैं। इस तरह का स्वभाव बिल्कुल मूर्खता पूर्ण है क्योंकि इस प्रकार के व्यक्ति को हृदय शूल की पूर्ण सम्भावना होती है। डरने की क्या बात है? आप यदि सहजयोगी या सहजयोगिनी हैं तो आपको किसी भी चीज़ से नहीं डरना। लोग चूहों से डरते हैं फिर बड़ी ही शेखी में ये बातें करते हैं। उनका हृदय दिनोंदिन दुर्बल हो रहा है। मैं ये भी कहूंगी कि भारतीय पुरुष इसके लिए जिम्मेदार हैं। क्योंकि वे महिलाओं से पिछलग्गुओं की तरह से व्यवहार करते हैं। मानों वे उन पर बोझ हों। मेरी समझ में नहीं आता कि वे उन्हें क्या बनाना चाहते हैं। उनका व्यवहार इतना बुरा है कि इस पर विश्वास नहीं किया जा सकता। उत्तरी भारत में तो मैंने विशेष रूप से देखा है कि महिलाओं को महत्व नहीं दिया जाता। महिला को घर में लाकर नौकरानी की तरह से रखा जाता है। हर समय उसे घूँघट में रहना होता है। बिना इजाज़त के वो कहीं बाहर नहीं जा सकती, कितनी भयानक बात है? कुछ लोग कहते हैं कि ये सब मुसलमानों के प्रभाव के कारण हुआ।

आप जब शाश्वत, आध्यात्मिक जीवन में विश्वास करते हैं तो आपको इस प्रकार के मूर्खतापूर्ण नियमों के अनुसार नहीं चलना चाहिए। यही कारण है कि मुझे लगता है कि भारत में महिलाओं का उद्धार होना आवश्यक है। वे बहुत अच्छी हैं, अत्यन्त सहिष्णु हैं, बहुत मधुर हैं फिर भी उन्हें बड़ी–बड़ी भयानक बीमारियाँ, सभी प्रकार के मानसिक रोग हो जाते हैं क्योंकि वे अपना मूल्य नहीं जानतीं, अपने आत्म सम्मान

को नहीं जानतीं। इस विषय पर मैं पहले भी विस्तार पूर्वक बता चुकी हूँ। पुरूषों को इस प्रकार व्यवहार क्यों करना चाहिए? मेरे विचार से हमारे देश में 70 प्रतिशत महिलाएं हैं और उत्तरी भारत में इस 70 प्रतिशत जनसंख्या की शक्ति बरबाद हो रही है। मेरी समझ में नहीं आता वो स्वयं को समझते क्या हैं? महिलाओं को दण्डित किया जाता है। ऐसे देश कभी वैभव सम्पन्न नहीं हो सकते क्योंकि महिलाएं लक्ष्मियाँ होती हैं। परन्तु उन्हें भी लक्ष्मी सम होना होगा। लक्ष्मी जी की तरह से आचरण करना होगा। उनमें से कुछ महिलाएं ऐसी होती हैं कि आपको सदमा लगता है। वे कैसे महिलाएं हो सकती हैं? वे तो राक्षसियों की तरह से दिखाई देती हैं। समाज के अन्दर के इस प्रकार के असन्तुलन को श्री महादेव दण्डित करते हैं। वे अत्यन्त करुणामय हैं और दीन–दुखियों की देखभाल करते हैं। सताने वाले लोगों को वे दण्ड देते हैं। आक्रामक लोगों को नष्ट करना और सताए गए लोगों की सहायता करना उनका एक गुण है। वे कुण्डलिनी की बात नहीं करते, वे आत्मसाक्षात्कार की बात नहीं करते। वे तो इतनी कठोरतापूर्वक दण्ड देते हैं कि व्यक्ति स्तब्ध रह जाता है। कभी–कभी वो लोगों को घोर कष्टों से मुक्त करते हैं। ये लोग अपनी आयु से पूर्व ही मृत्यु को प्राप्त होते हैं। इन सारी चीजों का व्यक्ति को उचित रूप से अवलोकन करना चाहिए। निःसन्देह श्री महादेव रक्षा करने के लिए हैं परन्तु उससे भी कहीं अधिक वो नष्ट करने के लिए हैं। वे सभी पशुपक्षियों और प्रकृति की रक्षा करते हैं। वे ही पूर्ण आनन्द, आध्यात्मिकता का पूर्ण आनन्द प्रदान करते है परन्तु यदि व्यक्ति आक्रामक बनने का प्रयत्न करेगा तो वे उसे नष्ट भी कर देंगे। कभी–कभी वे फाँसी लगाने के लिए व्यक्ति को लम्बी रस्सी दे देते हैं और लोग सोचते हैं कि हम ठीक हैं, हमने श्री महादेव को प्रसन्न कर दिया है!

इसके विपरीत, मैंने देखा है, पश्चिमी देशों में महिलाएं पुरुषों पर बहुत हावी हैं। अत्यन्त आश्चर्य की बात है! मैं नहीं समझ पाती कि उन्होंने किस प्रकार स्थिति को सम्भाला, परन्तु हर समय वे पुरुषों पर हावी रहती हैं और पुरुषों को उनके अंगूठे के नीचे दबा रहना पड़ता है। मैं नहीं जानती कि वे ऐसा किस प्रकार कर पाई, परन्तु उन्होंने ऐसा किया! वे न तो विनम्र हैं और न ही प्रेममय। एक के बाद एक पति को वो तलाक देती चली जाती हैं। प्रेम का उनमें पूर्ण अभाव है। वे नहीं जानती कि प्रेम होता क्या है? परन्तु भारत में मैंने देखा है कि पुरुषों को प्रेम का ज्ञान नहीं है। वे अपनी पत्नियों, अपनी जीवन संगिनियों से प्रेम करना नहीं जानते। वे नहीं जानते कि उनका सम्मान किस प्रकार किया जाना चाहिए। परिणामस्वरूप महादेव का प्रकोप आता है और नाना विध भयंकर रोगों का सृजन करता है तथा ऐसे पुरुषों के लिए समस्याएं खड़ी कर देता है। विनम्र लोगों के विरुद्ध भिन्न प्रकार के अत्याचार करने के लिए भी समाज ही उत्तरदायी है।

दोनों ही प्रकार से व्यक्ति को समझना चाहिए कि यदि वह आक्रामक है तो श्री महादेव की तीसरी आँख उस पर है। आप यदि अपने नौकर के प्रति क्रूर हैं या किसी

अधीनस्थ के प्रति आक्रामक हैं, या अपने बच्चों के प्रति आक्रामक हैं तो याद रखना चाहिए कि प्रलयंकर महादेव आपको देख रहे हैं और उनका प्रकोप आप पर पड़ सकता हैं। वे मानव को अत्यन्त सुन्दर एवं श्रेष्ठ बनाते हैं और चाहते हैं कि लोग परस्पर प्रेम करें। मानव में परस्पर प्रेम हो। अन्य लोगों के प्रति आपके आचरण को वे अत्यन्त मधुर एवं कोमल बनाते हैं। आपके व्यवहार में यदि कोमलता एवं माधुर्य का अभाव है तो आप गलत दिशा में जा रहे हैं।

उनका महानतम गुण ये है कि वे आपको ऊँचाई एवं गहनता प्रदान करते हैं। **आप यदि उनकी पूजा करते है तो आप उस बुलन्दी तक पहुँच जाते हैं जहाँ से संसार को साक्षी रूप में देखते हैं।** साक्षी स्वरूप में साक्षी होकर वे पूरे विश्व को देखते हैं। यही कारण है कि वे 'ज्ञान' हैं। वे 'शुद्ध विद्या' हैं। चाहे आपको आत्मसाक्षात्कार मिल जाए, चाहे आप अपने हाथों पर दिव्य शीतल लहरियाँ महसूस कर लें, परन्तु क्या आपके पास ज्ञान है? मुझे आपको ये बताना पड़ता है कि कौन सी उंगली का अर्थ क्या हैं? कौन से हाथ का अर्थ क्या है? दिव्य चैतन्य लहरियों का अर्थ क्या है? मैं आपको बताना चाहूंगी कि श्री महादेव ही वह ज्ञान हैं, वे ही शुद्ध विद्या हैं, उच्चतम स्तर के पूर्ण ज्ञान। वही ज्ञान के स्रोत हैं। **जो लोग विनम्र नहीं हैं उन्हें शुद्ध विद्या प्राप्त नहीं हो सकती, जो अहंकारी हैं अन्य लोगों से कोमलता, मधुरता एवं सुन्दरतापूर्वक आचरण नहीं करते उन्हें श्री महादेव का आशीर्वाद प्राप्त नहीं हो सकता। जीवन में वो कोई उपलब्धि प्राप्त नहीं कर सकते।**

जीवन में हमें क्या प्राप्त करना है पद, वैभव तथा भौतिक पदार्थ नहीं। आपको तो प्रेममय हृदय प्राप्त करना है, एक ऐसा हृदय जिससे आप प्रेम कर सकते हों। आपके हृदय में यदि श्री शिव का निवास है तो आप सभी से अत्यन्त सुन्दरता पूर्वक प्रेम कर सकेंगे। प्रेम के विषय में आपके मन में मूर्खतापूर्ण विचार नहीं होंगे, केवल पावन प्रेम होगा। सभी लोगों के लिए शुद्ध प्रेम का होना एक वरदान है। इस अवस्था में व्यक्ति की सारी कठोरता समाप्त हो जाती है। उदाहरण के रूप में आपके पास यदि थोड़ी सी भी शक्ति है तो आप उसका दुरुपयोग करने लगते हैं। श्री शिव को देखें। उनमें असंख्य शक्तियां हैं। इन शक्तियों का यदि वे दुरुपयोग करने लगें तो पृथ्वी पर घास का एक पत्ता भी शेष न बचेगा। हम कितने पापी और स्वार्थी हैं वे सब जानते हैं। फिर भी वे हमें अवसर प्रदान करते हैं कि किसी प्रकार हम सुधर जाएं। वे अत्यन्त उदार हैं, अत्यन्त उदार। वे अत्यन्त क्षमाशील हैं और अत्यन्त उदार। मान लो रेगिस्तान में रहने वाले लोग बहुत अच्छे हैं और मरुस्थल में रहने के कारण कष्ट उठा रहे हैं तो वे उनके लिए मरुद्यान (Oasis) की सृष्टि कर देंगे। पृथ्वी माँ को भी वही नियंत्रित करते हैं। लोग यदि आध्यात्मिक हैं और उनकी पूजा करते हैं तो उन्हें प्रसन्न करने के लिए वे सभी कुछ कर सकते हैं। परन्तु मानव इतना मूर्ख है कि परमात्मा के नाम पर लड़े चले जाता है। दक्षिण में दो प्रकार के लोग है–एक जो शिव को पूजते है, दूसरे जो विष्णु के पुजारी हैं। क्या आप इस बात की कल्पना कर सकते हैं कि श्री विष्णु श्री शिव की पूजा किया करते थे? न

कोई ऊँचा है न कोई नीचा। ये बात महत्वपूर्ण है। परन्तु लोग इसी बात को लेकर लड़ते रहते हैं कि वे शिव के पुजारी हैं या विष्णु के। वे सत्य के समीप भी नहीं पहुँचे। सत्य को वो जान ही नहीं पाए। लड़ते ही रहे, लड़ते ही रहे। **परमात्मा के नाम पर लड़ने वाले लोगों पर शिव का प्रकोप होता है और अपने त्रिशूल से वे उन पर वार करते हैं।**

परमात्मा के नाम पर आपको लड़ना नहीं है, प्रेम करना है और समझना है। परमात्मा के नाम पर लड़ाई झगड़ा मूर्खता है। केवल इतना ही नहीं, ये बहुत भयानक भी है। ऐसा करने वाले सभी लोग नष्ट हो जाएंगे। यह आत्मघातक है। ऐसे लोग पूर्णतः नष्ट हो जाएंगे। परमात्मा के नाम पर आपको केवल प्रेम करना है। मूर्खता को सहन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। आपको लोगों से प्रेम करना है और अपने प्रेम का प्रसार करना है। शनैः–शनैः ये प्रेम पूरे विश्व में पहुँच जाएगा और मैं देख सकती हूँ कि मेरा स्वप्न साकार हो जाएगा। परन्तु यदि आपसी लड़ाई, घृणा, सभी प्रकार की आक्रामकता है तो ये सारी चीज़ें शिव विरोधी है। ऐसे लोग नष्ट हो जाएंगे। उनका मैं क्या करूंगी? वे यदि नष्ट हो गए तो मैं क्या कर सकती हूँ? वे यदि धन लोलुप हैं, बहुत अधिक भौतिकतावादी लोग हैं, तो वे प्रेम नहीं कर सकते। वे केवल धन के लिए ही किसी को प्रेम करते हैं। ऐसे सभी लोग नष्ट हो जाएंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

व्यक्ति को न केवल विनम्र होना चाहिए बल्कि उसे प्रेममय भी होना चाहिए। श्री शिव का आशीष प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को अत्यन्त प्रेममय होना आवश्यक है। ऐसा व्यक्ति चाहे बहुत अधिक चतुर चालाक न हो, चाहे बहुत अबोध हो और होना भी चाहिए क्योंकि जब आप किसी से प्रेम करते हैं तो उसकी सहायता करना चाहते हैं। मैंने स्वयं बहुत कष्ट उठाए हैं। मैंने लोगों की सहायता करने का प्रयत्न किया परन्तु उन्होंने मुझे धोखा दिया। तो क्या हुआ? ये उनका स्वभाव है, और वे नष्ट हो गए। मैं क्या कर सकती हूँ? मैंने तो उनसे नहीं कहा था कि मुझे धोखा दें, फिर भी उन्होंने मुझे धोखा दिया! मेरी समझ में नहीं आता क्यों? मैं तो अत्यन्त करुणामय एवं प्रेममय थी फिर भी उन्होंने मुझे धोखा दिया। ऐसा करने का परिणाम विनाश होता है, इसका मैं क्या कर सकती हूँ? मैं नहीं चाहती कि कोई नष्ट हो, मैं अपनी इस सृष्टि को प्रेम करती हूँ। परन्तु यदि वे विध्वंसक हों तो मेरे पास उनकी रक्षा करने का कोई रास्ता नहीं है। एक अन्य शक्ति है जो उन्हें नष्ट कर सकती है। कभी–कभी मैं बिल्कुल मजबूर होती हूँ। मैं नहीं जानती कि किस प्रकार मैं अपनी बात कहूँ, परन्तु व्यक्ति को समझना चाहिए कि सहजयोगी के रूप में श्री शिव के आशीर्वाद को प्राप्त करके आप अत्यन्त प्रेममय, उदार, अत्यन्त मधुर तथा बच्चों की तरह अबोध बन जाते हैं।

आपको अबोध बनना होगा। चतुर चालाक बनने की कोई आवश्यकता नहीं है। आप हैरान होंगे कि किस प्रकार आप की अबोधिता की रक्षा होती है! आप यदि अबोध हैं तो चिन्ता की

कोई बात नहीं हैं। एक अन्य शक्ति–श्री शिव की तीसरी आँख– आपकी देखभाल कर रही है। जहाँ भी आप जाते हैं ये आपके साथ होती है। इसका अर्थ ये नहीं है कि आप मूर्ख बन जाएं या व्यवहारिकता को त्याग दें। श्री शिव की शक्ति, उनका पथ प्रदर्शन, उनका प्रेम, उनकी करुणा, यह व्यवहारिक पक्ष संभाल लेती है। इसका अनुभव आप जीवन के हर कदम पर करेंगे। परन्तु सर्वप्रथम अपने कदमों (गतिविधियों) को देखें। क्या आप आक्रामक हैं? क्या आप कष्टकर हैं, आप कटु शब्द बोलते हैं या विनम्र हैं? क्या आप भद्र हैं। आप यदि करुणामय हैं तो श्री शिव बहुत प्रसन्न होते हैं। प्रकृति में उनका साम्राज्य है। वे और प्रकृति की चीज़ें अत्यन्त सुव्यवस्थित हैं और अत्यन्त सूझ–बूझ से एक दूसरे के साथ रहती हैं। उदाहरण के रूप में आप जंगल में जाते हैं और वहाँ यदि बिल्कुल सन्नाटा है, पक्षियों की चहचहाहट भी नहीं है तो आपको समझ जाना चाहिए कि वहाँ पर कोई शेर बैठा हुआ है। शेर क्योंकि राजा है, सभी अन्य प्राणी जानते हैं कि उन्हें उनकी आज्ञा में रहना है। और राजा के सम्मुख मर्यादा क्या है, स्वतः ही वे जान जाते हैं कि राजा के सम्मुख मर्यादा क्या है। शेर की उपस्थिति में कोई हिलता तक नहीं। शान से वह बैठता है। अपनी शान से वह बैठता है। एक सप्ताह या पन्द्रह दिनों के बाद वह एक पशु का शिकार करता है। उसे खाना खाना होता है। वह किसी एक पशु को मारता है तथा शेर तथा उसका परिवार सबसे पहले खाता है। शिकार करने के पश्चात् उसका रक्त रिसने तक वे प्रतीक्षा करते हैं और उसके बाद पूरा परिवार खाता है बाकी के पशु को वहीं छोड़ दिया जाता है। तत्पश्चात् सामर्थ्य अनुसार सभी पशु आते हैं और प्रसाद के रूप में इसे खाते हैं। सबसे बाद में कौए इस पशु को खाते हैं। इतना अनुशासन, मर्यादाओं की इतनी सूझ–बूझ! मैं हैरान हूँ कि किस प्रकार श्री शिव पशुओं को नियन्त्रित करते हैं! हम कभी नहीं सुनते कि पशुओं की हड़ताल है या उनका कोई माफ़िया है। ये कभी नहीं सुनने को मिलता कि पशु चोरी करते हैं। परन्तु आप कल्पना कीजिए कि पशु अवस्था से आने के पश्चात् भी मनुष्य उससे कहीं पतित है! **हमारे अन्दर यदि लड़ाई झगड़े का आचरण करने के मूर्ख विचार हैं तो किस प्रकार हमारा उत्थान होगा?** ज़रा–ज़रा सी बात पर लोग लड़ने लगते हैं। पशु भी परस्पर थोड़ा बहुत लड़ते हैं परन्तु वे दल बनाकर नहीं लड़ते। वे दल बनाकर नहीं लड़ते जिस प्रकार हम करते हैं। ज़रा सा मौका मिलते ही हम दल बना लेते हैं और लड़ने लगते हैं। पशु भी झुण्ड बनाते हैं परन्तु लड़ते नहीं। उनमें ऐसी क्या बात है? पशु हर चीज़ को बहुत अच्छी तरह से समझते हैं तो क्यों न हम भी प्रकृति के नियमों को समझें?

श्री महादेव इस बात को देखते हैं कि प्रकृति के सभी नियमों का पालन होना चाहिए। पृथ्वी माँ, आकाश तथा अन्य सभी तत्वों की देखभाल भी वही करते हैं। हमारे लिए वे छोटे–छोटे बहुत से सुन्दर कार्य करते हैं। ऋतु परिवर्तन के साथ वे सुन्दर फ़ूलों की सृष्टि करते हैं। सभी सुखकर,

आनन्ददायी चीज़ों की सृष्टि वे ही करते हैं और उनकी देखभाल भी वे ही करते हैं। प्रकृति की सभी सुन्दर चीज़ें वे हमें देते हैं और हमें प्रसन्न करने और अबोध बालक की तरह से हमारा मनोरंजन करने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु अपनी हेकड़ी में हर चीज़ के प्रति हमारी प्रतिक्रियाएं होती हैं। किसी कालीन को जब आप देखते हैं तो कहते हैं कि मुझे ये पसन्द नहीं है। पश्चिम में विशेष रूप से ऐसा कहना आम बात है कि 'यह मुझे पसन्द नहीं है'। किसी चीज़ को न पसन्द करने वाले आप कौन होते है? आप अपने आप को क्या समझते हैं? ये कहना कि 'मुझे पसन्द नहीं है या मुझे पसन्द है' अत्यन्त निर्लज्जता की बात है। यह असम्भव है। मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसे लोग कहाँ जाएंगे, उनका क्या होगा? किसी चीज़ की प्रशंसा करने, हर चीज़ का आनन्द लेने की अपेक्षा उसकी आलोचना और उसके प्रति प्रतिक्रिया क्यों करनी है? पाश्चात्य देशों में प्रतिक्रिया बहुत की जाती है। भारत में इतनी नहीं। सम्भवतः सांस्कृतिक भिन्नता के कारण। यहाँ पर भारत में यदि लोग ऐसा कहें तो उन्हें पागल समझा जाएगा।

अतः यह बात महत्वपूर्ण है कि किस प्रकार आप अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करें। यह कार्य अपनी पत्नी से आरम्भ करें। अपने बच्चों तथा अन्य लोगों तक इसे ले जाएं। कभी कभी हम इतने मूर्ख होते हैं कि सारे संसार को प्रेम करते हैं परन्तु अपनी पत्नियों को प्रेम नहीं कर सकते। भारत में विशेष रूप से ऐसा होता है। पश्चिम में भी, मैंने देखा है, लोग भय के कारण अपनी पत्नियों को प्रेम करते हैं। हो सकता है यह तलाक का भय हो। **प्रेम में भय नहीं होना चाहिए। प्रेम तो हृदय से होना चाहिए। बिना किसी भय के, बिना किसी आक्रामकता के पावन प्रेम का आनन्द लें।** परन्तु आज मनुष्यों में इसी का अभाव है। जिस दिन मनुष्य प्रेम के सौदर्न्य को समझ लेगा उस दिन हम पर स्वर्ग से पुष्पवर्षा होगी। वह दिन अत्यन्त महान होगा जब महादेव अपनी तीसरी आँख को बन्द कर लेंगे और उनके हृदय में पूर्ण शान्ति होगी। यह मेरा स्वप्न है। आप कितनी शान्ति से बातचीत कर सकते हैं, इस चीज़ को देखना आपका भविष्य है। कितनी मधुरता पूर्वक आप अन्य लोगों को प्रेम करते हैं, अन्य लोगों को कितना कुछ देते हैं? उदाहरण के रूप में यदि किसी अन्य को कुछ देना हो तो लोग बाज़ार जाकर सस्ती से सस्ती सड़ी हुई चीज़ ले आएंगे। ये कोई तरीका नहीं है। प्रेमपूर्वक कोई भी छोटा या बड़ा उपहार, जो भी आप किसी के लिए लाएं उससे आपका प्रेम झलके, आपकी धन शक्ति नहीं। आजकल भारत में भी आम बात है कि लोग अपने वैभव और अपनी वेशभूषा का प्रदर्शन करते हैं। किसलिए? मैंने ऐसे लोग देखे हैं जिनके मृत शरीर को उठाने के लिए चार लोग भी नहीं होते परन्तु अपने जीवन में वे स्वयं को बहुत बड़ी चीज़ मानते हैं। उस समय आपको देखना चाहिए कि उस व्यक्ति को प्रेम करने वाले उसकी फिक्र करने वाले कितने लोग हैं। हो सकता है कि परवरिश इसका कारण हो। हो सकता है कि उसे कभी प्रेम प्राप्त ही न हुआ हो। किसी भी चीज़ को आप दोष दे सकते हैं। परन्तु एक सहजयोगी

को ये समझ लेना अत्यन्त आवश्यक है कि प्रेम ही उसका जीवन है, प्रेम ही आध्यात्मिकता है और कुछ भी करने के लिए बिना कोई आशा किए प्रेम करिए। मैं जानती हूँ कि कुछ लोग गरीबों की सहायता आदि करने में बहुत आगे होते हैं। परन्तु इन सब कार्यों के पीछे प्रभुत्व की भावना होती है। वो सोचते हैं कि ओह, "हम महान हैं।" हम ये कार्य कर रहे हैं, हम वो कार्य कर रहे हैं! लेकिन यह सब वे अपने अहं की तुष्टि के लिए करते हैं, प्रेम के लिए नहीं। तो जब आप कार्य करते हैं तो आपको इस चीज़ की समझ होनी चाहिए कि यह अपनी आत्मा की तुष्टि के लिए है और प्रेम की तुष्टि के लिए आप यह कार्य कर रहे हैं, नाम या पद के लिए नहीं। आपका प्रेम यदि इस प्रकार से निर्लिप्त प्रेम है, विरक्त प्रेम है तो आपको किसी प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं। आपमें यह गुण है और आप इसका आनन्द ले रहे हैं।

मुझे खेद है कि मुझे अंग्रेजी भाषा में बोलना पड़ा। सम्भवतः कुछ ऐसे लोग भी यहाँ हों जो अंग्रेजी को नहीं समझते परन्तु आजकल अंग्रेजी का दबदबा है इसलिए हमें अंग्रेजी बोलनी पड़ती है। मैं कोई अन्य भाषा नहीं बोल सकती। परन्तु व्यक्ति को प्रेम की भाषा बोलनी चाहिए। पशुओं को देखें। घोड़ा, कुत्ता सभी पशु आपके प्रेम को समझते हैं। किस तरह वो आपको समझते हैं! किस तरह अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करते हैं! वे अत्यन्त मधुर हैं और ये गुण हमें उनसे सीखना है। अन्यथा मेरी समझ में नहीं आता कि किस प्रकार लोगों को प्रेम का मूल्य समझाया जाए? कृपया ध्यान रखें कि जिस प्रकार लोग हमारी आलोचना कर रहे हैं कि हम व्यवहारिक नहीं हैं, हमने बहुत सा धन नहीं कमाया, सत्ता नहीं प्राप्त की या अन्य चीज़े, तो यह सब महत्वहीन हैं। इस प्रकार के लोग तो बाज़ारों में बहुत बिक रहे हैं हम उनसे भिन्न हैं। हम मानव रत्न हैं और रत्नों की तरह से हा हमें चमकना हैं। अपने अन्दर से सारी बुराइयों को दूर करके स्वयं को तराशना है। जिस प्रकार रत्न को तराशने पर ही उसकी सुन्दरता की अभिव्यक्ति होती है। यदि मेरे अन्दर कोई इच्छा रही है तो वह केवल इतनी कि आप श्री महादेव के गुणों का अनुसरण करने का प्रयत्न करें। वे निर्लिप्त हैं, पूर्णतया निर्लिप्त। वे अस्थियाँ आदि धारण करते हैं, उन्हें चिन्ता नहीं होती कि वे कहाँ रहते हैं, किसके साथ रहते हैं, उनके पास क्या है? किसी चीज की भी उन्हें चिन्ता नहीं रहती। हमें भी उतना ही निर्लिप्त होना चाहिए। परन्तु उन्हीं की तरह से प्रेममय, अत्यन्त प्रेममय होना चाहिए। किस प्रकार उनका हृदय अन्य लोगों के लिए प्रेम से परिपूर्ण है? किस प्रकार वे हमारी देख रेख करते हैं? मैं आपको चेतावनी दे रही हूँ क्योंकि आप सब मुझसे बहुत प्रेम करते हैं। परन्तु आपको परस्पर भी प्रेम करना चाहिए। आपका प्रेममय हृदय होना चाहिए और अन्य लोगों को प्रेम करके आपको संतोष होना चाहिए। यह गुण आप अपने में विकसित कर सकें तो आपकी ऊँचाई बढ जाएगी। सहजयोग में आपकी गहनता बढ़ जाएगी। ठीक है कि देवी आपको श्रद्धा प्रदान करती हैं परन्तु श्रद्धा की गहनता को मैं नहीं जानती। आप क्या कहते हैं, मराठी में इसे ध्यास कहते हैं।

उस प्रेम की गहनता, उस प्रेम का आनन्द। तब आपको किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं होती। आपको क्या चाहिए? आपको सभी कुछ प्राप्त हो चुका है, अब आपको क्या चाहिए! महादेव की महानता की तरह से। वे इतने महान हैं कि अत्यन्त निर्लिप्त हैं, उन्हें किस चीज़ की आवश्यकता है? कहने का अभिप्राय है कि उनसे महान कुछ भी नहीं, उनसे महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं। तो उन्हें किस चीज़ की आवश्यकता है। उन्हें किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है और यही कारण है कि वे निर्लिप्त हैं। यही निर्लिप्तता आपको अपने अन्दर विकसित करनी है। परन्तु श्री महादेव सभी कलाओं, संगीत तथा ताल के स्वामी हैं। उस दिन आपने देखा कि ये लड़के ताल बजा रहे थे। हर चीज़ के ताल की सृष्टि श्री महादेव करते हैं।

तालबद्ध जीवन जो हमें प्राप्त है उसका अभी हमें ज्ञान नहीं है। आप देखें कि बच्चा नौ महीने और कुछ दिनों के पश्चात् जन्म लेता है। यह तालबद्धता किसकी देन है? भिन्न प्रकार के पुष्प अपने–अपने समय पर निकलते हैं। प्रकृति में भिन्न ऋतुएं आती हैं। इन सारी चीज़ों को कौन लयबद्ध करता है? वे स्वयं लय हैं और प्रकृति में तथा अन्य सभी चीज़ों में उसी लय को बनाए रखा जाता है। हर चीज़ में एक लय है। लयबद्ध व्यक्ति वही है जिसका हृदय बहुत विशाल है और जो सागर की तरह से है। किसी भी क्रूर तथा बुरे व्यक्ति को देखते ही आपके अन्दर ये ताल बिगड़ जाता है। एक शांत, सुन्दर झील में तरंगे नहीं होती केवल प्रेम होता है और जब यह लय, हृदय की ये शान्ति टूटती है तो श्री शिव स्थिति को अपने हाथ में ले लेते हैं। अतः व्यक्ति को समय की, प्रकृति की तथा अन्य सभी चीज़ों की लय का ज्ञान होना चाहिए। लोग फूलों के नाम तक नहीं जानते! वो नहीं जानते कि ये फूल कौन से हैं और कौन सी ऋतु में यह खिलते हैं! अपने जीवन की लय का भी उन्हें ज्ञान नहीं है! किसी को इन चीज़ों की चिन्ता नहीं है। चहुँ ओर यदि आप देखें तो ऋतुएं हैं तथा अन्य चीज़ें हैं। यह सब लयबद्ध हैं, जैसे ये तबला बजा रहा है या पखावज जिस पर ये सारी सुन्दर धुने बजा रहे हैं और सारी ऋतुएं परिवर्तित हो रही हैं। प्रकृति समृद्ध होती है, खिलती है और फिर उस पर उतार आ जाता है। यह बात हम नहीं देखते। हम केवल अपने तक ही सीमित रहते हैं। हम कहते हैं, "आप कैसे हैं?" श्री माताजी, "मुझे सिर दर्द है, मेरे पेट में गड़बड़ी है, मुझे ये तकलीफ है आदि–आदि। परन्तु दूसरा व्यक्ति कहेगा कि आह मैं बिल्कुल ठीक हूँ।" तो मामला क्या है? श्री माताजी इस विश्व को ठीक कर दीजिए, आप इस विश्व को ठीक क्यों नहीं करती? उसे अन्य लोगों की चिन्ता है अपनी नहीं। विश्व को प्रसन्न और सुन्दर बनाने के लिए व्यक्ति को क्या करना चाहिए? इसके लिए मनुष्य को कठिन परिश्रम करना होगा। उसे सोचना होगा कि संसार को सुन्दर बनाना क्या हमारा कर्त्तव्य नहीं है? क्या संसार को तालबद्ध करना हमारा कार्य नहीं है? इस प्रकार की ताल बद्धता जिसमें हमारी आत्मा का संगीत हो। ये हमारा कर्त्तव्य है, हमें ये कार्य करना होगा। **सहजयोग को केवल अपने लिए नहीं**

अन्य लोगों के लिए भी अपनाना होगा। हर समय केवल अपनी ही चिन्ता नहीं करनी होगी, अन्य लोगों की भी करनी होगी। ये प्रेम है जो नैसर्गिक है। जब यह प्रेम कार्य करता है तो चमत्कार कर देता है।

आज की शाम अत्यन्त सुन्दर है कि आज हम अपनी उत्क्रान्ति के इतने महान स्रोत की पूजा कर रहे हैं और मुझे आशा है कि आप लोग इस बात को समझेंगे कि कहाँ तक आप इस शक्ति के साथ हैं। कहाँ तक इससे ओत–प्रोत हैं। श्री शिव की यह लयबद्धता, आपको चैतन्य–लहरियाँ प्रदान करती है। चैतन्य लहरियाँ तरंगों के रूप में बहती हैं और ये तरंगे आपको पूर्णतः अपने में निमग्न कर लें और आप सब इनमें समा जाए। आपका अहं भाव (I-ness) इसमें विलय हो जाए। यही मेरा आशीर्वाद है।

आप सबका बहुत–बहुत धन्यवाद।

एकादश रुद्र पूजा

8 अक्टूबर 1988, विएना

आध्यात्मिकता के इतिहास में आज का दिन बहुत महत्वपूर्ण है। सभी पैगम्बरों ने एकादश रुद्र अवतरण की भविष्यवाणी की। उन्होंने कहा कि एकादश अवतार आएंगे और सारी आसुरी शक्तियों तथा सारी परमात्मा विरोधी गतिविधियों को नष्ट करेंगे। वास्तव में एकादश तत्व की रचना भवसागर में होती है क्योंकि जब अंतरिक्ष अपनी ध्यान धारणा के माध्यम से भ्रम सागर को पार करने के लिए तैयार होते हैं तो आसुरी शक्तियाँ उन्हें सताती हैं, कष्ट देती हैं, उनके मार्ग में बाधा डालती हैं तथा उनका वध करती हैं। ये नकारात्मक शक्तियाँ मानवीय असफलताओं के कारण पनपीं। मनुष्य जब असफल हुआ तो उसकी दृष्टि अपने से बेहतर लोगों पर पड़ी और उसे लगा कि वह तो उन मनुष्यों के मुकाबले कहीं भी नहीं है। कई बार क्रोध एवं ईर्ष्या के कारण उसमें दुष्ट स्वभाव जाग उठा जिसने भवसागर में परमात्मा विरोधी नकारात्मकता की सृष्टि की। इस प्रकार भवसागर में दुष्टता को आकार प्रदान किया गया। जैसा आप सहजयोग में देखते हैं, बहुत बार हमने ऐसा देखा होगा, जब आप किसी गलत गुरु या गलत व्यक्ति के पास जाते हैं या कोई अनाधिकार पूजा करते हैं तो आपका बायां भवसागर पकड़ता है। बाएं भवसागर में ये सारी विध्वंसक शक्तियां कार्य करती हैं। विकास प्रक्रिया में भी बहुत से पौधे, पशु आदि मध्य में न होने के कारण नष्ट हो गए, क्योंकि वे अत्यन्त अहंकारी और चालाक थे। कुछ बहुत बड़े थे, कुछ बहुत छोटे थे। उन सबको बाहर फेंक दिया गया और बाहर फेंक दिए जाने पर उन्हें लगा कि उन्हें अवश्य प्रतिकार करना चाहिए। ये सभी सामूहिक अवचेतना में चले गए और कलात्मक लोगों को हानि पहुँचाने के लिए सूक्ष्म रूप धारण करके आ गए जैसे आजकल विषाणु (Viruses) हम पर आक्रमण करते हैं। ये वो पौधे (तत्व) हैं जो संचरण से बाहर चले गए थे। कुछ समय पश्चात् हम देखेंगे कि तम्बाकू का परिसंचरण समाप्त हो जाएगा, बहुत से नशीले पदार्थों का परिसंचरण भी समाप्त हो जाएगा। ये सभी तत्व हमारे अन्दर एक प्रकार के क्रोध, विकास विरोधी एवं

स्वतन्त्रता विरोधी शक्तियों का रूप धारण कर सकते हैं।

अतः भवसागर क्षेत्र में इन सभी भयानक नकारात्मक शक्तियों का उद्भव हुआ। इसी प्रकार बहुत से मनुष्य जिन्होंने जन्म लिया और इसी प्रकार जन्म लेकर जिन मनुष्यों ने अपने अहंकार का बल दिखाने का प्रयत्न किया, जो अहंकार प्रणालियों में चले गए और सोचा कि वे अन्य लोगों को नियंत्रित कर सकते है तथा सभी मनुष्यों पर शासन कर सकते है, पूरे विश्व पर नियंत्रण स्थापित कर सकते है, ऐसे सभी लोग इतिहास में शक्तिशाली संस्थाएं बन गए। आज भी ऐसी बहुत सी शक्तियाँ पनप रही हैं। हर क्षण ये शक्तियाँ बन रही हैं और नष्ट हो रही हैं। हमारे भव सागर में ये बनती हैं और फिर नष्ट हो जाती हैं। ये लोग यदि दाईं ओर से (दाएं भवसागर से) पनपते हैं तो हम उन्हें परा चेतन (Supra Conscious) कहते हैं और जो बाईं ओर से आते हैं उन्हें अवचेतन तत्व कहते हैं। ये सभी तत्व जीवित रहते हैं क्योंकि मानव को परमात्मा के रूप में बनाया गया है। ये तत्व सर्वशक्तिमान परमात्मा के सामूहिक अवचेतन में तथा उनके पराचेतन में रहते हैं। ये शक्तियाँ तब तक रहती हैं जब तक ये नर्क में नहीं चली जातीं। इसी प्रकार मानव में भी ये शक्तियाँ विद्यमान रहती हैं और हम पर काबू पाने का प्रयत्न करती रहती हैं।

ये बहुत अच्छी बात है कि ये पूजा हम आस्ट्रिया में कर रहे हैं क्योंकि विश्व के भूगोल में यूरोप भवसागर है और आस्ट्रिया वह स्थान है जहाँ आसुरी शक्तियों का मुकाबला करने के लिए हमें नकारात्मकता विरोधी शक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिएं। इस पूजा के लिए यह स्थान अत्यन्त उपयुक्त है। मैं उन सब सहजयोगियों की धन्यवादी हूँ जिन्होंने एकादश रुद्र पूजा के लिए यह स्थान चुना। आधुनिक काल में, जैसा हम देखते है, ये सारी शक्तियाँ अत्यन्त सूक्ष्म रूप से कार्य कर रही हैं, ऐसे तरीके से जिसे मानव समझ नहीं सकते और इसमें फंसे रहते हैं। आप यदि देखें कि जिस प्रकार हमें व्यर्थ की चीज़ें लुभाती हैं या आकर्षित करती हैं, जिस प्रकार भयानक रोग हर कदम पर हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं, हमें लगता है कि हम उस दल दल के किनारे पर खड़े हैं जिसमें फँसने के बाद सम्भवतः हम कभी न निकल सकें, उससे कभी छुटकारा न पा सकें। अतः हमें समझना चाहिए कि हमारे अन्दर ऐसा क्या है जो प्रकृति के विकास विरोधी, उत्क्रान्ति विरोधी और सृजनात्मकता विरोधी स्वभाव को सदा के लिए नष्ट कर सके। प्रकृति में यदि आप देखें तो हर चीज़ नियमित रूप से प्रसारित होती है। उदाहरण के रूप में सर्दियों में पत्तों को झड़ना होता है क्योंकि पेड़–पौधों का पोषण करने के लिए उन पत्तों की नाइट्रोजन को पृथ्वी माँ में जाना होता है। इतना ही नहीं पृथ्वी माँ को सूर्य की किरणें भी मिलनी आवश्यक हैं, इसलिए पतझड़ होना आवश्यक है ताकि किरणें पृथ्वी माँ में प्रवेश करके इसका पोषण कर सकें। पोषण प्राप्त करके पेड़ पुनः हरे–भरे हो उठते हैं ताकि सूर्य का प्रकाश प्राप्त करके वे क्लोरोफिल (Chlorophyll) बना सकें। पृथ्वी माँ से जल चूसकर वे इसे वातावरण में वाष्पित करते हैं और वर्षा के

लिए उत्प्रेरक (Catalyst) का कार्य करते हैं। वर्षा ऋतु में वर्षा होती है, जल का पोषण प्राप्त करके पुनः पेड़ों के सारे पत्ते झड़ जाते हैं और इस प्रकार अत्यन्त सुन्दरता पूर्वक ये सारा चक्र चलता रहता है। इसमें कोई विपर्यय (Reversion) नहीं है, यह तो एक निरन्तर चक्र है जो सृजन और पुनः सृजन करने के लिए सुन्दर ढंग से चलता रहता है। परन्तु मानव के हस्तक्षेप से प्रकृति गड़बड़ा जाती है। प्रकृति को हम समृद्ध भी कर सकते हैं। आप प्राकृतिक तरीकों से प्रकृति को विनाश से बचा सकते हैं। परन्तु जब आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो जाता है तो अपनी चैतन्य लहरियों से आप उन सभी प्रकृतिक चीज़ों की रक्षा कर सकते हैं जो आधुनिकता के दुष्प्रभाव के कारण सड़ रही हैं।

अतः सर्वप्रथम हम आत्मसाक्षात्कार का प्रभाव देखते हैं कि किस प्रकार यह एकादश रुद्र के रूप में कार्य करता है। इस रूप में ये उन सारी आसुरी शक्तियों को नष्ट कर देता है जो प्रकृति को नष्ट करने में लगी हुई हैं। मुझे विश्वास है कि एक दिन आप सब ऐसी अवस्था तक उन्नत हो जाएंगे कि आपका एक कटाक्ष पेड़ों को हराभरा करने, फलों में मिठास भरने तथा फूलों को सुगन्धित करने के लिए काफी होगा। ऐसा होना सम्भव है क्योंकि हमारी उत्क्रान्ति के परिणाम निकल रहे हैं। शनैः शनैः यह परिणाम दर्शा रही है ताकि आप बौखला न जाएं, आपको आघात न पहुँचे, ताकि आप स्वयं देख सकें कि आप क्या हैं और क्या प्राप्त कर रहे हैं।

इस शक्ति को अपने अन्दर उन्नत होने देने के लिए सर्वप्रथम हमें अत्यन्त अन्तर्दर्शी होना चाहिए। ये देखने का प्रयत्न करना चाहिए कि हमारे साथ क्या घटित हो रहा है। अपनी गतिविधियों को देखना चाहिए। क्या हम उत्क्रान्ति की ओर बढ़ रहे हैं या विनाश की ओर? हम क्या कर रहे हैं? हमारे अन्तःस्थित एकादश रुद्र शक्ति इतनी शक्तिशाली है, इतनी शक्तिशाली है कि यह न केवल प्रकृति में बल्कि मानव में भी कार्य करती है। इस प्रकार से ये कार्य करती है कि आप स्तब्ध रह जाते हैं, आश्चर्य चकित हो जाते हैं। जिस सज्जन को मैंने आत्मसाक्षात्कार दिया है वह अत्यन्त समर्पित हैं परन्तु वह उस अवस्था में नहीं है जहाँ वह सहजयोग में आ सके। कुछ लोगों ने उसे बहुत कष्ट देने का प्रयत्न किया और उसने मुझे बताया कि वे सब दुर्घटना के शिकार हो गए और अस्पताल में पड़े हैं। मैंने कहा मैंने तो कुछ नहीं किया, अपने ही कारनामों से उन्होंने सारी सीमाएं लाँघीं और जब व्यक्ति अच्छाई की सीमाएं लाँघता है तो स्वाभाविक रूप से वह एक ऐसी अवस्था में पहुँच जाता है जिसे हम आसुरी अवस्था कहते हैं। इस स्थिति के खड्ड में यदि आप पड़ जाते हैं तो आपको कष्ट उठाना पड़ता है। इसका प्रभाव सहजयोगियों पर भी पड़ता है। मैं एक ऐसे सहजयोगी को भी जानती हूँ जिसने पैसों के मामले में गड़बड़ करने का प्रयत्न किया। मैने नहीं सोचा था कि उसे दण्ड मिलना चाहिए। मैंने ऐसा कभी नहीं सोचा था कि उसे दण्ड मिले। परन्तु उन शक्तियों ने कार्य किया। उसकी अपनी शक्तियों ने उसके विरुद्ध कार्य किया और वह इतना

बीमार हुआ, इतना अधिक बीमार हुआ कि मेरे सम्मुख वह सूखे पत्ते की तरह से कांपता था। मैंने उसे कभी नहीं बताया कि मैं उसके कारनामे जानती हूँ।

सहजयोग में, जब आप आते हैं तो, आपको जान लेना चाहिए कि शनैः शनैः परन्तु निरन्तर, आप एक सीधी खड़ी पगडंडी पर चढ़ रहे हैं। यह सब क्योंकि बहुत शीघ्रता से करना होता है इसलिए चढ़ाई बहुत खड़ी है और उस चढ़ाई को चढ़ते हुए आपको ध्यान रखना होगा कि यदि आप ऊपर को नहीं बढ़ते तो नीचे को फिसल जाएंगे और यदि किनारों की ओर जाएंगे तो आप खड्ड में गिर जाएंगे। आप कह सकते हैं कि श्री माताजी हम इधर उधर बढ़ रहे हैं। इसलिए आड़ोलन है। पतन के कारण भी व्यक्ति इस आड़ोलन (Movement) को महसूस कर सकता है। यह विनाश का आड़ोलन है। अतः आपको अपने विषय में आवश्यक विवेक होना चाहिए। हम उत्थान की ओर जा रहे हैं या पतन की ओर? क्या हम पथभ्रष्ट हो रहे हैं या हमारे कदम ऊँचाई की ओर बढ़ रहे है? कभी–कभी हमें महसूस नहीं होता कि ब्रह्माण्ड के इतिहास में हम विश्व की भयानकतम नकारात्मकता के बीच में हैं। प्राचीन काल में एक समय पर कोई एक राक्षस होता था, जिसे सम्भालना होता था। एक राक्षस को नियंत्रित करना आसान कार्य था। परन्तु इतने अधिक राक्षसों को सम्भालने के लिए बहुत अधिक कार्य की आवश्यकता है। सबसे बुरी बात तो ये है कि आधुनिक समय में ये राक्षस लोगों के मस्तिष्क में प्रवेश कर गए हैं। उनकी शिक्षाओं और उनके द्वारा बनाए गए भ्रमों के कारण लोगों ने उन्हें स्वीकार कर लिया है। इन्हें स्वीकार करने वाले सभी लोग मेरे बच्चे हैं, ये जिज्ञासु हैं, सत्य साधक हैं। ये ऐसा हुआ मानों धन ऐंठने के लिए बच्चों को उठा लिया जाए। ये लोग बच्चों को मेरे सामने कर देते हैं और मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूं? मैं राक्षसों को मारने का प्रयत्न करती हूँ परन्तु मेरे बच्चे सामने आकर खड़े हो जाते हैं। तो आधुनिक काल में इन्हें नष्ट करने का कौन सा सर्वोत्तम उपाय है? निःसन्देह, उनका वध किया जा सकता है, वे मर सकते हैं। परन्तु जिन लोगों को उन्होंने भ्रमित किया है, जिन्हें हानि पहुँचाई है उनकी रक्षा मैं किस प्रकार करूं? यह अत्यन्त कठिन और नाजुक कार्य है। एक मात्र ये है कि इन राक्षसों को एक ऐसी अवस्था तक ले आया जाए जहाँ इनका पर्दाफाश हो जाए, ये अनावृत हो जाएं और पूरा विश्व इन्हें पहचान जाए कि ये कैसे लगते हैं। इसलिए बाहर से इनसे लड़ने या यम से इनका वध करने के लिए कहने की अपेक्षा इन्हें एकादश रुद्र के शिकंजे में फँसा देना उत्तम है ताकि अपने दुष्कर्मों के कारण लोगों के सम्मुख ये नग्न हो जाएं। झूठ के इस घिनौने खेल का यह एक लाभ है। असत्य सदैव अनावृत हो जाता है। उनके मुख पर आप सदैव उनके पाखण्ड, दुराशय और शैतानी योजनाएं स्पष्ट लिखे देख सकते हैं।

आधुनिक समय में ये आक्रमण पराकाष्ठा पर हैं। हमें अधिक चुस्त, अधिक सावधान और अधिक सूझ–बूझ वाला होना होगा। आप सब इसके लिए अच्छी तरह से

तैयार हैं। परन्तु सदैव हम ये भूल जाते हैं, कि हमारे अन्दर चैतन्य लहरियाँ है कि चैतन्य लहरियों की नई चेतना हमें प्राप्त हो चुकी है तथा हमारे अन्दर चैतन्य चेतना है। चैतन्य चेतना एक प्रकार का दूत है जो कि पूर्ण है, जो सूचित करती है और हमें बताती है कि हमारे अन्दर क्या कमी है तथा अन्य लोगों में क्या दोष है? परन्तु यदि आप मानसिक या भावनात्मक उद्यमों से अपने निर्णय लेने आरम्भ कर दें तो निश्चित रूप से आप भ्रम में फँस जाएंगे क्योंकि ये सारे प्रश्न एक तरफे होते हैं। जैसे कोई भी मानसिक प्रक्षेपण, रेखीय दिशा (Linear Way) में चलता है और फिर आप ही पर उसका प्रभाव होता है। भावनात्मक प्रक्षेपण का भी ऐसा ही परिणाम होता है और शारीरिक प्रक्षेपण का भी। परन्तु जब आप चैतन्य लहरियों के माध्यम से देखने लगते हैं तो आप अपनी आत्मा से कहते हैं कि वह आपको सूचित करे और आत्मा 'पूर्णज्ञान' (Absolute Knowledge) है। तब आप न तो अपने अहम् के सम्मुख, न अपने बन्धनों के सम्मुख, न किसी संस्कार के सम्मुख और न ही किसी गुरु के सम्मुख घुटने टेकते हैं। आप केवल स्वयं पर निर्भर करते हैं। अतः आप सबके लिए ये समझना आवश्यक है कि हम मानसिक स्तर पर निर्णय न लेकर चैतन्य लहरियों के माध्यम से निर्णय लेंगे। बहुत से लोग सोचते हैं कि जब मैं किसी व्यक्ति के विषय में कुछ कहती हूँ तो संभवतः किसी अन्य ने मुझे सूचना दी होगी। परन्तु कल्पना कीजिए कि मैं यदि चैतन्य लहरियों का स्रोत हूँ तो मुझे सूचना देने के लिए क्या रह जाता है? कोई भी व्यक्ति आकर मुझे क्यों सूचना दे? लोग यदि सूचना देना चाहें तो बेशक दें परन्तु मैं तो जानती हूँ कि वास्तव में परिस्थिति क्या है।

एक बार राहुरी के एक अतिथि गृह में मैं प्रतीक्षा कर रही थी। वहाँ पाँच–छः प्राध्यापक अपनी साइकिलों पर आए। उन्होंने आकर मुझे बताया कि श्री माताजी हम आपको एक व्यक्ति विशेष के विषय में चेतावनी देने आए हैं। मैंने कहा, यह सज्जन कौन है? उन्होंने उस व्यक्ति का नाम बताया और कहा उससे सावधान रहें, वह राजनीति करता है। मैंने कहा उसके विषय में आप बस इतना ही जानते हैं? उन्होंने कहा, हाँ, आपको उससे बहुत सावधान होना होगा। मैंने कहा, अब मैं आपको उस व्यक्ति के विषय में बताती हूँ। इस व्यक्ति की पत्नी इसकी विवाहिता नहीं है, वह किसी अन्य की पत्नी है और वह व्यक्ति उस स्त्री को भगा कर ले आया है। बच्चा इसका है। परन्तु इसने उस महिला का बलात्कार किया था जिसके कारण यह बच्चा उत्पन्न हुआ। जब मैंने ये बातें बतानी शुरू कीं तो उन लोगों की आँखे फटी सी रह गईं। कहने लगे, 'श्री माताजी आप ये सब कैसे जानती हैं?' मैंने कहा आप जाकर पता लगाएं कि मैं जो कुछ कह रही हूँ वह सत्य है या नहीं। वे पूर्णतः स्तब्ध थे। वो वापिस चले गए और फिर मुझे सूचित किया कि श्री माताजी आश्चर्य की बात है आपने जो कुछ भी बताया या वह सब सत्य था! अतः चैतन्य लहरी पर आप सभी कुछ जान सकते हैं। परन्तु जो लोग बिना चैतन्य लहरी के निर्णय लेने का प्रयत्न करते हैं वे गलतियाँ कर सकते हैं, जब तक आप उस

अवस्था तक नहीं पहुँच जाते जहाँ बिना हाथ फैलाए आप सब कुछ जान जाते हैं। परन्तु उस अवस्था तक पहुँचने के लिए सर्वप्रथम आपको अपनी बुद्धि चैतन्य लहरियों के सम्मुख झुकानी होगी। कुछ लोगों की चैतन्य लहरियाँ ठीक नहीं होती, सम्भवतः खराब विशुद्धि के कारण ऐसा हो। उन्हें चाहिए कि अपनी विशुद्धि का ध्यान रखें। उन्हें यदि विशुद्धि का कोई रोग नहीं है तो वे अपने अन्दर महसूस कर सकते है कि कौन से चक्र पकड़ रहे हैं और फलां व्यक्ति की स्थिति क्या है? प्रायः, क्योंकि हम आधुनिक काल में हैं, सुन्दर दिखाई देने वाले लोग उन लोगों की अपेक्षा अधिक भूतबाधित होते हैं जो सुन्दर नहीं दिखाई देते। एक बार एक महिला हमारे कार्यक्रम में आई। वह पूरी तरह से भूत–बाधित थी। छड़ी की तरह से पतली थी। सहजयोग का आरम्भ था। सभी लोगों को लगा कि कितनी सुन्दर महिला सहजयोग में आ गई है! मैने उन्हें कहा कि 'फिलहाल इसे सभागार से बाहर बिठाओ। उनकी समझ में नहीं आया। जब वह ठीक हो गई तो बिल्कुल भिन्न दिखाई देने लगी। मेरे लिए तो वो बहुत ही सुन्दर है। जो सौन्दर्य उस समय देखा गया था, संभवतः वह नकारात्मकता का वेश था जिसे लोगों ने देखा। जैसे आप सिनामे के नायक, नायिकाओं और विदूषकों को देखते हैं जो राष्ट्रपतियों तथा बड़े–बड़े लोगों की भूमिकाएं करते हैं। उनके मुख पर आप स्पष्ट लिखा हुआ देख सकते हैं कि वे कितने भयानक है? जब तक आप उस स्तर के तथा निष्कपट नहीं हैं आप ये बात नहीं समझ सकेंगे।

आज हम अपने अन्दर एकादश रुद्र शक्ति को जागृत करने के लिए पूजा कर रहे हैं। ये शक्ति आपके अन्दर की नकारात्मकता तथा पूरे विश्व की नकारात्मकता से निपटने में सहायता करेगी। अब हमारे बहुत से हाथ हैं, हमारे यहाँ बहुत से लोग हैं जिनके पास भिन्न आयुध, साधन और हथियार हैं। ये सभी हथियार आपके पास हैं, आपके अन्दर हैं और निश्चित रूप से आप इन्हें उपयोग कर सकते हैं। परन्तु सर्वप्रथम आपको ये जानना होगा कि आपके पास कौन से हथियार हैं और किस प्रकार उनका उपयोग करना है। आज भयानक अंध विश्वास है, भयानक गलत धारणाएं हैं। लोगों ने असंख्य संस्था रूपी किले बना लिए हैं, विश्व में सभी प्रकार के मूर्खतापूर्ण कार्य होते हैं। ये सब समाप्त हो जाएंगे। उनके विषय में किसी को कुछ भी ज्ञान न होगा। लोग उन्हें इस पृथ्वी पर आसुरी जीवों के रूप में जानेंगे। अन्ततः जीवन्त शक्ति ही जीवित रहेगी। हमें ये जानना होगा कि हमें जीवन्त शक्ति का ज्ञान है। इसके विषय में हमें अत्यन्त विश्वस्त होना होगा और इस बात पर हमें गर्व करना होगा कि हमें जीवन्त शक्ति का ज्ञान है। तब हमारे अन्दर एकादश रुद्र अत्यन्त सशक्त हो जाता है। आपको कष्ट देने वाले व्यक्ति को कठोर दण्ड मिलेगा। सहजयोग को झुकाने या हानि पहुँचाने वाली किसी भी संस्था को परिणाम भुगतने होंगे। जैसा आप जानते है, मैं (Muf Biffin Sho) मफ बिफिन शो देखने के लिए गई। उसने मुझसे दुर्व्यवहार किया। अगले सप्ताह वह शो बन्द हो गया। भारत में एक समाचार पत्र ने मुझ पर बेहूदे लेख लिखने

शुरू किए थे। कई महीनों के लिए वह समाचार पत्र ही बन्द हो गया। ऐसा होता है। मैं ऐसी कोई बात नहीं कहती, परन्तु जिस तरह से घटनाएं घटती हैं वह आश्चर्य चकित करने वाली होती हैं। ये एकादश रुद्र अब किस प्रकार कार्यशील है? सबसे अहम् बात तो ये है कि ये एकादश केवल कलियुग में, आधुनिककाल में ही कार्य करेगा। इससे पूर्व ये गतिशील न था। क्योंकि उस समय कोई एक–आध ही गुरु होता था। आज जो राक्षस गुरु रूप में आए हैं। पूर्व काल में वो शैतान रहे होंगे। कहीं कोई एक आध–राक्षस होता था, उसका वध करना बहुत आसान था। कंस का वध करने में श्रीकृष्ण को कोई लम्बा समय नहीं लगा और रावण का वध करने में श्रीराम को। राक्षसों का वध एक बार जब उन्होंने कर दिया तो सारा वातावरण शुद्ध हो गया। परन्तु ये लोग मच्छरों की तरह से हैं। एक के बाद एक बेशुमार संख्या में उत्पन्न हो जाते हैं। इनका कोई अन्त नहीं। ये लोग मानव शरीरों में प्रवेश कर गए हैं और उन्हें भयानक रोग, समस्याओं तथा कष्ट से भर दिया है। अतः समस्या कहीं अधिक जटिल एवं गम्भीर है।

तो ये एकादश रुद्र हैं जिनकी ग्यारह विध्वंसक शक्तियाँ है। हम कहते हैं कि दस दिशाएं हैं और यह ग्यारहवीं है। दस बाहर से और एक अन्दर से। इनका प्रकोप उन सभी लोगों पर पड़ सकता है जो सहजयोग की उन्नति में बाधक बनने का प्रयत्न करते हैं। इसके विरोध में कार्य करते हैं या जो मेरे और आपके विरोध में कार्य करते हैं। कोई भी यदि आपको कष्ट देने का प्रयत्न करेगा तो यह शक्ति कार्य करेगी। शारीरिक स्तर पर यह आपके मस्तक पर विराजमान है। एकादश रुद्र आपके मस्तक पर दिखाई देता है और इसकी खराबी के कारण यहाँ पर (मस्तक पर) सूजन आ जाती है। कुछ लोगों में यहाँ एक घुमाव और गूमड़ (उठाव) सा देखा होगा। कैंसर के रोगियों को यदि आप देखें तो उनके बाएं मस्तक से दाई ओर को ये उठाव होता है। काफी बड़ा, दाईं तरफ एक गूमड़ सा। कुछ लोगों को ये उठाव बाईं तरफ को होता है। अतः बाईं तरफ से उठकर यह दाईं तरफ को जाता है और दाईं तरफ से उठने वाला बाईं तरफ जाता है। दाईं तरफ को जाने वाले गूमड़ अधिक भयानक होते हैं क्योंकि ये अत्यन्त गुप्त होते हैं, छुपे हुए, जिन्हें देखा नहीं जा सकता। परन्तु व्यक्ति को ये बहुत हानि पहुँचाते हैं।

ये जितनी भी भयानक शक्तियाँ आज कार्यरत हैं इन्हें पूरी तरह से नष्ट किया जा सकता है यदि हम अपने अन्दर एकादश रुद्र शक्ति विकसित कर लें। ये इतनी अधिक शक्तिशाली नहीं है। एक सहजयोगी ऐसी हजारों आसुरी शक्तियों का वध कर सकता है जबकि ये एक सहजयोगी को हानि नहीं पहुंचा सकतीं। वास्तव में आपके सम्मुख ये शक्तिहीन हैं। आपको कष्ट देने का इनके पास कोई मार्ग नहीं है। आप यदि शक्तिशाली हैं तो ये लुप्त हो जाएंगी, सदा सर्वदा के लिए लुप्त हो जाएंगी। स्मरण रखें कि भारत में एक स्थान पर तीन सहजयोगी गाँव की एक विशेष सड़क से जाया करते थे। एक बार एक कार्य–क्रम

में एक महिला भूतबाधित हो गई और हो हो हो हो करने लगी। उससे पूछा कि वह वहाँ क्यों है? उसने उत्तर दिया कि इस महिला में हम आपको ये बताने के लिए आए हैं कि आप उन तीनों सहजयोगियों को बता दें कि वे इस मार्ग से न जाएं। सारे गाँव तो हम वैसे ही छोड़ चुके हैं और अब इस क्षेत्र में रहते हैं। सारी रात अगर सहजयोगी इस मार्ग से आते रहेंगे तो हम इधर–उधर भागते रहेंगे। अतः उन तीनों सहजयोगियों को कह दें कि वे उस मार्ग से न जाएं ताकि हमारे रहने के लिए कुछ स्थान तो बच जाए। ये सभी विकास प्रणाली से बाहर हो चुके हैं। ये मृत लोग हैं और ये मृत लोग अपने सूक्ष्म शरीर में हमारे अन्दर प्रवेश कर सकते हैं और तत्वों की रचना कर सकते हैं। ये तत्व हमें काबू कर सकते हैं और हमें बाधित कर सकते हैं। इस तरह के भूतबाधित लोग बिल्कुल सामान्य प्रतीत होते हैं। जैसा आज मैं बता रही थी सम यौन लैंगिकता, अति लैंगिकता या लैंगिकता का पूर्ण अभाव, कलात्मकता का पूर्ण अभाव या अतिकलात्मक प्रवृत्तियाँ, बहुत अधिक खाना या बिल्कुल न खाना, व्रत करना, बहुत अधिक डरना या बिल्कुल न डरना, हर बात में ये कहना कि इसमें क्या दोष है, परमात्मा का भी भय न खाना या चींटी से भी डरना। कुछ लोग हर समय दोष भाव ग्रस्त रहते हैं और कुछ लोग दूसरों को बेकार बताकर उन्हें दोष भाव में ढकलते हैं। कुछ लोग अत्यन्त क्रूर होते हैं, अन्य लोगों के मामलों में हस्तक्षेप करके वे उन्हें दास बना सकते हैं, कुछ भी कर सकते हैं, अपने भाषणों से भयानक युद्ध करवा सकते हैं और कुछ अन्य ऐसे हो सकते हैं जो स्वयं को इन आसुरी लोगों के सम्मुख झुकाकर इनकी दासता स्वीकार कर लेते है और इन नियंत्रक व्यक्तियों के गौरव में अन्य लोगों को भी नष्ट करने का प्रयत्न करते हैं।

इसके पश्चात् सहजयोग का क्षेत्र आता है। जहाँ ऐसी शक्तियाँ प्रवेश नहीं कर सकतीं। यहाँ पर आप बहुत प्रसन्न हैं। आपके मस्तक पर चहुँ ओर इस क्षेत्र की देखभाल करने के लिए एकादश रुद्र खड़े हैं। वे सब देख रहे हैं, वे प्रहरी हैं। कोई आपको हानि नहीं पहुँचा सकता। अत्यन्त शान से आप अपने सहस्रार में स्थापित हैं। कुछ भी आपको छू नहीं सकता, कोई भी आपको कलंकित नहीं कर सकता। एकादश रुद्र बहुत चुस्त हैं और उनके बहुत से पक्ष हैं। हर देवता के बहुत से पक्ष होते हैं और ये सारे पहलू इस क्षेत्र को हर समय प्रकाशमान करते रहते हैं ताकि कोई भी बाह्य शक्ति इसमें प्रवेश न कर सके। आपके अन्दर भी यही शक्ति विद्यमान है। सहस्रार के इस क्षेत्र में जब भी कोई बाह्य शक्ति प्रवेश करने का प्रयत्न करती है तो तुरन्त ये गतिशील हो उठते हैं और उस व्यक्ति को इतनी हानि पहुँचा सकते हैं कि आप स्वयं हैरान रह जाते हैं। आपको पता भी नहीं चलता कि यह सब कैसे हो गया। परन्तु इस शक्ति को विकसित करने के लिए पूर्ण निष्ठा एवं सूझ–बूझ पूर्वक ध्यान धारणा करनी आवश्यक है। केवल इतना भर नहीं कि मेरे फोटो के सामने बैठकर आप कहें, "श्री माताजी मैं स्वयं को आपके सम्मुख समर्पित करता हूँ आदि आदि।" निष्कपटता पूर्वक, क्योंकि देवता जानते हैं

कि सत्यनिष्ठ कौन हैं, गहनता में कौन है और कौन वास्तव में उन्नत होना और उत्क्रान्ति को प्राप्त करना चाह रहा है। एक प्रकार से यह संघर्ष है। ये संघर्ष है परन्तु ऐसा संघर्ष नहीं जिसका कोई फल न मिले। संसार का कोई अन्य संघर्ष आपको कोई भी फल नहीं देता फिर ये संघर्ष तो इतना साधारण है, इसका इतना वर्णन किया जा चुका है, इसे इतना कार्यान्वित किया जा चुका है कि आपको अधिक चिन्ता करने के लिए कुछ शेष नहीं है।

तो आज हमें इस कलियुग में नकारात्मकता को पूर्णतः नष्ट करने के लिए इन एकादश रुद्र शक्तियों का आह्वान करना है और ये प्रार्थना भी करनी है कि यदि हमारे अन्दर कोई नकारात्मकता है तो यह नष्ट हो जाए। सहजयोग विरोधी कोई नकारात्मकता यदि है तो वह नष्ट हो जाए। हमारे चरित्र में, हमारी सूझ–बूझ में कोई नकारात्मकता है तो वह नष्ट हो जानी चाहिए। एकादश रुद्र के विषय में आज का यही सन्देश है।

परमात्मा आपको धन्य करे।

पूजा का महत्व

भाग–1

परिचय

सहजयोगी होने के नाते श्री आदिशक्ति की साक्षात रूप में या उनके फोटो की पूजा करने की आज्ञा प्राप्त होने का सौभाग्य हमें प्राप्त है। गरिमामयी माँ साक्षात रूप में या अपनी सर्वव्यापक उपस्थिति के माध्यम से हमारी पूजा को स्वीकार करती हैं। जब – जब भी हम श्री माता जी का ध्यान तथा उनसे प्रार्थना करते हैं वे हमारे साथ होती हैं। अतः श्री माता जी की पूजा करते हुऐ सहजयोगियों का एक उत्तरदायित्व होता है। **श्री माता जी के चरण कमलों पर पूरी तरह से चित्त स्थिर करके उनकी पूजा की जानी चाहिए। पूजा के समय अनचाहे से भी चित्त विक्षेप (ध्यान का हटना) सम्मान विहीनता सम है। मंत्रोच्चारण, महादेवी की महिमा–गान के लिए तथा श्रद्धापूर्वक समर्पित की गई भेंट को स्वीकार करने के लिए, देवी से प्रार्थना के रूप में होता है।**

शुद्ध श्रद्धा का उदय हृदय से होता है और इसकी प्रतिबिम्ब "आत्मा", देवी मां की शुभ पूजा करने से प्रसन्न होती है। श्री माताजी के अनुसार पूजा हृदय से होनी चाहिए। हृदय से की गयी पूजा अति सुन्दर लहरियों का आह्वान करती है तथा हर उपस्थित व्यक्ति दैवी आनन्द का अनुभव करता है।

पूजा अन्तस का एक भाग बन जानी चाहिए। अपने एक पत्र में श्री माता जी ने कहा है कि **'पूजा हृदय में करनी चाहिए। पूजा के दृश्य हृदय में उतर कर हमारे लिए निरन्तर आन्नद के स्रोत बन जाने चाहिए।'**

हृदय को आदिशक्ति का सिंहासन बन जाने दीजिए और इस प्रकार गंगा जल की तरह पवित्र तथा अमृत की तरह शुभकर बने चित्त से श्री माता जी के चरण कमलों की पूजा कीजिए।

आदि शंकराचार्य ने कहा है कि आध्यात्मिक विकास के लिए पूजा अत्यन्त सहायक है और यह आदिशक्ति की कृपा का आह्वान करती है। बल देकर उन्होंने कहा है कि **सर्व–व्यापक शक्ति से जब चित्त का एकाकार हो जाता है तो निर्विकल्प अवस्था में योगी, इष्ट तथा पुजारी के द्वैत से ऊपर उठ जाता है। जब हमारी देवी मां निरन्तर विद्यमान हैं तो हम पूजा स्वीकार करने के लिए** उनका आह्वान किस प्रकार कर सकते हैं? पूरा ब्रहमांड ही जब उनके विराट अस्तित्व में स्थित है तो हम उन्हें क्या भेंट कर सकते हैं?

उनके असीम (विराट) रूप के दर्शन कर पाने में असमर्थ हम सब सहजयोगियों को अपनी पूजा का शुभ–अवसर प्रदान करने के लिए श्री माता जी ने सीमित (मानव) रूप धारण किया है। इस कृपा के लिए हमारा रोम–रोम उनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए।

मनस्त्वं व्योमस्त्वं मरुदसिसारथिरसि
त्वमापस्त्वं भूमिस्त्वयि परिणतायां नहि परम्।
त्वमेव स्वात्मानं परिणामयितुं विश्वपुषा
चिदानन्दकारं शिवयुवति भावेन विभूषे।।

अर्थात्

तुम हो मन, वायु, आकाश,
अग्नि, जल और भूमि तुम्ही हो।
सभी कुछ है परिणति में तुम्हारी,
इसके बाहर कुछ भी नहीं है।
परिणत स्वयं को करने हेतु,
चिदानन्दाकार की
विराट–देह से की अभिव्यक्ति।

तू मन है, तू आकाश है, तू वायु है और वायु जिसका सारथि है – वह अग्नि भी तू है। तू जल है और तू भूमि है, तेरी परिणति के बाहर कुछ भी नहीं है। तूने ही अपने आपको परिणत करने के लिए चिदानन्दाकार को विराट् देह के भाव द्वारा व्यक्त किया हुआ है।

श्री माताजी के भाषणों से पूजा के विषय में उद्धरण

5 मई 1980 के सहस्त्रार दिवस के अवसर पर श्री माता जी के प्रवचन से उद्धत :–

"सहज योग के विषय में आज मैंने आपको कुछ रहस्य बताने हैं – एक रहस्य यह है कि पूजा के लिए आपको मध्यम–प्रकार के लोगों को नहीं लाना चाहिए क्योंकि पूजा को सहन करना अति कठिन है। मेरे अस्तित्व, चरणों तथा कर–कमलों का मूल्य अभी तक लोगों ने नहीं समझा है। वे यहां आने के योग्य नहीं हैं। अतः भाई, बहन या मित्र होने के नाते किसी व्यक्ति को न लाएं। यह अनुचित है। असह्य देकर आप उस व्यक्ति के उत्थान के अवसर बिगाड़ रहे हैं। वह इसे सहन नहीं कर सकता। पूजा बहुत ही कम लोगों के लिए हैं। अतः याद रखें कि पूजा अधिक लोगों के लिए नहीं है।

अब चरणामृत–अर्थात मेरे चरणों का अमृत भी सभी के लिए नहीं होता और न ही पूजा की आशीष सब के लिए होता है। अतः जो लोग पूरी तरह तैयार नहीं है उनसे बचने का प्रयत्न करें। सर्वप्रथम वे सन्देह करना शुरू कर देंगे। नियम–आचरण सम्बन्धी समस्या भी होगी। आवश्यक सम्मान के साथ वे पूजा को स्वीकार न सकेंगे। यहां आना अत्यन्त सौभाग्य से होता है और यह सौभाग्य हर किसी को नहीं प्रदान किया जा सकता।

यदि आप समझ सकें तो यह सहजोग का रहस्य है। और प्रारम्भ में इस रहस्य के विषय में बहुत कम लोगों को बताना है। एक दिन सभी रहस्य उघड़ने वाले हैं–परन्तु सब के लिए नहीं। जब आप इस सत्य को पहचान जायेंगे कि आप सौभाग्यशाली हैं तो आप के आचरण से प्रकट होगा कि यह सौभाग्य आपको प्रदान किया गया है। आज विश्वभर में ध्यान करने वाले बहुत से लोग हैं। मैं इन सब लोगों के विषय में सोच रही हूं। आपको

भी इनके विषय में सोचना है और यह समझना है कि ये आपकी तरह ही विराट अस्तित्व के अंग–प्रत्यंग है। परन्तु आप लोग मेरे अस्तित्व के चेतन अंश हैं।

अतः इस समय यह पूजा आप केवल अपने तथा लंदन के लोगों के लिए ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के हित के लिए कर रहे हैं। विश्वभर के सहजयोगियों के अतिरिक्त आप स्वयं को उन सहजयोगियों की तरह अभिव्यक्त कर रहे हैं जो मुझे पहचान चुके हैं और मुझसे दूसरे लोगों को आशीष देने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं जिससे कि वे भी मुझे पहचान सकें। मुझे आशा है इस पूजा से मेरी पहचान आपको और अधिक स्पष्ट हो जायेगी। मुझे पहचानकर आप केवल अपने आपको पहचानेगें तथा सभी कार्य बड़े सुन्दर ढंग से होने लगेंगे।

मैं केवल यह चाहती हूं कि आप केवल निष्कपट बनें तथा सहजयोग में कपट न करें। कपट करने से आपको भी बहुत हानि होगी तथा अन्य सहजयोगियों को भी। अतः छल न करें। छल द्वारा क्योंकि आप मुक्ति पथ को हानि पहुंचायेगें तो आप भी दण्डित होंगे और परिणाम स्वरूप आप ही हानि पीड़ित होंगे। अतः निष्कपट बनने का प्रयत्न करें, यह कठिन कार्य नहीं है।

कपट का मार्ग नहीं अपनाना है। बहुत से लोग सोचते हैं कि मां ताड़ना कर रही हैं। परन्तु ताड़ना जैसे शब्द गलत हैं, तथा इनका प्रयोग मेरे लिए नहीं होना चाहिए। सौभाग्यवश आप यहां हैं, और आपको यह पता होना चाहिए कि सौभाग्य केवल योग्य व्यक्तियों को ही प्रदान किया जाता है। आप सब योग्य व्यक्ति हैं इसी कारण मैं यह सब आपको बतला रही हूं।

निष्कपटता आपकी सफलता की कुन्जी है। यह एक सौभाग्य है कि मैं यह कुन्जी आपको दे रही हूं। पाश्चात्य बुद्धि के लोगों को यदि आप कुछ बतायें तो वे दंड इत्यादि अवांछनीय शब्दों का उपयोग कर देते हैं। आपको सम्मान सूचक तथा उचित शब्दों का उपयोग मेरे प्रति करना चाहिए।

यदि आपकी आचरण विधि ठीक नहीं है तो आप उलटे–सीधे काया द्वारा सभी कुछ बिगाड़ लेते हैं। अतः सावधान रहिए। इस अवसर को सौभाग्य मानिये। आप सभी विशेष व्यक्ति हैं और यह अवसर आपके प्रति विशेष कृपा है। जन–साधारण से मैं इस प्रकार बातें नहीं कर सकती। परन्तु आपको यह सब मैं इसलिए बता सकती हूँ क्योंकि पूरी कुन्जी मैं आपको देना चाहती हूँ।

स्वयं को देखकर यदि आप यह जान सकें कि आप कितने सौभाग्यशाली हैं, कि सहजयोग क्या है, तब आप समझेंगे कि **यहां पर विद्यमान होना कितने सौभाग्य तथा सुफल की बात है।** आपकी सुकृतियों के कारण यहां पर आपकी उपस्थिति से आपके कितने जीवन पुरस्कृत हो गये हैं? यह ज्ञान आपको और अधिक निष्कपटता पूर्वक पूजा करने में सहायक होगा।

ईश्वर आपको आशीष प्रदान करें। **नीचे उद्धरित वार्ता में 19 जुलाई 1980**

को ब्रिटेन में श्री माता जी ने पूजा का अर्थ बताया

अब पूजा के लिए आप लोगों को समझना है कि साक्षात्कार के बिना पूजा का कोई अर्थ नहीं, क्योंकि आप "अनन्य" नहीं हैं, अर्थात आपको अपने विराट रूप के प्रति चेतन होना है। कृष्ण ने भक्ति को अनन्य बताते हुए कहा कि मैं अनन्य भक्ति प्रदान करूंगा। वे अनन्य भक्ति चाहते हैं। अनन्य अर्थात जहां दूसरा कोई न हो अर्थात जब आप साक्षात्कारी हों। अन्यथा वे कहते हैं "पुष्पम् फलम् तोयम्" अर्थात "पुष्प, फल व जल, स्वीकार्य है मुझे, समर्पित जो करो,"

परन्तु जब देने की बात आती है तो वे कहते हैं – "अनन्य भक्ति पूर्वक आप को मेरे पास आना है, अर्थात्

"मुझ से एकाकारिता हो जाने के पश्चात ही आप में भक्ति जागती है उससे पूर्व नहीं, इससे पूर्व आपके सम्बन्ध नहीं जुड़े होते।

पूजा मनुष्य की बायीं ओर की भावनात्मकता की अभिव्यक्ति है, यह दायीं ओर की उग्रता को, विशेषतया अति उग्र स्वभाव को तथा उग्र वातावरण को निष्प्रभावित करती है। पूजा क्योंकि भक्ति तथा समर्पण की अभिव्यक्ति है अतः यह उग्र स्वभावी व्यक्तियों के लिए हितकर है। पूजा करने से होता क्या है? ऐसा पाया गया है और अब मैं भी तुम्हें बता रही हूं कि पूजा द्वारा आपको अपने अन्दर के सुप्त देवी–देवताओं को जगाना है। परन्तु क्योंकि ये देवता, ये आदि–देव मेरे साथ हैं इसलिए आप मेरी पूजा करो और मेरे अन्दर के सभी देवता जागृत होंगे तथा परिणामतः आपके अन्तःस्थित देवता भी जागृत हो जायेंगे। अतः मेरा आशीष ग्रहण करके योग्य बनने के लिए आपकी लहरियों का सुधरना अति आवश्यक है।

यदि ग्रहण–सामर्थ्य ही अच्छी नहीं है तो किसी भी पूजा या भाव–अभिव्यक्ति का कोई लाभ नहीं। तो सर्व प्रथम हम एक प्रकार से अपने यंत्र (शरीर) या प्रक्षेपण–यन्त्र को तैयार करते हैं। यह तैयारी भिन्न देवी–देवताओं को प्रार्थना द्वारा–अर्थात कुंडलिनी पूजा द्वारा–होती है। मेरी कुंडलिनी की प्रार्थना करने से आप अपने प्रतिबिम्ब को सुधार लेते हैं **क्योंकि आपकी प्रार्थना से मेरी लहरियों का बहाव आपकी ओर हो जाता है तथा आपकी कुंडलिनी को जागृत कर देता है। यह जागृति ही आपके उत्थान का प्रारम्भ है।**

एक बार जब आपका यन्त्र (शरीर–तन्त्र) ठीक हो जाता है तो आप अपनी अभिव्यक्ति बाहर की ओर करते हैं। किस प्रकार करते हैं आप यह अभिव्यक्ति? **ब्रह्मांड की रक्षक के रूप में देवी की शक्तियों का महिमा–गान करके उनकी पूजा–अर्चना द्वारा आप यह कार्य करते हैं।**

महा–देवी की शक्तियों का गुण–गान बारम्बार करके अपनी भावाभिव्यक्ति (ह्रदय–प्रेम) को आप प्रतिध्वनित (गुंजन) करते हैं। तब आपकी अभिव्यक्ति अति शक्तिशाली हो जाती है। एक अति सूक्ष्म घटना घटित होती जो की चमत्कारिक है।

यह सब बातें अति साधारण लगती हैं – **जैसे मेरे चरण धोना अति साधारण प्रतीत होता है। अब आप इन चरणों को देखिए। मैं नहीं जानती कि आप इनमें पूरे ब्रह्मांड को देखते हैं या नहीं – मैं तो इसे यहां देखकर आश्चर्य – चकित रह जाती हूं।**

मेरे चरण धोते समय आप क्या करते हैं? वास्तव में मेरे चरण घोर परिश्रम करते हैं और तब इन्हें आराम पहुंचाने के लिए आप थोड़ा सा जल इन पर डालते हैं और यह संकेत देते हैं कि इन चरणों द्वारा किये गये प्रयत्नों को आप अनुभव कर सकते हैं। और तब एक प्रकार का मधुर तथा संगीतमय प्रेम इन चरणों से बह निकलता है। जैसे आज जब मैं आ रही थी तो अचानक पॉल को खड़े देखा – वही हुआ, देखो कितनी सावधानी तथा समझदारी है – श्री माता जी आ रही हैं। कहीं वे खो न जायें। बस इतने भर से करुणा बहने लगी क्योंकि यह प्रेम तो सब कुछ समझता है। किसी वस्तु की इसे आशा नहीं, परन्तु केवल प्रेम को स्वीकार करने वाले व्यक्ति की उपस्थित में ही यह आड़ोलित होता है।

आप कैसे कह सकते हैं कि आप ग्राही (पाने वाले) हैं? इन छोटी–छोटी बातों की अभिव्यक्ति द्वारा। अतः जब आप मेरे चरणों को आराम पहुंचाते हैं, इन्हें धोते है, साफ करते हैं तो आपको पता होता है कि इनका महत्व क्या है, आप इस महत्व को पहचानते हैं। यह मान्यता आप किस प्रकार प्रकट करेंगे? यह छोटे–छोटे समारोह इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यह आपकी मान्यताओं को प्रकट करते हैं। अज्ञानता में यदि इन्हें करेंगे तो यह जीवनहीन होंगे और ज्ञान–पूर्वक समझ कर करने पर पूर्णतया जीवन्त बन जायेंगे। मेरे चरणों को आराम पहुंचाने के लिए आप तेल इत्यादि अन्य वस्तुएं लगाते हैं। इस तरह आप हृदय से कहते हैं :–

"श्री माता जी आपने घोर परिश्रम किया है, आपके चरण कमलों ने भी बहुत परिश्रम किया है"

सामान्य रूप (बुद्धि–प्रयोग) से यदि आप यही बात कहें तो यह महत्वहीन है। परन्तु मेरे चरणों के प्रति आपका प्रेम महत्वपूर्ण है। जैसे बच्चे के प्रेम पूर्वक मां के गाल पर हाथ रख देने मात्र से मां का हृदय प्रेम से द्रवित हो उठता है। यह आचरण पारस्परिक है। यह अति सूक्ष्म क्रिया है जो इसी प्रकार कार्य करती है। हृदय से आप जितना मुझे प्रेम करते हैं उतना ही अधिक आनन्द आप पाते हैं। तर्क तथा बुद्धि – प्रयोग से यह आनन्द नहीं मिल सकता।

सर्व प्रथम आपका शुद्धि–करण आवश्यक है। परन्तु आपकी प्रेम–अभिव्यक्ति श्री माता जी के प्रति होनी ही चाहिए। यही चरम – सीमा है जिसे प्राप्त करते ही आप सर्व–शक्तिमान बन जाते हैं और दूसरे लोगों को भी यह शक्ति दे सकते हैं। परन्तु यह देना भी एक दूसरे के आश्रय पर निर्भर है क्योंकि देवी आपके विषय में सब कुछ जानती हैं। यदि आप कोई अनुचित प्रयास करेंगे तो देवी आपको स्पष्ट रूप से बिना किसी संकोच के कह देगी कि ऐसा नहीं होना चाहिए। फिर भी कार्य को करने के लिए आपको पता होना चाहिए कि इसे परस्पर आश्रित होना है। यह एक तरफा नहीं हो सकती।

निष्कपटता एक तरफा नहीं हो सकती यह दोनों ओर से होनी चाहिए। तभी यह भली–भांति कार्य कर सकती है और तब एक प्रकार के समभाव स्नेहक के रूप में प्रेम को लाते हैं और अन्तस में एक सुन्दर आड़ोलन का अनुभव होता है।

पूजा वास्तव में प्रोत्साहन देने वाली क्रिया है। यह आपको एक नये साम्राज्य में ले जाती है। वास्तव में यह चमत्कार है। एक बार जब आप पूजा कर लेते हैं तो अपने मौन में भी बहुत सी अभिव्यक्ति कर सकते हैं। आपका मौन भी अत्यन्त शक्तिशाली बन जाता है।

पश्चिमी देश के लोगों को विशेषतया अपनी अबोधिता को स्थापित करना है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सबसे पहले इसी पर आक्रमण होता है। बहुत सी दुष्ट शक्तियां इस पर आक्रमण करती हैं। अतः हमें अपनी अबोधिता को दृढ़ करना है। यह अत्यन्त शक्तिशाली गुण है। यह कोई बुराई नहीं देखता। अबोधिता कुछ नहीं देखती केवल प्रेम करती है। बचपन में बच्चा नहीं जानता कि माता–पिता या कोई अन्य उससे घृणा करता है। निष्कपटता पूर्वक बच्चा रहता है। परन्तु अचानक जब उसे पता चलता है कि लोग परस्पर प्रेम नहीं करते तो उसे सदमा पहुंचता है।

अतः श्री गणेश पश्चिमी देशों के लिए अति महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे ही हर चीज के सार है। यही कारण है कि सर्व प्रथम हम श्री गणेश की पूजा करते हैं। परमात्मा ने सर्वप्रथम श्री गणेश की रचना की क्योंकि वही उनके सबसे बड़े पुत्र हैं, उनके पहले बेटे हैं। आपके भाईयों में से सबसे बड़े भाई हैं और यद्यपि कार्तिकेय को सदा बड़े भाई का स्थान दिया जाता है और गणेश जी स्वयं को छोटा भाई कहते हैं, फिर भी उनकी रचना पहले की गई थी। क्योंकि श्री गणेश सदा तरुण रहते हैं इसलिए वे आप सबसे छोटे हैं। समझने की यह अत्यन्त सूक्ष्म बात है कि छोटा होते हुए भी वे इतने विवेकशील हैं। वे साक्षात विवेक हैं। क्या आप इतने बुद्धिमान बच्चे की कल्पना कर सकते हैं? आयु में आप सदा श्री गणेश से बड़े हैं। परन्तु विवेक में वे ही सबसे बड़े हैं।

इसी तरह से आपको समझना चाहिए कि छोटी–छोटी क्रियाओं से, मंत्रोच्चारण से किस प्रकार हम अपने अन्दर के देवताओं का आह्वान करते हैं क्योंकि आप जागृत हैं, आपका हर शब्द जागृत है, अतः अब आपके मंत्र भी सिद्ध हैं।

इस गुरु पूजा पर मैं आपको सिद्ध करने व सिद्धि स्थापना की विधि बताने वाली हूँ। हर चक्र और उसके शासक देवता की सिद्धि प्राप्त करने की विधि। निस्संदेह इस गुरु पूजा पर यह कार्य होगा। परन्तु यह पूजा पूरी सूझ–बूझ तथा पूर्ण मान्यता के साथ, इसे परम–सौभाग्य मानते हुए, होनी चाहिए।

सभी देवता और ऋषि गण इस पर ईर्ष्या कर रहे हैं। आपके लिए महान लाभ तथा सौभाग्य है। अतः इसका पूरा लाभ उठायें। बहुत ही छोटी–छोटी चीजें मुझे प्रसन्न कर सकती हैं– आप जानते हैं कि आपकी मां बहुत ही साधारण चीजों से प्रसन्न

हो जाती है। कितने हृदय से आपने पूजा की – बस इसी का महत्व है।

क्योंकि आप निर्विचार समाधि में चले जायेंगे अतः इसके विषय में अधिक सोचने–विचारने के स्थान पर इसे समझना, महसूस तथा अनुभव करना है। यही ऊर्ध्व गति है।

18 जून 1983 को पूजा तथा हवन का महत्व बताते हुए श्री माता जी के भाषण की प्रतिलिपिः–

आज इतने सारे, जिनमें से कुछ नये भी है, सहजयोगियों के मध्य आकर मुझे असीम आनन्द की अनुभूति हो रही है। सम्भवतः मैं आप सबको हज़ारों वर्ष पूर्व से जानती हूँ। क्योंकि सहजयोग में आपको एक साधारण सी बात समझनी है कि आप केवल आत्मा हैं और आत्मा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।

आत्मा की तुलना हम सूर्य से कर सकते हैं। सूर्य बादलों से ढका अवश्य हो सकता है परन्तु वह सूर्य ही रहता है। आप इसे दीप्ति नहीं प्रदान कर सकते। यह स्वतः प्रकाशित है। बादलों के हट जाने पर यह वातावरण को प्रकाश प्रदान करता है। ठीक इसी प्रकार हमारी आत्मा अज्ञान के अन्धकार से ढकी हुई है। अज्ञानान्धकार के कारण आप इसे देख नहीं सकते। बादलों के हट जाने पर भी इनकी कुछ छाया बनी रहती है। सूर्य को स्पष्ट रूप से देखने के लिए आकाश का स्वच्छ होना अत्यन्त आवश्यक है। बहुत सी विधियों से हम इस अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर कर सकते हैं।

सर्व प्रथम हमें यह दृढ़ विश्वास होना चाहिए कि हम आत्मा हैं और शेष सभी कुछ छाया मात्र है। इस तथ्य की अनुभूति हमारे अन्तस में होनी चाहिए। इसकी अनुभूति के पश्चात सब कुछ सरल हो जाता है। आपने आज तक स्वयं को जितना जाना है आप उससे कहीं अधिक हैं। इस नयी स्थिति में आपका यह विश्वास आपके अपने अनुभव से प्राप्त हुआ है अतः यह अन्ध–विश्वास नहीं हैं। अनुभवगम्य होने के कारण इसमें बुद्धि प्रयोग की कोई आवश्यकता नहीं और न ही इसे बुद्धि द्वारा चुनौती दी जानी चाहिए। बुद्धि प्रयोग द्वारा आप अधोगति को प्राप्त होंगे। जिस प्रकार आकाश में नक्षत्र की झलक पा कर वैज्ञानिक उसके अस्तित्व में विश्वास करते हैं ठीक उसी प्रकार जब आप अपने साक्षात्कार का हल्का सा अनुभव प्राप्त कर लेते हैं तो कम से कम आपको अपने आत्मा होने का विश्वास हो जाना चाहिए।

अपनी जागृति के इस अनुभव पर दृढ़ रह कर आप अपना ध्यान इस तथ्य पर रखो कि आप आत्मा हैं। अपनी बुद्धि से कहो कि अब आपको धोखा देना छोड़ दे। इस प्रकार आप अपनी बुद्धि की दिशा बदल सकते हैं।

अब आपकी बुद्धि आत्मा की खोज में कार्य–रत हो जायेगी। निष्ठा का यही तात्पर्य है कि शुद्ध–बुद्धि को उन्नत करती है। यद्यपि अज्ञान–अन्धकार के बादलों को फटते हुए आपने देखा है फिर भी बादलों का अस्तित्व अभी भी है। अतः बादलों को हटाने के लिए आपने परम–चैतन्य की लहरियों का प्रयोग करना है। चैतन्य लहरियों का लाभ उठाने की कई विधियां हैं। अतः लहरियों का स्रोत

अन्यत्र हैं और यह स्रोत है आपकी अपनी कुंडलिनी। आपके अपने शरीर–तन्त्र में आदि–कुंडलिनी आपके समक्ष हैं और अन्य जिज्ञासुओं की अपेक्षा आप कहीं अधिक भाग्यवान हैं।

विग्रह, अर्थात पृथ्वी मां की चैतन्य लहरियों का स्वयंभु मूर्त रूप, की पूजा करने में लोगों के सामने बहुत सी समस्याएं थी। सर्व प्रथम उन्हें सविकल्प समाधि में ध्यान मग्न होना पड़ता था। इस अवस्था में उन्हें विग्रह पर ध्यान लगाना पड़ता था।

विग्रह से तात्पर्य चैतन्य–लहरियों से परिपूर्ण मूर्ति से है। उस मूर्ति को देखते हुए अपनी कुंडलिनी को ऊर्ध्व–मुखी करने की चेष्टा जिज्ञासु किया करते थे और कुंडलिनी भी आज्ञा चक्र तक आ जाया करती थी। सहस्रार भेदन कर कुंडलिनी का बाहर आना अति दुष्कर कार्य था क्योंकि उस अवस्था में जिज्ञासु को साकार से निराकार की ओर जाना पड़ता है। अर्मूत का ध्यान करना असम्भव कार्य था। मुसलमानों तथा कई अन्य लोगों ने ऐसा करने का प्रयत्न किया। इन परिस्थितियों में आवश्यक था कि जटिलताओं को दूर करने के लिए निराकार को साकार रूप में मान लिया जाये। **ज्योंही आप साकार का ध्यान करते हैं आप स्वयं निराकार हो जाते हैं।** उदाहरणार्थ अपने समक्ष पड़ी बर्फ जब आप छूते हैं तो यह पिघलने लगती है और आपको शीतलता की प्रतीति होनी शुरू हो जाती है।

समस्या का समाधान अब सहज ही हो गया है। **पूजा एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा आप साकार को निराकार में परिवर्तित कर उसकी अनुभूति करते हैं। आपके सारे चक्र ऊर्जा के केन्द्र हैं और सभी चक्रों पर उनके शासक देवता विद्यमान हैं। निराकार होते हुए भी उन्हें साकार रूप प्रदान किया जाता है। जब आप पूजा करते हैं तो उनका साकार रूप परिवर्तित हो कर चैतन्य लहरियों के रूप में प्रवाहित होने लगता है और इस प्रकार से सभी गलत धारणांए, मान्यताएं, जिन्होंने आत्मा को ढका हुआ था, दूर हो जाती हैं।** पूजा के विषय में आप सोच नहीं सकते क्योंकि पूजा का क्षेत्र विचार–क्षेत्र से परे है। आपको समझना है कि आप पूजा के प्रति तार्किक दृष्टि कोण नहीं अपना सकते। आपने अपने चक्रों का सर्वाधिक लाभ उठाना है और इसके लिए आपको पूजा तथा चैतन्य–लहरियों के बहाव पर ध्यान केन्द्रित करना है। लहरियों का यह बहाव अज्ञान–अंधकार रूप बादलों को फाड़ देगा। अतः आपका केवल एक ही कार्य है, एक ही साधन है कि पूजा पर ध्यान केन्द्रित करें और साक्षी बनें। आप ही द्रष्टा हैं। द्रष्टा शब्द के दो अर्थ हैं, पहला यह है कि वह केवल तटस्थ रहकर देखता है। वह केवल ज्ञान है, बिना किसी विचार और प्रतिक्रिया के देखता मात्र है और सहज रूप से ग्रहण करता है। आपके और देवताओं के बीच आवश्यक सामन्जस्य की कमी कई बार मेरे लिए बोझ बन जाती है।

एक ओर आपके मंत्रोच्चारण से देवता जागृत हो जाते हैं और दूसरी ओर आप अपने अन्तस में उनसे कुछ ग्रहण नहीं करना चाहते। अतः अपने शरीर में उत्पन्न उस

अतिरिक्त शक्ति का संचय मुझे करना पड़ता है।

अतः अपने ह्रदय को खुला रख कर बिना बुद्धि प्रयोग के पूजा करना आपके हित में होगा। आज हम पूजा की विधि में परिवर्तन कर रहे हैं। पहले हम हवन करेंगे और फिर पूजा। यही उपयुक्त होगा क्योंकि इस तरह हम अग्नि तत्व को जागृत करेंगे जो सभी दोषों को जला देगा। मेरे चरण धोने का भी वही फल होता है जो हवन की अग्नि प्रज्जवलित करने का। आज पहले हम हवन करेंगे और फिर पूजा। दोनों समान हैं। आप मेरी पूजा जल अथवा अग्नि से कर सकते हैं।

अग्नि का सार–तत्व कान्ति में है। जो भी बुराई है उसको जला दिए जाने पर यह कान्ति आप सब के शरीर तथा चेहरे को आभामय बनाती है और जब आप हवन करते हैं तो सारा वातावरण चैतन्य–लहरियों से परिपूर्ण हो जाता है।

परमात्मा आपको आशीष दें,

निम्नलिखित वार्ता में 24 मई 1986 को श्री माता जी ने मेड्रिड में पूजा के महत्व के विषय में बताया

आज मैं आपको पूजा का महत्व बताऊंगी।

प्राचीन इसाई भी "मैरी" की प्रतिमा, तस्वीर या सम्भवतः येशु की मां की रंगीन शीशे पर बनी आकृति की पूजा–आराधना किया करते थे।

परन्तु बाद में जब लोग अधिक तार्किक बनने लगे, और पूजा के महत्व के ज्ञान–अभाव में इस महत्व का वर्णन न कर पाये, तो उन्होंने नियमित रूप से की जाने वाली पूजा का महिमा–गान त्याग दिया।

ईसा के पूर्व भी लोग एक विशेष प्रकार का मण्डप बनाते थे जिसमें जिहोवा की पूजा के लिए भी स्थान बनाया जाता था। अब सहजयोग में जिहोवा सदाशिव हैं तथा मां मैरी महालक्ष्मी हैं।

वे पहले भी अवतरित हुई। सीता, राधा तथा फिर मां मैरी के रूप में वे अवतरित हुई "देवी महात्मय" नामक पुस्तक में ईसा के जन्म के विषय में स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है। ईसा राधा के पुत्र थे, राधा महालक्ष्मी हैं। अतः डिम्ब, अण्डा, के रूप में एक अन्य अवस्था में उनका जन्म हुआ और आधे अण्ड ने श्री गणेश के रूप में पुनः अवतरण लिया और शेष आधा भाग महाविष्णु, जो कि हमारे भगवान ईसा हैं, के रूप में अवतरित हुआ।

महाविष्णु का वर्णन पूर्णतया जीसज़ क्राइस्ट का चित्रण है। महालक्ष्मी अवतरित हुईं और निर्मल परिकल्पना (इच्छा) से अपने शिशु को जन्म दिया। ऐसा उन्होंने राधा रूप में भी किया था। अतः ईसा महान ईश्वर के (विराट के) पुत्र हैं। वास्तव में विष्णु महाविष्णु तथा विष्णु ही विराट बनता है। अब यह विष्णु–तत्व विराट का रूप धारण करता हैं और राम, कृष्ण तथा विराट अर्थात अकबर भी बनता है। अतः **ईसा स्वयं ओंकार हैं तथा चैतन्य लहरियां भी स्वयं ही हैं।** शेष सभी अवतरणों को शरीर धारण करने के लिए धरा मां का तत्व (पृथ्वी–तत्व) लेना

पड़ा। ईसा का शरीर पूर्णतः ओंकार है तथा श्री गणेश उनका पृथ्वी तत्व हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि ईसा श्री गणेश की अवतरित शक्ति हैं। यही कारण है कि वे जल पर चल सकते थे। वे देवत्व का निर्मलतम रूप हैं क्योंकि वे केवल चैतन्य लहरियां मात्र ही हैं। अतः मेरे साक्षात्–रूप की पूजा जब आप करते हैं तो इसमें अवास्तविक कुछ भी नहीं।

ईसा और मां मैरी के जीवन काल में ही लोगों को उनकी पूजा करनी चाहिए थी। ईसाईयों के दस धर्माचरणों में यह कहा गया है कि जिस का सृजन पृथ्वी तथा आकाश ने किया है उसका पुनः सृजन, पुनरुत्पत्ति नहीं की जानी चाहिए। अवतारों का सृजन परमात्मा ही करते हैं। केवल आधुनिक काल में ही अवतरणों का चित्र लेना सम्भव है, पहले इसकी सम्भावना नहीं थी। पृथ्वी मां द्वारा सृजित का अभिप्राय स्वयम्भु रचनाओं से है। अब स्वयम्भु रचनाएं बहुत स्थानों पर पायी जा सकती हैं। कुछ साक्षात्कारी आत्माओं ने भी सुन्दर प्रतिमाओं की संरचना की है।

मैं जब पुर्तगाल गयी तो वहां लेडी ऑफ राक्स, चट्टान देवी का उत्सव था। जब मैं उत्सव स्थान पर गयी तो वहां पर मां मैरी की पांच इंच आकार की, बहुत छोटी सी, प्रतिमा थी जिसका चेहरा ठीक मेरे जैसा था। वहां के लोगों ने मुझे बताया कि दो छोटे बच्चों ने खरगोश का पीछा करते हुए इस प्रतिमा को पाया। उन्हें चट्टानों के नीचे खोह में से प्रकाश का आभास हुआ। वे प्रकाश के स्रोत की खोज में लगे रहे और अन्ततः उन्हें प्रकाश का स्रोत यह मूर्ति प्राप्त हुई। उन्होंने इसे बाहर निकाला और इसी के प्रकाश में वे गुफा में चलते रहे। बाहर एकत्रित बहुत से लोग यह देख आश्चर्य–चकित रह गये।

लोग अब उस मूर्ति की पूजा उस स्थान पर करते हैं। यह प्रतिमा उन्हें ठीक उसी प्रकार चैतन्य लहरियां प्रदान करती है जैसे मैं आपको, परन्तु जिस मात्रा में लहरियां मैं देती हूं उतनी यह नहीं दे सकती। हो सकता है कि वहां की कुछ अन्य प्रतिमाएं भी आपको चैतन्य लहरियां प्रदान करें। भारत में भी, आप में से कुछ लोग गणपतिपुले गये। वहां महा–गणेश अर्थात् ईसा स्वयम्भु रूप में पृथ्वी मां के गर्भ से प्रकटित हुए। महागणेश के शरीर के नीचे का भाग तथा उनका शिरोभाग समूचा पहाड़ है। वहां पर समुद्र का पानी भी मीठा है तथा मीठे पानी के कई कुएं भी वहीं विद्यमान हैं।

यदि आपको याद हो तो वहां कई लोगों ने मरे चित्र लिए और उनमें से कुछ चित्रों में मेरे हृदय में से प्रकाश प्रस्फुटित हो रहा है। कुछ लोगों ने मुझे बताया कि कुछ चित्रों में प्रकाश नहीं था लेकिन जब उन्होंने नैगेटिव से पुनः चित्र बनाए तो उन चित्रों में भी प्रकाश पाया गया।

अतः आपको यह अवश्य जानना चाहिए कि दैवी शक्ति के साम्राज्य में विभिन्न प्रकार के चमत्कार होते हैं। ठीक यही बात पूजा में है। **जब हम पूजा करते हैं तो सर्वप्रथम श्री गणेश की आराधना करते हैं और इस प्रकार आप अपने अन्दर श्री गणेश**

को जागृत तथा स्थापित करती हैं। उनके रूप में मेरी पूजा करके आप में अबोधिता प्रस्थापित होती है। पर आप देखेंगे कि चैतन्य लहरियां बढ़ती हैं, आप अपने अन्दर शांति का अनुभव करते हैं।

जब आप श्री गणेश के नामों का उच्चारण करते हैं तो आप उनके गुणों से परिचित होते हैं, जब आप उनके गुणों की आराधना करते हैं तो वे आपके द्वारा अपने गुणों व शक्तियों को प्रस्फुटित करते हैं। इस प्रकार से यह दैवी शक्ति कार्य करती है मानों आपको उन गुणों से प्लावित कर देती है। तब आप आदि–शक्ति की आराधना करते हैं।

पूजा करने से आदि शक्ति के समस्त (सातों) चक्र जागृत हो उठते हैं तथा इन चक्रों द्वारा वे अपना कार्य शुरू कर देती हैं। सृष्टि में पहली बार ऐसा अवतरण हुआ है। यह ठीक उसी प्रकार से है जैसे आप पहले एक कमरा बनाते हैं फिर दूसरा और फिर तीसरा। इस प्रकार सात कमरे बना कर गृह का निर्माण कार्य पूरा होता है। आपको गृह की कुंजियां मिल जाती हैं और आप अपने गृह को खोलते हैं। इसी प्रकार से मैं सामूहिक रूप से आत्मसाक्षात्कार प्रदान करती हूं। ऐसा होना पहले सम्भव नहीं था लेकिन अब सातों चक्रों के समन्वय से यह सम्भव हो पाया है और अब आप आदि–शक्ति की आराधना कर रहे हैं। **मेरा आपके समान मानव–रूप, मेरा महामाया रूप है। मैं आप जैसा व्यवहार करती हूँ और स्वयं को ठीक आप जैसा बना लिया है।** यद्यपि यह कार्य बहुत कठिन था और आपको सहजयोग समझाने की प्रक्रिया में और आपको आपमें निहित आपकी शक्ति बतलाने में मेरे शरीर को बहुत कुछ सहन करना पड़ता है।

यदि आप मेरे प्रति रुक्ष व्यवहार करते हैं, मेरा सम्मान नहीं करते तो ईसा को बहुत क्रोध आता है क्योंकि वे कह चुके हैं कि वे परम–चैतन्य के विरुद्ध कुछ भी सहन नहीं करेंगे। अतः मेरा आज्ञा चक्र तीव्र रूप से घूमना शुरू कर देता है और क्रोध उगलने लगता है। परन्तु मुझे इसे सहन करना पड़ता है। मैं आपको नहीं बतला सकती कि ईसा उस समय आपको मुझसे क्या कहलवाना चाहते हैं क्योंकि वे अपने कार्य को तत्काल अंजाम देना चाहते हैं। परन्तु मुझे थोड़ा सा सावधान रहना पड़ता है ताकि आप परेशान न हो जायें। साथ ही पूजा के समय यदि आप मेरे प्रति विरोध अथवा सन्देह ग्रस्त हैं और चैतन्य लहरियां स्वयं में समाहित नहीं करते तो मुझे समस्या होती है। चैतन्य लहरियां– क्योंकि–बह रही हैं और आप उन्हें आत्मसात नहीं कर पा रहे हैं तो मेरी समझ में नहीं आता कि मैं किस प्रकार उन्हें अपने में सीमित रख सकूं। इन्हें सीमित करने में मुझे कष्ट भुगतना पड़ता है। यह चीज़ें प्रतीकात्मक है और यह प्रतीक वास्तव में कार्य करते हैं। उदाहरणार्थ, आप किसी को प्यार से एक पुष्प भेंट करते हैं तो उसे अत्यधिक आनन्द और कृतज्ञता की अनुभूति होती है। और आप जब मुझे पुष्प,

जल अथवा कोई अन्य चीज भेंट करते है तो तत्व और चक्रों पर स्थित देवता प्रसन्न हो जाते हैं और वे अपने गुणों की तथा तुम्हारे प्रति आशीष रूप में चैतन्य–लहरियों की वर्षा करते हैं। इस प्रकार दैवी शक्ति कार्य करती है और पूजा के पश्चात आप इस शक्ति द्वारा की गई कृपा की शनैः–शनैः अनुभूति करते हैं।

अब हम इस समय यहाँ पूजा कर रहे हैं और विश्व भर में सहजयोगियों को इस पूजा का ज्ञान है। वे ध्यान मग्न बैठे हैं और इस तरह वे भी आशीर्वाद प्राप्त कर रहे हैं। इसीलिए हम उन्हें पूजा प्रारंभ होने का समय बता देते हैं। **अतः समय पर हमें पूजा में बैठ जाना चाहिए ताकि ध्यान–मग्न हो कर अन्यत्र बैठे सहजयोगी भी आप ही की तरह से लाभन्वित हो सकें।**

यदि अभी तक पूजा के महत्व की इन थोड़ी सी बातों के ज्ञान के योग्य आप नहीं है तो भी चिन्ता की कोई बात नहीं। आपकी अनभिज्ञता तथा निर्दोष भाव को परमात्मा जानते हैं तथा आपको क्षमा प्रदान करते हैं। विनम्र हृदय से पूजा करते हुए यदि आपसे अनजाने में कोई भूल हो जाती है तो आपको दोष–भाव–ग्रस्त नहीं होना चाहिए। धीरे–धीरे आप सब जान जायेंगे। लेकिन यदि आप जान बूझ कर गलती करते हैं तो यह अच्छा नहीं है। जैसे हम अपने बच्चों को क्षमा करते हैं वैसे ही परमात्मा भी अपने अबोध बच्चों को क्षमा कर देते हैं। अतः आप इस विषय में निश्चित हो जाइये और हृदय में आनन्द की अनुभूति के लिए पूजा को सहज रूप से कीजिए।

परमात्मा आप पर कृपा करें।

18 दिसम्बर 1989 को गणपतिपुले में श्री माता जी की वार्ता

जैसे आप सब विश्वास करते हैं "मैं आदिशक्ति हूँ" इसका प्रमाण भी आपके पास है। पूजा के माध्यम से भी आप इसका प्रमाण प्राप्त कर सकते हैं। केवल इतना ही नहीं, पूजा से मेरे चक्रों पर स्थित देवता उल्लसित होते हैं और अधिक लहरियां छोड़ना चाहते हैं। जब वे बहुत सी चैतन्य लहरियां छोड़ने लगते हैं तो आप आश्चर्य चकित रह जाते हैं कि किस प्रकार पूजा के पश्चात आप इन लहरियों में शराबोर होकर अत्यन्त उच्च स्तर तक उन्नत हो गए। निःसन्देह यह सत्य है कि पूजा के समय आप काफी उच्च स्तर का अनुभव करते हैं क्योंकि आप समझते हैं कि आप उस ऊंचाई को बनाये रख सकते हैं। **कुछ लोग वास्तव में इस स्तर को बनाए रख सकते हैं परन्तु प्रायः लोग यो–यो नामक खिलौने की तरह ऊपर नीचे होते रहते हैं। अतः उस अवस्था को बनाये रखने के लिए मनुष्य को निर्विचार–समाधि में ध्यान लगाना चाहिए।** केवल देवी की पूजा की ही आज्ञा है। परमात्मा की पूजा की आज्ञा भी है परन्तु हमें ज्ञान होना चाहिए कि देवी कौन हैं और परमात्मा कौन हैं।

अतः ऐरे–गैरे की अन्धा–धुन्ध पूजा स्वीकार नहीं की जानी चाहिए। आप हैरान होंगे कि सहजयोग के पहले चार वर्षों में मैंने

एक भी पूजा की आज्ञा नहीं दी। यहां तक कि लोगों ने कहा "आप हमारी गुरु हैं, आप हमें गुरु पूजा की आज्ञा दीजिए"। मैंने कहा "नहीं, मैं ऐसा नहीं करूंगी"। तब चार वर्षों के पश्चात लोगों ने नवरात्रि–दिवस पर एक पूजा करनी चाही। मैंने कहा "ठीक है आप ऐसा कर सकते है"। थोड़े से लोग थे जिन्होंने अनुभव किया कि पूजा उन्हें अत्यधिक लहरियां और उच्च आध्यात्मिकता प्रदान कर सकती हैं। अचानक उन्होंने कई नए आयाम छू लिए और मुझ से प्रार्थना करने लगे कि "श्री माता जी कृपया आप हमें पूजा का अवसर दीजिए"। लोगों को पूजा की विधि का भी ज्ञान न था। उलझन पूर्ण कार्य होते हुऐ भी मुझे पूजा के विषय में सब कुछ बताना पड़ा। इस तरह सदा मैं यह सब करती रही।

आपको आश्चर्य होगा कि पहली बार जब मैं दिल्ली गयी (यदि कोई मेरा वह फोटो ढूंढ सके तो आप जान पायेगे) तो मैं तो सिकुड़ती चली गयी, मेरा पूरा शरीर संकोच से सिकुड़ गया। सदमें के कारण मैं अति क्षीण हो गयी क्योंकि वे लोग प्लास्टिक की पुरानी वस्तुओं का प्रयोग पूजा में कर रहे थे। मैंने सोचा "हे परमात्मा अब क्या करें"! इससे पूर्व मैं पूजा के लिए कोई पैसा देने की आज्ञा भी नहीं देती थी। तब मैंने कहा कि "ठीक है हर पूजा के लिए एक पाई देना शुरू कीजिए," और इस प्रकार लोगों ने थोड़े–थोड़े पैसे देने शुरू किये जिसे धीरे–धीरे उन्होंने बढ़ा दिया। यह मैंने इसलिए किया क्योंकि मुझे पता था कि वो लोग ये नहीं जानते कि पूजा में चाँदी की वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है। हर वस्तु पर मेरा नाम लिखा जाने लगा ताकि आपके पास रहते हुए भी आपको याद रहे कि वह मेरी सम्पत्ति है।

इस प्रकार हमारी समझ में यह आने लगा कि पूजा में एक विशेष प्रकार की धातु और विशेष प्रकार की विधि का प्रयोग करना है। इन धातुओं का हम पर एक विशेष प्रभाव होता है और **किस धातु से आप पूजा करते हैं उसका भी एक विशेष प्रभाव होता है। यह सब आध्यात्म विज्ञान है और पूजा के उत्तम परिणाम प्राप्त करने के लिए, विज्ञान की तरह से ही, इसका ज्ञान होना हमारे लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।**

इस तरह से पूजा का प्रारम्भ हुआ। मैं सोचती हूं कि अब लोगों में पूजा की अच्छी समझ आ गई है। महाराष्ट्र में लोग पूजा विधि में बहुत कुशल हैं और इस विषय में उनसे तर्क करना अति कठिन है। उन्होंने कहा "श्री माता जी हमारा आपको एक साड़ी भेंट करना उचित है।" तो मैने कहा "आप मुझे एक साधारण साड़ी दें, मंहगी साड़ी मैं स्वीकार न करूंगी।" इस तरह से छोटी–छोटी वस्तुओं के लिए वे मुझ से तर्क करते रहे और फिर कहने लगे "हम आपको नकली साड़ी भेंट नहीं कर सकते।" मैंने उत्तर दिया "ठीक है मुझे साड़ी भेंट करो या जो मर्जी।" और अब आप मंहगी साड़ी देने लगे हैं। मैंने कई बार प्रार्थना पूर्वक आपको समझाने का प्रयत्न किया कि मैं अब वृद्ध हो गई हूँ और एक वृद्ध देवी को आप कोई साधारण वस्तु भेंट कर सकते हैं। परन्तु कोई इस बात को स्वीकार करने के लिए तैयार ही नहीं। देखें हम किस तरह इस मामले को निपटा पाते हैं। अतः इन बातों से कोई अन्तर नहीं पड़ता। **परन्तु जिस कार्य को आप करना चाहते हैं, उसे कितना महत्व देते हैं। इससे अन्तर पड़ता है। यह बहुत महत्वपूर्ण**

है। परन्तु जिस कार्य को आप करते हैं उसे पूर्ण चित्त, श्रद्धा तथा महत्व देना आवश्यक है। बिना उच्च प्राथमिकता दिए कार्य नहीं होता। बिना आवश्यक महत्व दिये कार्य सफल नहीं होता।

यह समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि **यदि आप पूजा से लाभान्वित होना चाहते हैं तो इसे सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। पूजा से पूर्व यदि आपका मन शैतानी या संदेह कर रहा है तो इसे शांत हो जाने की आज्ञा दीजिऐ क्योंकि यह मन आपके विरुद्ध कार्य कर सकता है।**

अतः पूजा के लिए ग्रहणशील बन कर तैयार रहना है और इससे लाभान्वित होना है।

पूजा के फल तथा आशीष के विषय में बताते हुए श्री माता जी :–

"पूजा एक बाह्य भेंट है, परन्तु पूजा का प्रसाद और आशीष फल किस प्रकार प्राप्त करना है, इस का ज्ञान आपको होना चाहिए। **पूजा या प्रार्थना का उदय आपके हृदय से होता है। मंत्र आपकी कुंडलिनी के शब्द हैं। परन्तु यदि पूजा हृदय से नहीं की गई और मंत्रोच्चारण के साथ यदि कुंडलिनी का संबंध नहीं जुड़ा तो पूजा केवल कर्म–काण्ड बन कर रह जाती हैं।"**

पूजा में निर्विचार हो जाना, पूजा के साथ हृदय का पूर्णतया जुड़ा होना आवश्यक है। पूर्ण निष्कपटता से हृदय के साथ पूजा सामग्री को एकत्रित करें। पूजा में भेंट चढ़ाने के विषय में कोई दिखावा या बंधन नहीं होना चाहिए। हाथ धोना ठीक है, परन्तु क्या आपका हृदय भी स्वच्छ है? चित्त जब हृदय पर होता है तो यह अन्यत्र नहीं भटकता। यद्यपि आप बाहर से शांत होते हैं, आपके अन्तस में द्वन्द्व चल रहा होता है, अतः अधिक देर तक आपको मौन नहीं रहना है। यदि मनुष्य का हृदय स्वच्छ नहीं है तो मौन अति हानिकारक बन जाता है। परन्तु अवांछित वार्तालाप भी महाविपत्ति का कारण बन सकता है।

पूजा में पूर्ण श्रद्धा से आप मंत्रोच्चारण कीजिए। श्रद्धा का कोई विकल्प नहीं है। गहन श्रद्धा उत्पन्न हो जाने पर ही आप पूजा करें ताकि स्वयं आपका हृदय सारी पूजा को करे। उस समय आशीष लहरियां बहने लगती हैं, क्योंकि आत्मा कहती है, "इस समय कोई विचार कैसे आ सकता है?"

लोग अपने ग्लास में मदिरा उड़ेलते हैं। आपकी पूजा भी उसी प्रकार की है। आपकी श्रद्धा भी मदिरा है, जिसे आप पूजा तथा मंत्रोच्चारण में उड़ेलते हैं। सब कुछ भूल कर जब वह सुरापान आप कर रहे होते हैं, तो किस प्रकार कोई विचार आपको आ सकता है? और तब आनन्द का वर्णन शब्दों में कैसे किया जा सकता है? उस दैवी–सुरा को विचाररूपी तुच्छ प्रकार के ग्लास में पुनः कौन उड़ेलना चाहेगा? इस दैवी–सुरा–पान करने का आनन्द सर्वदा विद्यमान रहने वाला तथा शाश्वत है। यही आपका वैभव बन जाता है। मेरी उपस्थिति में ऐसी बहुत सी पूजाएं हो चुकी हैं। हर बार एक महान लहर आकर आपको एक नये साम्राज्य में ले जाती है। ऐसे बहुत से साम्राज्यों का अनुभव

आपका अपना हो जाता है। ये अनुभव आपके व्यक्तित्व को विशालता प्रदान कर आपके लिये आनन्द के नये द्वार खोल देते हैं।

हृदय में पूजा करना सर्वोत्तम है। मेरी जिस तस्वीर को आप देख रहे हैं, उसे यदि हृदय–गम्य कर सकें या पूजा के पश्चात इसकी झलक हृदय की गहराईयों में उतार सकें तो वह आनन्द जो आप उस समय प्राप्त करते हैं, शाश्वत तथा अनन्त बन सकता है। परमात्मा आपको आशीष प्रदान करें।

श्री माताजी की पूजा के समय पालन करने योग्य नियमाचरण।

श्री माताजी की कृपा से और अनुभव द्वारा कुछ ऐसे मार्गदर्शक नियम बनाए गए हैं जिनका श्री माताजी की पूजा करते समय हम सभी को पालन करना चाहिए ताकि हमें पूजा का अधिकतम लाभ मिल सके। श्री माताजी की पूजा के कार्यक्रम का उचित स्थान एवं समय तो दैवी शक्ति स्वयं निश्चित करती हैं इसलिए हमें अपनी ओर से पूजा के लिए किसी विशेष स्थान और समय पर बल नहीं देना चाहिए। इसके अतिरिक्त पूजा के स्थान पर सभी कार्य अत्यन्त शान्तिपूर्वक करने चाहिएं।

सौभाग्यवश यदि हम सब साक्षात श्री माताजी की पूजा के समय उपस्थित हों तो हमें सदैव उनके आगमन से पूर्व ही पूजा के स्थान पर एकत्र हो बन्धन लेकर, ध्यान में बैठ जाना चाहिए। जब श्री माताजी पधारें तो सभी को उनके सम्मान में खड़े हो जाना चाहिए और उनके स्थान ग्रहण करने के उपरान्त ही बैठना चाहिए। पूजा में हमें लम्बे समय तक बैठना पड़ सकता है इसलिए अपने चित्त की एकाग्रता के लिए अच्छा होगा कि पूजा से पहले हम कुछ (भोजन आदि) खा लें और पूजा में ढीले, आरामदायक वस्त्र पहन कर बैठें।

सभी की ओर से केवल कुछ लोग ही श्री माताजी की पूजा करते हैं, इसलिए हमें यह सोचकर निराश नहीं होना चाहिए कि हम पूजा नहीं कर रहे। सहजयोग में सभी कुछ दैवी शक्ति द्वारा पूर्वनियोजित होता है, अतः प्रथम ग्रहण किया गया स्थान, बिना किसी विशेष कारण के, नहीं छोड़ना चाहिए और इस बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि हम श्री माताजी से दूर बैठे हैं। ईश्वर द्वारा प्रदत्त वह स्थान ईश्वर की खोज में हमारी प्रगति के लिए उपयुक्त है। **हमारी आन्तरिक गहनता श्री माताजी से हमारी शरीरिक निकटता से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।**

सहजयोग सामूहिकता पर आधारित है और श्री माताजी पूजा के समय जो चैतन्य प्रवाहित करती हैं उससे पूजा के लिए चुने हुए प्रतिनिधियों के माध्यम से वे हमारे चक्रों की शुद्धि करती हैं।

इसके अतिरिक्त ऐसी पूजाओं द्वारा साधक कई अन्य शक्तियां प्राप्त कर सकता है। इसलिए पूजा के ऐसे अवसरों पर, इधर उधर की बातें सोचकर बिना अपना समय व्यर्थ किए, हमें पूर्ण एकाग्रता से अपना चित्त श्री माताजी की पूजा में लगा कर पूजा का अधिकतम लाभ उठाने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

पूजा का हर क्षण बहुमूल्य होता है अतः हर सहजयोगी को पूजा के ऐसे प्राप्त सुअवसरों से अधिकतम लाभ उठाने का प्रयत्न करना चाहिए।

ऐसी पूजा के समय सहजयोगियों को याद रखना चाहिए कि वे साक्षात आदिशक्ति के समक्ष बैठे हैं। **अतः श्री माताजी की आज्ञा के बिना उन्हें आखें बन्द नहीं करनी चाहिएं।**

चित्त सदैव पूरी तरह से पूजा की ओर होना चाहिए और छोटी–छोटी परेशानियों के अनुभव के कारण चित्त की एकाग्रता भंग नहीं होनी चाहिए। **सहजयोगियों को चाहिए कि वे पूजा में ऐसे नए लोगों को लेकर न आएं जिन्होंने अभी श्री माताजी के दिव्य–स्वरूप को नहीं पहचाना क्योंकि इससे** पूजा में चैतन्य प्रवाह पर असर पड़ सकता है।

प्रत्येक व्यक्ति को हृदय से हर क्षण पूजा के कार्यक्रम में मग्न रहना चाहिए और चित्त द्वारा चैतन्य लहरियों को अधिकाधिक आत्मसात करने का प्रयत्न करना चाहिए। इससे न केवल हमारे व्यक्तिगत उत्थान में सहायता मिलती है बल्कि श्री माताजी के साकार रूप द्वारा प्रसारित चैतन्य लहरियों को ठीक से ग्रहण करने पर श्री माताजी को भी आराम मिलता है।

पूजा के उपरान्त, श्री माताजी की आज्ञा से, साधक समीप जा कर श्री माताजी के दर्शन कर सकते हैं।

श्रीमाताजी की आज्ञा के बिना कोई भी व्यक्ति श्री माताजी को न छुए। ऐसा करना दैवी – नियमाचरणों के विरुद्ध है। जब श्री माताजी पूजा के स्थान से प्रस्थान करती हैं तो प्रत्येक व्यक्ति को उनके सम्मान में खड़े हो जाना चाहिए।

सहजयोगियों को चाहिए कि जाने से पहले, यदि सम्भव हो, श्रद्धा पूर्वक प्रसाद ग्रहण कर उसका आनन्द–लाभ करें।

श्री माताजी के फोटो के प्रति आवश्यक सम्मान नियम

श्री माताजी की तस्वीर हमारे घर में या अन्यत्र जहाँ भी स्थापित हो साक्षात् श्री माताजी की प्रतीक है। अतः इसे पूर्ण सम्मान के साथ, सभी नियमाचरणों का पालन करते हुए रखना चाहिए। घर के किसी ऊँचे स्थान पर प्रतिष्ठापित कर श्री माताजी के फोटो को प्रायः इधर–उधर नहीं करना चाहिये।

श्री माताजी का चित्र गृह सुसज्जित करने की वस्तु नहीं है अतः प्रतिदिन इसकी पूजा कर, पुष्पार्पण किया जाना चाहिए। फोटोग्राफ को गुलाब जल से साफ कर इस पर कुंकुम लगाया जाना चाहिए। प्रातः एवम् सायं श्री माताजी के चित्र के सम्मुख दीपक या मोमबत्ती जला कर मन्त्रोच्चारण करना वांछनीय (अभीष्ट) है।

सामूहिक पूजा, ध्यान–धारणा, तत्पश्चात आरती तथा मन्त्रोच्चारण के माध्यम से वहां विद्यमान रह कर हमारी पूजा को स्वीकार करने की प्रार्थना हम परम पूज्या श्री माताजी से करते हैं। अतः पूजा तथा आरती के

पश्चात् कुछ समय तक शांत रहकर श्रद्धा–समर्पण के उस वातावरण को बनाये रखना आवश्यक है क्योंकि उस समय चैतन्य लहरियों के माध्यम से श्री माताजी की निराकार रूप में उपस्थिति प्रकट होती है। इस समय सहजयोगी शांति पूर्वक ध्यान मग्न रह कर श्री माताजी द्वारा आशीष रूप में भेजी गई चैतन्य लहरियों को अधिकाधिक आत्म–सात कर आनन्द प्राप्त करें।

सामूहिक पूजा तथा ध्यान के समय व्यक्तिगत मामलों, या जो मामले सहजयोग से सम्बंधित न हों, पर बातचीत न करें क्योंकि ऐसा करने से हमारा चित्त लक्ष्य से भटक जाता है।

पूजा के पश्चात् बंधन लें, यह चैतन्य लहरियों का कवच है जो हमारी रक्षा करता है। अतः निर्विचारिता में रहकर श्री माताजी के प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा पूर्वक बंधन लेना चाहिए। सन्तुलित तथा निर्विचार रहने के लिए हमे अपनी कुंडलिनी ऊपर उठानी चाहिए। इस क्रिया के अभ्यास से अन्तर्ध्यान मात्र (केवल चित्त को अन्दर ले जा कर) होने से हमारी कुंडलिनी उठ जायेगी।

पूजा के लिए क्या आवश्यक है:

अब तक आपको यह ज्ञान प्राप्त हो चुका है कि श्रद्धा तथा निर्विचार समाधि के अतिरिक्त कुछ भी आवश्यक नहीं। पूजा उत्सव एक ऐसी मधुर अभिव्यक्ति है जो मनुष्यों को अर्पण तथा ग्रहण करने का नाटक करने की आज्ञा देती है। कहावतः–

"परमात्मा सौ गुना लौटाते हैं"

प्रकट करती है कि ईश्वर अधीर हैं कि हम लोग यह अर्पण करने का नाटक करें और परमात्मा हमें अपनी कृपा तथा प्रेम में नहला दें। इसके लिए वे अति उत्सुक हैं।

आप इस प्रलेख को तीन प्रकार से उपयोग कर सकते हैं :–

1. साक्षात्, श्री माताजी के समक्ष, एक विशेष पूजा के लिए स्वयं को तैयार करने के लिए।
2. उन सहजयोग केन्द्रों के पथ–प्रदर्शक के रूप में जो किसी विशेष अवसर पर सामूहिक पूजा करना चाहते हों।
3. घर पर एक साधारण पूजा के पथ–प्रदर्शक के रूप में।

पहला मार्ग पूर्ण उत्सव है जो मानव को श्री माताजी के समक्ष एक विशेष पूजा के लिए स्वयं को तैयार करने की आज्ञा देता है। भेंट जो चढ़ाई जाती है, महत्वहीन नहीं होतीं। पूजा और मंत्र बनाने वाले ऋषियों को ज्ञान था कि वे क्या कर रहे हैं, और श्री माताजी ने निराकारण बनायें हैं। इससे ज्ञात होता है कि पूजा विधि में बड़ा लचीलापन है तथा परिस्थितियों के प्रति अनुकूलन–शीलता है (एडाप्टेबिलिटी)।

पूजा करने का अभिप्राय यह होता है कि लोग उन देवताओं को प्रसन्न कर सकें जिनकी पूजा श्री माताजी के समक्ष की जाती है, **कोई भी कर्मकाण्ड लहरियों के ज्ञान तथा कृपा अनुभूति का स्थान नहीं ले सकता। इसके विपरीत कर्मकाण्ड लहरियों के विरुद्ध कार्य करता है। यद्यपि हम अपनी माँ "श्री माताजी" से प्रेम करते हैं, फिर भी बिना सम्मान भावना**

परमात्मा की पूजा नहीं हो सकती। अतः सम्मान तथा नियमाचरणों, की आवश्यकता है। परमात्मा के प्रति जितनी अधिक श्रद्धा तथा प्रेम हम में है उतना ही अधिक सम्मान हमसे प्रकट होता है। प्रारम्भ करने के लिए प्रथम आवश्यकता इस समारोह की खोज तथा इसके विषय में पढ़ना है।

दूसरे स्थान पर यह प्रलेख उन केन्द्रों के लिए पथ–प्रदर्शक हैं जो किसी विशेष अवसर पर सामूहिक पूजा करना चाहते हैं। इस कार्यविधि का नियमपूर्वक अनुसरण महत्वपूर्ण है। इस के कुछ भाग छोड़े भी जा सकते हैं, **भजन गाना या मौन रहना या श्री माताजी के नामों का उच्चारण हमारी इच्छानुसार** है क्योंकि ये सब कार्य भी स्वयं में अर्पण स्वरूप ही हैं।

तीसरे स्थान पर घर में साधारण पूजा है। श्री माताजी के चरण कमलों को सामान्य रूप से धोना, इत्र व पुष्प भेंट करना एक या दो मंत्र उच्चारण करना, दीपक और अगरबत्ती जलाना पर्याप्त है। अगले अध्याय में श्रद्धा की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में उपयोग की जाने वाली विधियों तथा वस्तुओं का वर्णन है।

Special Recognition

WHEREAS, on March 21st, Shri Mataji Nirmala Devi, founder of Sahaja Yoga Meditation, will celebrate her 78th birthday; and

WHEREAS, Shri Mataji is one of the most significant voices on world peace today and has been nominated twice for the Nobel Peace Prize for her extraordinary humanitarian efforts; and

WHEREAS, Sahaja Yoga is a meditation practice which has helped hundreds of thousands in over 75 countries worldwide enjoy more peaceful, healthy, and balanced lives; and

WHEREAS, the City of Plano would like to send birthday felicitations and well wishes to Shri Mataji on the day of her 78th birthday, March 21, 2001;

NOW, THEREFORE, I, JERAN AKERS, MAYOR OF THE CITY OF PLANO, TEXAS do hereby extend special recognition to Shri Mataji Nirmala Devi for her revolutionary and selfless work in the field of yoga, meditation and world peace.

Jeran Akers

Office of the Mayor

Shri Mataji

On behalf of the Government and
People of British Columbia
I am pleased to offer you my
hearty congratulations and very
best wishes on the occasion of your

Seventy-eighth Birthday

May you enjoy every
future happiness

March 21, 2001

Premier

City of Los Angeles

Birthday Greetings

Shri Mataji Nirmala Devi

We in the "City of the Angels"
extend our very best wishes for
a wonderful birthday celebration
filled with family, friends and fond memories.

March 21, 2001

Richard J. Riordan
Mayor

Proclamation

City of Cincinnati

Be It Proclaimed:

Whereas, *Shri Mataji Nirmala Devi, founder of Sahaja Yoga Meditation and twice-nominated for the Nobel Peace Prize, is the only person to awaken en-masse kundalini, an energy which is the key to health, balance, inner peace and well-being. This energy enables individuals to effortlessly enter into a state of higher awareness and to become a source of well-being in their families, communities and societies; and,*

Whereas, *in more than 70 cities throughout North America, public Sahaja Yoga programs are being conducted. In the Greater Cincinnati area Sahaja Yoga Meditation has been taught, free of charge, at the Cincinnati Art Museum, Xavier University, Raymond Walters College, Clermont College and Miami University for over 15 years. Currently, free weekly programs are being offered to the public at the Community Friends Meeting House in North Avondale; and,*

Whereas, *in over 80 countries, for the past 30 years, Sahaja Yoga has been offered and taught to hundreds of thousands of people regardless of age or background. The transformational results are healing, uplifting and universal. From Bombay to Brazil, South Africa to North America, Sahaja Yoga Meditation has helped improve lives and communities; and,*

Whereas, *Shri Mataji founded Sahaja Yoga International in 1970 as a non-profit, volunteer organization, dedicated to helping people through the use of easy-to-learn meditation techniques. Problems of alcohol and drug addiction, health and emotional issues have been much improved through the use of Sahaja Yoga; and,*

Whereas, *Shri Mataji Nirmala Devi has made outstanding contributions to modern life through her discovery of Sahaja Yoga and her many charitable and humanitarian endeavors. These include: International schools for children around the world, organizations to improve the economic condition of Indian women, medical facilities that use non-invasive Sahaja Yoga techniques, ongoing research using Sahaja Yoga techniques at the National Institutes of Health, Bethesda, MD, workplace stress-reduction programs in numerous U.S. companies, outreach programs to social service agencies such as battered women's shelters, correctional facilities, drug rehabilitation centers, senior citizen centers, publication of her book "Meta-Modern Era" and her ongoing travel worldwide to speak at free Sahaja Yoga programs.*

Now, Therefore, I, Charlie Luken,
Mayor of the City of Cincinnati do hereby proclaim
Wednesday, March 21, 2001, as

"SHRI NIRMALA DEVI DAY"

in Cincinnati.

IN WITNESS WHEREOF, I have hereunto set my hand and caused this seal of the City of Cincinnati to be affixed this 15th day of March in the year Two Thousand and One.

Charlie Luken, Mayor
City of Cincinnati

County of Allegheny

Office of the Chief Executive

Community Citation of Merit

awarded to

Shri Mataji Nirmala Devi

In celebration of your 78th birthday on March 21, 2001, I offer best wishes and recognize your significant contributions to world peace and extraordinary humanitarian achievements; and in recognition of distinguished endeavor and accomplishment, which have earned the esteem of the citizens of Allegheny County.

Presented on behalf of the citizens of Allegheny County by the Office of the Chief Executive, this 13th day of March, 2001

James C. Rodley

Chief Executive

GOVERNOR GRAY DAVIS

Commendation

Shri Mataji Nirmala Devi

Mach 21, 2001

It is a great pleasure to join your family and friends in celebrating your 78th birthday.

Your dedication to your community is truly an inspiration. I hope the gathering of your dear family and friends helps you celebrate this momentous occasion in a very meaningful way.

On behalf of the people of the State of California, please accept my congratulations on this very special day.

Gray Davis

Governor Gray Davis

STATE CAPITOL • SACRAMENTO, CALIFORNIA 95814 • (916) 445-2841

New York State Assembly

Citation

HONORING Shri Mataji Nirmala Devi, founder of Sahaja Yoga Meditation, on the occasion of her 78th Birthday

WHEREAS, It is the sense of this Assembled Body to commemorate and acknowledge those individuals who devote their lives to promoting peace, health and well-being, thereby bringing hope to everyone they touch; and

WHEREAS, Shri Mataji Nirmala Devi, founder of Sahaja Yoga Meditation, was born on March 21, 1923 in Chindwara, India; her father was one of the authors of India's Constitution; and

WHEREAS, Shri Mataji's special qualities were recognized by Mahatma Gandhi, and she often stayed in his Ashram; she studied medicine and was active in the movement for the Independence of India; and

WHEREAS, Shri Mataji founded an international school for children in India, an organization to improve the economic condition of Indian women, and a hospital which successfully employs Sahaja Yoga methods; and

WHEREAS, Shri Mataji is a dynamic and powerful presence who travels worldwide, giving speeches on world peace, the role of women in society and self realization; and

WHEREAS, Shri Mataji's insights into the problems of humanity are deep and revealing; she has been a guest speaker at many international seminars and conferences; and

WHEREAS, Shri Mataji has twice been nominated for the Nobel Peace Prize, has been honored by the United States Congress, and has received many international awards and citations in recognition of her contribution to peace, health and the well-being of people in over 75 nations; and

WHEREAS, Sahaja Yoga is taught locally, without charge, at the State University of New York at New Paltz and at the Day Top Drug Rehabilitation facility in Rhinebeck, New York ; and

WHEREAS, Sahaja Yoga is currently the subject of extensive research at the National Institutes of Health in Washington, D.C., regarding the medical benefits of the practice; and

WHEREAS, This Assembled Body is greatly moved to extend to Shri Mataji its commendation for her sincere and devoted commitment in helping create calmer, healthier, more balanced lives through meditation; now, therefore, be it

RESOLVED, That this Legislative Body pause in its deliberations to honor Shri Mataji Nirmala Devi, founder of Shahaja Yoga Meditation, on the occasion of her 78th Birthday; and be it further

RESOLVED, That a copy of this Citation, suitably engrossed, be transmitted to Shri Mataji Nirmala Devi.

By Order of,

Kevin A. Cahill

Kevin A. Cahill, Member of Assembly

STATE OF TEXAS
OFFICE OF THE GOVERNOR

To all to whom these presents shall come, Greetings: Know ye, that this certificate is presented to:

Shri Mataji Nirmala Devi

On The Occasion Of Her

78th Birthday

In testimony whereof, I have signed my name and caused the Seal of the State of Texas to be affixed at the City of Austin, this the 13th day of March, 2001.

Rick Perry
Governor of Texas

City of Pittsburgh Office of the Mayor

A Proclamation

By virtue of the authority vested in me as Mayor of the City of Pittsburgh, I do hereby issue this proclamation honoring

Shri Mataji Nirmala Devi

WHEREAS, *Shri Mataji Nirmala Devi was born on March 21, 1923 in Chindiwara, India and as a young girl Mahatma Gandhi recognized her deep and special qualities and;*

WHEREAS, *she is a world renowned spiritual leader and the founder of Sahaja Yoga, a natural, effortless way to spiritual enlightenment and;*

WHEREAS, *she has founded many charitable organizations and has been awarded the United Nations Peace Medal, has been invited by the United Nations four times to speak on world peace and has twice been nominated for the Nobel Peace Prize.*

NOW THEREFORE BE IT RESOLVED *that I, as Mayor of the City of Pittsburgh, do hereby congratulate Shri Mataji Nirmala Devi on her 78th birthday and do hereby declare Wednesday, March 21, 2001 to be "Shri Mataji Nirmala Devi Day" in the City of Pittsburgh.*

IN WITNESS WHEREOF, I have hereunto set my hand and caused the Seal of the City of Pittsburgh to be affixed.

Tom Murphy ***March 21, 2001***

Mayor Date

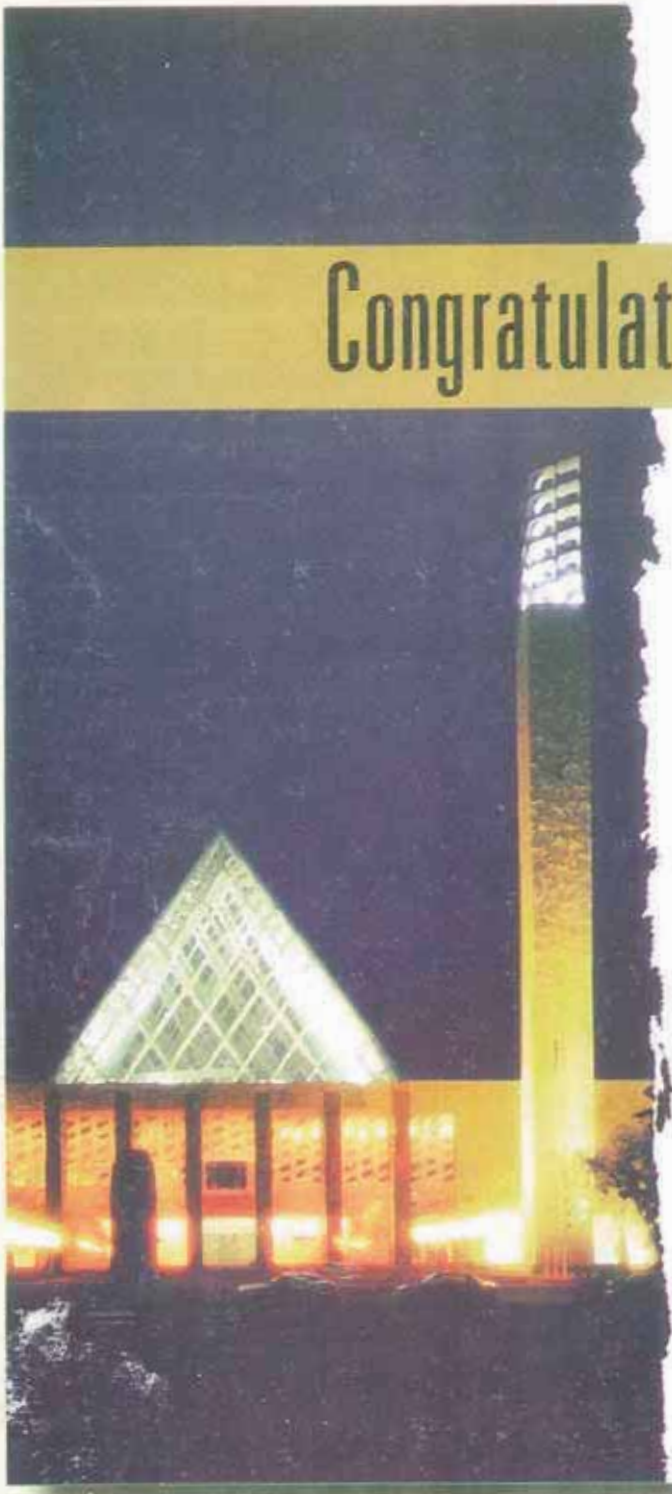

March 21st, 2001

Congratulations

Shri Mataji Nirmala Devi

On your 78th Birthday

Edmonton City Council

Bryan Anderson	*Robert Noce*
Allan Bolstad	*Michael Phair*
Terry Cavanagh	*Rose Rosenberger*
Leroy Chahley	*Jim Taylor*
Wendy Kinsella	*Dave Thiele*
Larry Langley	

Bill Smith
Mayor